पाथेय

पाथेय

संस्मरण

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5445-274-1

दाम : 300 रूपया

पहिल संस्करण :2021

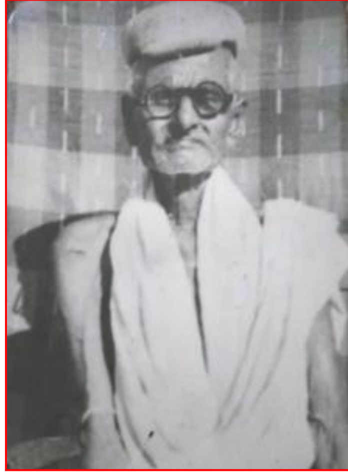
लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

पाथेय

A collection of reminiscences by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक

स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

अनुक्रम

भूमिका

नित्यप्रति भोरे उठि लोकसभ अपन-अपन दिनचर्यामे लागि जाइत छथि। तकर बाद केओ कार्यालय बिदा भए जाइत छथि,केओ अपन दोकानपर बैसि जाइत छथि,केओ खेती-बारीमे लागि जाइत छथि। सभकेँ दिनभरि नीक-बेजाए घटना सभसँ मोकाबिला करए पड़ैत छनि । साँझ पड़ितहि सभ अपन-अपन घरमुँहा भए जाइत छथि । थाकल,झमारल लोकसभ अपन घर वापस आवि विश्रामक अनुभव करैत छथि । अपन लोकक संगे दिनभरिक अनुभव बँटैत छथि । भोजन करैत छथि आ सुति जाइत छथि जाहिसँ फेर काल्हि भोरे उठि कए जीवन संघर्षमे लागि सकथि।

एहि तरहेँ दिनभरिमे अनेको घटना घटैत रहैत अछि । ओहिमे किछु बात मोनमे तेना कए गड़ि जाइत अछि , जे बिसरने नहि बिसराइत अछि । एहन बातसभ सालक-साल मोनमे तहिआएल धएल रहैत अछि । हमरो जीवनमे कतेको घटनासभ घटैत रहल । कतेको वस्तुसभ देखबाक आ ओकरा बारेमे जानबाक मौका अबैत रहल। कतेको लोकसभक संग कार्यालयमे काज करबाक मौका भेटल,कतेको लोकनि कार्यालयसँ बाहरो संपर्कमे रहि जीवन यात्राकेँ सुगम करैत रहलाह । एहि पुस्तकमे एहिसभक चर्च स्मृतिक आधारपर यथासंभव भेल अछि ।

पूर्वमे प्रकाशित हमर पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिकृया प्राप्त होइत रहल अछि । एहि प्रसंगमे प्रोफेसर(डाक्टर) श्री भीमनाथ झा, प्रोफेसर(डाक्टर) इन्द्रकांत झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे

मैथिली विभागमे प्राध्यापक प्रोफेसर(डाक्टर) रमण झा,श्री केदार कानन, श्री सुबोधनाथ झा(सेवानिवृत्त आइ.ए.एस) आ हुनकर श्रीमतीजी, श्री चंद्रमोहन कर्ण,श्री बुद्धिनाथ झा,डाक्टर कीर्तिनाथ झा , आ श्री कामेश्वर चौधरी(सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी,रेल) उल्लेखनीय छथि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत ।

मैथिलीक इ-पत्रिका विदेहमे हमर रचनासभ निरंतर छपैत रहल अछि ।हजारों पाठक एहिसँ लाभान्वित भेलाह ।एहि हेतु विदेहक यशस्वी संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनकर सहयोगी लोकनिकेँ हार्दिक धन्यवाद ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि ।एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि।

आशा करैत छी जे ई पोथी पाठक लोकनिकेँ पसिंद हेतनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

२६.०१. २०२१

पाथेय

हमर परिवेश

जन्मभूमि

हमरसभक पूर्वज स्वर्गीय नेहाली मिश्र अपन सासुर अड़ेर डीहमे बसाओल गेल रहथि ।सुनैत छी जे ओ भलमानुस छलाह । ओहि समयमे बेटीकेँ नीक कुलशीलक ब्राह्मणसँ बिआहक बाद नैहरेमे बसा लेब प्रतिष्ठाक बात मानल जाइत छल । हुनकर एकमात्र पुत्र स्वर्गीय भूमिदत्त मिश्रकेँ तीनटा पुत्र(स्वर्गीय गुमानी मिश्र,स्वर्गीय तुफानी मिश्र आ स्वर्गीय माना मिश्र) भेलनि ।हमर बाबा स्वर्गीय श्रीशरण मिश्र स्वर्गीय गुमानी मिश्रक पुत्र रहथि ।ओ छओ भाइ आ दू बहिन रहथि ।एक भाइकें मात्र एकटा बेटी रहनि आ एक भाइकेँ कोनो संतान नहि भेलनि ।तत्कालीन व्यवस्थाक अनुसार दुनू मसोमातकेँ मात्र खोरिस देल गेल रहनि आ परिवारक संपत्तिमे मात्र चारि भाइ(स्वर्गीय रामशरण मिश्र, स्वर्गीय श्रीशरण मिश्र ,स्वर्गीय श्यामशरण मिश्र आ स्वर्गीय जनार्दन मिश्र)केँ हिस्सा भेटलनि । बाबाक एकटा बहिन(स्वर्गीया दुर्गा दाइ) नैहरेमे बसाओल गेल रहथि ।दोसर बहिनक बिआह नेपालमे जनकपुर लग बभनगामा गाममे भेल रहनि ।हमर पिता स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र अपन माता-पिताक असगरे संतान रहथि। एहि तरहेँ अड़ेर डीह गाममे हम अपन वंशक छठम पुस्त छी ।

केओ अपन जन्म आ मृत्यु नहि चुनि सकैत अछि ।ई सभ पूर्वनिर्धारित होइत अछि ।के कतए ,करवन आ कोन परिवेशमे

जन्म लेत ताहिमे ओकर कोनो योगदान नहि रहैत छैक । ओ अपन प्रारब्धक अनुसार एहि दुनिआमे अबैत अछि आ चलि जाइत अछि। प्रकृतिक एही नियमानुसार हम चौठचंद्रक दिन सन् १३६० सालमे अड़ेर डीहटोल गाममे सोदरपुरिए मानिक मूलक शांडिल्य गोत्रिय मैथिल व्राह्मण सुखित परिवारमे जनमल रही । ओहि समयमे लोक चंद्रमाकेँ अर्घ देबाक तैयारी करैत रहए । ताहिसँ किछुए काल पूर्व हमर जन्म भेल रहए। हम अपन माता-पिताक छठम संतान रही । ओहिसँ पूर्व हुनकासभकेँ पाँचटा बेटीए रहनि। तेँ परिवारमे बहुत आतुरतासँ बेटाक प्रतीक्षा कएल जा रहल छल । हमर दाइ तँ पोताक बाट तकैत-तकैत चारिम पोतीक जन्मक बाद मामूली बिमारीसँ अकाल कालक गालमे विलीन भए गेल रहथि । सोचल जा सकैत अछि जे हमर जन्मक समय परिवारमे सभगोटे कतेक प्रसन्न रहल होएताह।

बाबूक हमर व्यक्तित्व निर्माणमे अमूल्य योगदान छलनि । अपन समस्त महत्वाकांक्षाकेँ ओ हमरामे सन्निहित करए चाहथि आ हमरा माध्यमसँ अपन जीवनक अप्राप्त अभिलाषाकेँ पूर्ण होइत देखए चाहथि ।ताहि हेतु माध्यम छल हमर पढ़ाइमे उत्कृष्टता प्राप्त करब। ताहि हेतु ओ हमरा दिन-राति उत्साहित करैत रहैत छलाह। जौँ केओ पढ़ल-लिखल लोक देखैतनि तँ हमरासँ जरूर भेंट करबितथि । ततबे नहि ओकरा लग हमर उपलब्धि आ प्रतिभाक गुणगान करितथि । हम ओतबेटामे हुनका बेर-बेर से सभ करबासँ मना करिअनि । मुदा ओ अपन उत्साहमे जे फुराइन से करथि । उद्येश्य एतबे रहनि जे हम हुनका सभ सँ प्रेरणा लए पढ़ाइमे औअल आबी। हमरा से फएदो केलक । हम जी-जानसँ पढ़बामे लागल रही ।

हमर जन्मक बाद हमर तीन भाइक जन्म भेलनि । एहि तरहें हमसभ नओ भाइ-बहिन रही । वाल्यावस्थामे हमरसभक समय बहुत नीक कटल । खूब खेलाइ, खूब पढ़ी । परिवारमे नेनासभकेँ बहुत देख-रेख होइत छल । ओहि समयमे परिवारक आर्थिक स्थिति बहुत नीक रहैक। बाबा खेती-बारी करैत छलाह । ओहिसँ पर्याप्त उपार्जन होनि । बादमे बाबा बूढ़ होइत गेलाह । खेतसभ बटाइ लागि गेल । ओहिसँ उपार्जन कम होइत गेल । बहिनसभक बिआह -द्विरागमन तँ दस-बारह साल धरि लगातार होइते रहल । खेतसभ साले-साल बिकाइत चलि गेल । जमींदारी प्रथा समाप्त भेलासँ सेहो हमरसभक बहुत रास जमीन चलि गेल ।

बी.एस-सी केलाक बाद हम पढ़ाइ छोड़ि कए सरकारी नौकरीमे चलि गेलहुँ । हमर छोट भाइसभ सेहो परिवारक परिस्थितिसँ परेसानीमे पड़ि गेलाह । सभ जेना-तेना सालोंक संघर्ष केलाक बाद ओहिसभसँ उबरि सकलाह आ आब सभ ठीक-ठाक चलि रहल छथि ।

फरबरी १९८९मे हमर पिताक हमर गाम(अड़ेर डीह)मे देहावसान भए गेलनि । पिताक देहावसानक समय धरि हम सोलह साल नौकरी कए चुकल रही। बिआह भए गेल रहए । एकटा पुत्र सेहो रहथि जे ताहि समयमे चारि वर्षक रहथि।

हमर मात्रिक

हमर मातृक (सिंघिआ ड्योढ़ी) सेहो बहुत संपन्न छल । हमर माए(स्वर्गीय दयाकाशी देवी) सेहो बहुत संपन्न परिवारक रहथि । अपन माता-पिताक एकमात्र संतान रहथि । हमर नाना(स्वर्गीय राम प्रसाद झा)क मृत्यु माएक जन्मसँ किछु मास पूर्वहि भए गेल

रहनि । मुदा ओहि समयक कानूनक हिसाबे हुनका अपन पैतृक संपत्तिमे उचित हिस्सा नहि देल गेलनि । कारण अंग्रजेकक बनाओल कानूनक अनुसार जँ परिवारमे बेटा नहि भेल तँ बेटीकेँ ओहि संपत्तिक उत्तराधिकारी नहि मानल जाइ । ओ संपत्ति दोसर फरिकेनकेँ भए जाइ आ मसोमातकेँ खोरिस मात्र देल जानि । हमरो नानीकेँ कमोबेस सएह हाल रहनि । हमर बाबू बादमे मोकदमा केलाह तँ आपसी समझौताक बाद किछु जमीन हमर नानीकेँ देल गेलनि । एहि तरहेँ गामक आ मात्रिक,दुनूठामक संपत्ति मिला कए बाबूकेँ पर्याप्त संपत्ति रहनि जे ओ बँचा नहि सकलाह आ बादमे पहुत परेसानीमे पड़ि गेलाह ।

हमर नानी स्वर्गीया उत्तमा ओझाइन जीवन भरि वैधव्यक डंस सहैत रहि गेलीह। हमर माए हुनकर एकमात्र संतान रहथिन । हुनके मुँह देखि जीवि गेलीह । मुदा माएक बिआह बहुत जलदी (नओ वर्षक बएसमे) कए देल गेलनि । साल भरिक भीतरे हुनकर द्विरागमन सेहो भए गेलनि । एमहर हमर बाबाक सेहो एकहिटा संतान,हमर पिता(स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र) रहथि । हमर दाइ बहुत सिनेहसँ अपन पुतहुक पालन केलथि । कहाँदनि कतेको साल धरि माए अपन नैहर नहि गेलीह । हमर दाइ अड़ि जाथिन । हमरा ई नहि बूझएमे अबैत अछि जे एतेक कम बएसमे माएक बिआह कए देबाक कोन धरफरी रहैक? तखन तँ बिना पिताक संतान रहबाक कारण जे भेल से भेल । कहाँदनि हमर नानी बहुत विरोध केने रहथि । ओ चाहथि जे अखन बिआह नहि होइ । मुदा हमर पितिऔत नाना स्वर्गीय बौएलाल झा नहि मानलखिन । माएक भाइ(कंसी गामक) सेहो सएह विचारक रहथि । सभक कहब जे बर बहुत संपन्न छैक । एहन नीक बिआह नहि टारल जा सकैत

अछि । फेर ओहि समयमे कमे बएसमे बेटीक बिआह होएब कोनो नव बात नहि रहैक , ओना तँ होइते रहैत छल । बिआहक समयमे माए चौथामे पढ़ैत छलीह । बस ओतबे पढ़ि कए रहि गेलीह । हमर पिता ओहि समयमे बाइस वर्षक रहथि । ओ वाटसन इसकूल मधुबनीक छात्र रहथि आ गेनखेलीमे पारंगत रहथि । पारिवारिक स्थिति बहुत मजगूत रहनि । हमरसभक परबाबा(स्वर्गीय गुमानी मिश्र) इलाकाक प्रतिष्ठित जमींदार रहथि । कुलमिला कए इएह लगैत अछि जे बहुत संपन्न परिवारमे माए आ बाबूक जन्म भेल रहनि । बिआहक बादो ओ सभ बहुत दिनधरि संपन्नताक आनंद उठओने रहथि ।

हम पहिलबेर मातृक बाबूक संगे दरभंगा बाटे गेल रही । दरभंगा धरि बससँ गेलाक बाद ट्रेन पकड़ने रही । हमर ओ ट्रेनक पहिल यात्रा छल । पहिल बेर ट्रेनमे चढ़बाक आनंदमिश्रित आश्चर्यसँ अभिभूत रही । ओहि समयमे टेक्टारि टीसन नहि बनल रहैक । तँ मोहम्मदपुर उतरि पिंडारुछ बाटे पैरे-पैरे हम आ बाबू मातृक पहुँचल रही । बीच-बीचमे जहन थाकि जाइ तँ बाबूसँ पुछिअनि-“आब कतेक दूर छैक ?”

“ओएह जे इजोत देखा रहल अछि ने,सएह छैक । आब कनीके दूर अछि ।”

-से कहि ओ हमरा कोरामे लए लेथि । मातृक पहुँचलापर हमर जबरदस्त स्वागत भेल छल । नानीक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छलनि । ओही आङनमे हमर पितिऔत नाना स्वर्गीय जीबछ झा रहथि । हुनकर परिवारमे सभगोटे हमरा बहुत रास टाका गोर लगाइ देने रहथि । प्रात भेने आओर फरिकेन सभक ओहिठाम सेहो गेल रही । हमर नानागाममे सभ संपन्न छलाह । बड़काटा दरबाजा

छल। दरबाजाक हमर अपन नानाक हिस्साबला भागमे पोस्ट आफिस खोलि देल गेल रहैक ।

मात्रिकमे हमर समय बहुत नीकसँ बितल । किछु दिनक बाद हम बाबूक संगे अड़ेर डीह वापस भए गेल रही । तकर बाद एकबेर आओर हम मात्रिक गेल रही । ताधरि टेक्टारिमे रेलक अस्थायी ठहराव(हाल्ट) भए गेल रहैक । ओहि समयमे हमर नानीक सासु आ दियादनी जीविते रहथि । तकर बाद हम ओतए नहि जा सकलहुँ। आब तँ तकर साठि सालसँ बेसी भए गेल होएत। कहि नहि आब ओहिठामक की हाल अछि?

हमर सासुर

हम शुरुक पचीस-छबीस वर्ष अपन गाम अड़ेर डीहमे बितओलहुँ । हमर बिआहो ओही समयमे पण्डौल गाममे स्वर्गीय गणेश झाजीक दोसर संतान श्रीमती आशा मिश्रसँ ४ जून १९७५क भेल छल । हमरा ओहिना मोन अछि जे हम सतरहटा बरिआतीक संगे रातिक दसबजे पण्डौल पहुँचल रही । बरिआतीमे बाबूक अतिरिक्त हमर तीनू भाइ,हमर मित्र लालबच्चा(विष्णुकान्त मिश्र),हुनकर पिता स्वर्गीय चंद्रधर मिश्र ,हमर बहिनोइ स्वर्गीय सुखदेव झा आ किछु आओर लोक रहथि । बरिआती पण्डौलपर हमर ससुरक दरबाजापर पहुँचि गेल रहए । आङनमे गीत-नाद शुरु भए गेल रहए । थोड़बे कालमे हमर परिछन शुरु भए गेल । पण्डौल पुरबारि टोलक पंडितजी बिआह करओलनि । हुनकर आकर्षक स्वभाव अखनो मोन पड़ि रहल अछि । हमर जेठसरि श्रीमती रेणु मिश्र बिधकरी रहथि । बरिआतीक खाइत कालक ठहाका अखनो हमर कानमे गुंजित होइत रहैत अछि । सुनलिऐक जे किछु बरिआती आम खेबामे नाम कए गेलाह ।

बिआहक बाद चतुर्थी धरि नित्य मौहक कालक गीतक मधुर स्वर मोन पड़ैत रहैत अछि । मोन पड़ैत रहैत अछि चतुर्थी रातिमे आङनमे ओसारापर बहुत रास लोकसभ आएल रहथि । गीत-नाद भए रहल छल । हमहु हरमुनिआपर गीत गएबाक प्रयास केने रही। ओहिमे गड़बड़ी भए गेल रहैक आ हमर ससुर बहुत परेसान भए गेल रहथि । ताबते नुनू काका दौड़ल अएलाह आ कहैत छथि- "मिसरक गीत सुनि कए हमर गाय बिआ गेल ।" तकर बाद जे ठहाका पड़ल से की कहू ।

बिआहक समयमे हम दरभंगामे दूरभाष निरीक्षकक काज करैत रही । ओहिठामसँ सासुर अबरजात बनल रहैत छल । बिआहक बाद हमर ससुर मुंगेर नौकरी करए चलि गेलाह । किछुदिनक बाद हमर सासु सेहो ओतहि चलि गेलीह । तखन रहि गेलीह विधकरी रेणु बहिन । जखन-करवनो हम बिआहक बाद दरभंगासँ पण्डौल जाइ तँ ओएह स्वागतमे लागि जाथि । हमर ज्येष्ठ साढ़ू स्वर्गीय इंद्रानंद मिश्र(गुर्महा -पचाढ़ी) सेहो अबैत-जाइत रहथि। एहि तरहे सासुरक माहौल बहुत रमनगर रहैत छल ।

हमर बिआहक समयमे आङनक माहौल बहुत रमनगर रहैत छल । कोनो अवसर भेलापर चारूकातसँ लोकसभ जमा भए जइतथि । हँसी ठठ्ठा होइत रहैत छल । पूब दिससँ लालकाका,उत्तरसँ डाक्टर काका ,दक्षिणसँ नुनू काका आ दरबाजापरसँ रमेश काका दौड़ल अबितथि । डाक्टर काका तरह-तरहक चमत्कार करबाक ढोंग करबामे माहिर छलाह । हुनकर करतबसभ पर ठहाका लगैत रहैत छल । एकबेर अमेरिकाक राष्ट्रपतिक चुनाओ होइत रहए । रेडिओमे चुनाओक चर्चा चलैत रहैक। जीतत के? एहि विषयमे आङनमे लोकसभमे वाद-विवाद

भए रहल छल ।सभकेँ इएह उत्सुकता जे के जीतत? डाक्टर काका अपन रेडिओसंगे कोठरीसँ बाहर भेलाह ।अपन चमत्कारिक भाव-भंगिमामे घोषणा केलनि- हे इएह लएह । हम निक्सनकेँ मचोरि देलिऐक । आब ओ हारिए कए रहत। बाह रे डाक्टर काका आ हुनकर भविष्यवाणी!आङनमे सभ हतप्रभ छल ।एहिना किछु-ने-किछु ओ करिते रहैत छलाह । ओ कलना बाबाक परम भक्त छलाह ।गाहे-बगाहे कलना जाइते रहैत छलाह ।बाबा सेहो हुनका ओहिठाम अबैत रहैत छलखिन । हुनका अपन संतान नहि रहथिन। बाबकेँ गोहरओला तँ ओ कहलखिन-“सभकुछ तोरे न न होइ ।” बादमे बाबाक आशीर्वादसँ हुनका स्वतंत्रता सम्मान पेनसन भेटि गेलनि जाहिसँ दुनू बेकतीकेँ आर्थिक परेसानी नहि रहलनि । हुनकर छोट भाइ छलखिन लाल काका । ओहो ककरोसँ कम नहि,बेस कलामी लोक । सदिखन एक डेग मधुबनी कोर्टेमे रहैत छलनि । कैक कित्ता केस लड़ैत छलाह । मुदा ओ बहुत मजगूत आ जीबट बला लोक रहथि आ अपना बले समाजमे बहुत नीक स्थान बनओने रहथि ।

समय साल बदललैक । आब ने ओ रामा ने ओ कोठोला । हमर ससुर अपन अलग घरारीपर मकान बना लेलाह ।कालक्रममे आओर दिआदसभ सेहो अपन-अपन फराक घर बना लेलाह । आब जँ पुरना आङन जाएब तँ सुन्न लागत ।केओ टोकनाहरो नहि भेटत । मुदा सभसँ काबिले तारिफ ई बात जे सभ दिआदसभ घरारीक बटबाराक विवाद आपसेमे सहयोगसँ निपटा लेलाह जाहिसँ चारूकात विकास भेल । नव-नव मकानसभ बनल आ आपसी सौहार्दय सेहो थोड़-बहुत बाँचल रहि गेल ।

हमर ससुर स्वर्गीय गणेश झा भारत सरकारक सेवामे लेखा अधिकारीक पदसँ सेवानिवृत्तिक बाद गामेमे घर बना कए रहैत छलाह । मधुबनीमे सेहो ओ घर बनओने रहथि । मुदा बादमे ओहिठाम मोन उबिआ गेलनि तँ भगला गाम दिस । गाममे बहुत भव्य मकान बनओलथि जे अखनो फटकिएसँ देखल जा सकैत अछि ।

मकान बनेलाक तीन सालक भीतरे हमर ससुरजीक देहावसान भए गेलनि । तकर बाद लगभग उन्नैस साल हमर सासु जीलथि आ ओहि मकानक उपयोग केलथि । हमर सासु भागलपुर जिलाक भ्रमरपुर गामक रहथि । ओ बहुत व्यवहारिक आ मितव्ययी रहथि । हुनके सहयोगसँ हमर ससुर अपन आर्थिक परिस्थिति मजगूत कए सकल रहथि । पण्डौलमे नीक संपत्तिक अर्जित केने रहथि । चारिटा बेटी आ एकटा बेटाक खूब नीकसँ पालन-पोषण केलथि। ततबे नहि ,संयुक्त परिवारक कतेको जिम्मेबारीक मर्यादापूर्वक बहनसेहो करैत रहलथि। बहुत बादमे ओ साल-दूसाल गाममे नहि रहि सकलीह , हमर सार श्री संतोष कुमार झाक इन्दिरापुरम स्थित डेरापर रहथि । हमर सासुक सदिखन इच्छा रहनि जे गामे रही । पछिला साल १८ दिसंबर २०२० क अकस्मात हुनकर देहावसान भए गेलनि। हुनकर मृत्युक बाद हमरा लोकनि हेतु पण्डौलक एकटा महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त भए गेल।

पण्डौलक बाध बहुत उँच छैक । रेलवे लाइनसँ लए कए पण्डौल बजार धरि सभटा जमीन बासक हेतु उपयुक्त अछि । एहन बास बहुत कम गाममे होइत छैक । ताहुमे हमर ससुरक घर तँ एकदम फराकमे रहबाक कारण बहुत हबादार अछि । चारूकातसँ हबा रौद सोझे मकानमे पहुँचि जाइत अछि ।

पण्डौलमे साबिक जमानासँ रेलवे टीसन अछि । पण्डौल बजार सेहो बहुत बढ़ि गेल अछि । ओहिठामसँ मधुबनी आ दरभंगाक हेतु बस,टेकर आसानीसँ भेटि जाइत अछि । आब तँ दरभंगामे हबाइ जहाजक आगमन भए गेलाक बाद पण्डौल आ आसपासक इलाकाक महत्व आओर बढ़ि गेल अछि । ओहिठामसँ पैंतालीस मिनटमे दरभंगा हबाइ हड्डा पहुँचि सकैत छी । ओतएसँ दिल्ली.मुम्बई,बंगलोर उड़ि जाउ । सुनैत छी जे किछु आओर सहरसभक हेतु हबाइ जहाज शीघ्रे शुरु भए जाएत ।

पण्डौलक भौगोलिक स्थिति देखि कए हमरा कैकबेर मोन होअए जे किछु जमीन ओतए किनि ली । बादमे ओकर उपयोगपर सोचल जेतैक । मुदा हमर श्रीमतीजीकेँ ई बात एकदम पसिंद नहि भेलनि । नैहरमे जा कए जमीन किनब उचित नहि बुझानि । आब तँ ओ जमीनसभक दाम आकाश ठेकि गेल अछि ।

पण्डौलक एकटा विशेषता थिक भवानीपुर महादेवक मंदिर जे हमर ससुरक घरसँ पैरे-पैरे आधा घंटामे पहुँचि सकैत छी । हम कैकबेर ओतए गेल छी । पहिने तँ हिनका लोकनिक दरबाजापरसँ भवानीपुरक मंदिर ओहिना देखाइत रहैत छल । मुदा आब बीचमे गाछसभ आबि गेलैक अछि । तेँ कनीक दूर पैरे चललापर मंदिरक ध्वज फहराइत देखाइत रहैत अछि । आब भवानीपुरक महादेव मंदिर आ ओकर परिसरक बहुत बदलि गेल अछि । शिवरातिक दिन ओतए बड़का मेला लगैत अछि । रेडिओसँ ओकर प्रसारण सेहो होइत अछि ।

४ जून १९७५क सत्तरह वर्षक बएसमे हमर श्रीमतीजी(आशा मिश्र)क बिआह हमरासँ भेल रहनि । ओहि समयमे हमर बएस २३ छल आ हम दरभंगामे दूरभाष निरीक्षकक

काज करैत रही । हमर ससुरक एकमात्र ध्येय रहैत छलनि जे बर सरकारी नौकरीबला होइ । से हमरामे भेटलनि ।

हम दिल्ली आ तकरबाद इलाहाबाद चलि आएल रही। संगमे श्रीमतीजी आ पुत्र भास्कर रहथि । एतेक लेद-गेदक संगे सीमित आमदनीसँ परिवार नीकसँ चलैत रहल । निरंतर गाम-घरसँ केओ-ने-केओ अबिते रहैत छल । एहन परिस्थितिमे हमर गृहस्थीकेँ नीकसँ चला लेबाक संपूर्ण श्रेय हमर श्रीमतीजीक छनि । ओ तँ हमर परिवारक लेल साक्षात अन्नपूर्णा छथि । जेना हुनकर हाथमे अक्षयघट हो । जखन जतबे आमदनी रहनि ततबेमे परिवारकेँ बाइज्जत चलबैत रहलीह आ हमरा कहिओ ने ककरोसँ माङए पड़ल ने कर्ज लेबए पड़ल । ओ अपन माता-पिताक संगे रहि नौकरीबला परिवारकेँ सीमित आमदनीमे कोना चलाओल जाए ताहिमे निपुणता प्राप्त केने रहथि ।

जे से समय बीतैत रहल । आब तँ जीवनक अंतिम अध्याय शुरु भए गेल । हमर श्रीमतीजीक बुद्धिमत्तापूर्ण सहयोगसँ जीवनक पहिआ आगू बढ़ैत रहल । निश्चय ओ मिथिलाक नारीक ओहि गुणसभक प्रतिनिधित्व करैत छथि जाहि हेतु अपनसभक माटि-पानि प्रशंसित रहल अछि।

घरक काजक अतिरिक्त हमर समस्त साहित्यिक गतिविधिमे हमर श्रीमतीजी सक्रिय सहयोग करैत रहलीह अछि । ओ हमर समस्त साहित्यिक कृतिक प्रथम पाठक रहलीह अछि आ अपन अमूल्य परामर्श दए ओहिसभमे गुणात्मक सुधार करैत रहलीह अछि । सही मानेमे ओ हमर जिनगीकेँ सुगमे नहि केने रहलीह ,अपितु एकरा पल्लवित,पुष्पित करबामे महान योगदान करैत रहलीह ।

किछु अविस्मरणीय प्रसंग

भट्टा धरओने रहथि

जीवनमे कैकटा एहन घटनासभ होइत अछि जे माथमे धसि जाइत अछि आ से बिसरने नहि बिसराइत अछि । हम नहि कहि सकैत छी जे एहन कहिआ-कहिआक बातसभ हमरा मोन पड़ैत रहैत अछि । मनुक्खक माथो एकटा अद्भुत रचना अछि । कैकबेर तुरंत घटल घटनासभ बिसरा जाइत अछि । जेना दबाइ खेलहुँ कि नहि से नहि मोन पड़ैत रहैत अछि । मुदा पचास साल पहिने जे घटना घटित भेल से ओहिना तहदर्ज माथमे विद्यमान अछि । एहने किछु पुरान घटनासभक चर्च करैत छी ।

हमरा अखन धरि ओहिना मोन अछि जे बृहस्पतिदिन कए दरबाजाक ओसारापर बच्चू बाबू (स्व. अदिष्ट नारायण झा) हमरा भट्टा धरओने रहथि । ओहि समयमे बाबू सामनेमे ठाढ़ रहथि आ बाबा बगलमे कनीक फटकी बैसल रहथि । किछु आओरगोटे दरबाजापर रहथि । भोरक समय रहैक। हम माटिपर भट्टा लए किछु-किछु लिखने रही । तखन मास्टर साहेब हाथ धेने रहथि । बच्चूबाबूक इसकूल गामेक ब्रह्म स्थानमे चलैत छल । ओतए हम चौथा धरि पढ़ने रही । ओहि इसकूलमे एकसालमे दू किलास भए जाइत छलैक । माने चौथा पास करबामे हमरासभकेँ मात्र दूसाल लागल छल। तेँ मिडिल इसकूलमे हम अपन किलासमे सहपाठीलोकनिमे बएसमे सभसँ छोट रही।

माथमे डोल घुसिआ लेलहुँ

लोकसभ कहैत अछि जे नेनेसँ हमर माथक आकार पैघ अछि । बच्चामे एकबेर आङन दिसक ओसारापर केना-ने-केना माथमे डोल घुसिआ लेलहुँ । ओहि समयमे हम पाँच-छओ सालक रहल होएब । घरक लोकसभ लाख प्रयास करथि ,डोल माथसँ निकलबे नहि करए । हम जोर-जोरसँ कनैत रही । आङनमे कैकगोटे जमा भए गेलाह । सभ अपना-अपना हिसाबसँ प्रयास केबो केलाह । मुदा डोल माथसँ हटबे नहि करए । कनी कालक बाद गुलाबकाका दौड़ल अएलाह । हुनकर घर हमर आङनसँ सटले रहनि । ओ की केलाह की नहि मुदा कनीके कालमे डोल माथसँ निकालि देलाह । हमरा जानमे-जान आएल । घरक लोकसभक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल ।

पाकिटमनी माने जेबखर्च

बच्चाक जिनगी अनमोल होइत अछि । ओ समय जीवनमे फेर ककरो कहिओ घुरि नहि अबैत अछि । छोट-छोट बातसभमे ओ आनंद ताकि लैत अछि । ओकरो मोनमे तरह-तरहक अभिलाषा होइत रहैत अछि जकर पूर्तिक हेतु ओ लालायित रहैत अछि । कैकबेर से भए पबैत अछि,केकबेर नहिओ होइत अछि ।

हम निठ्ठ देहातमे जन्म लेलहुँ,ओतहि पालन-पोषण भेल,ओतहि बादोमे बहुत दिन धरि रहलहुँ । गाम-घरमे आइ-काल्हि जकाँ सुबिधा नहि रहैक । लोक मौलिकतामे जीबए । माटि-पानिसँ खेलाए । ताहि समयक हिसाबे हमर बाबू आधुनिक विचारक रहथि। हमरासभक शिक्षा नीक होअए ताहिपर बहुत

ध्यान रहनि। सभ बच्चाकेँ नीकसँ पालन-पोषण करथि । तखन तँ जे सुबिधा ओतए रहितैक ताहीमे ने लोक रहत ।

ओहि समयमे ग्रामोफोन होएब बड़का बात रहैक । स्टोभ तँ ककरो-ककरो लग रहैक । हरमुनिआ,ढोलक संगीतक प्रमुख बाद्य होइत छल । मुदा सीमित साधनक अछैत लोक हृष्ट-पुष्ट आ मोनसँ मजगूत रहैत छल ।

ओहि समयमे नेनाकेँ पाकिटमनी माने जेबखर्च देबाक चलनि नहि रहैक । जखन हमरा किछु-किछु किनबाक मोन होअए तँ समाधानमे बाबूक जेबी सँ टाका निकालि ली वा हाटपर घरक सामान किनबाक हेतु जाइ तँ ओहिमेसँ किछु पैसा बँचा ली । एहि तरहें किछु-किछु पैसा जमा कए हम ग्रामोफनक रेकर्ड,स्टोभ,एलार्मबला टेबल घड़ी ,हरमुनिआ, फूटबाल मधुबनी जा -जा कए किनने रही । बादमे बात तँ खुजबेक छलैक से खुजि जाइक । माए किछु नहि कहितथि । मुदा बाबू जरूर तमसाइत छलाह । हम मधुबनी बिंदूकाका(विंध्यनाथ मिश्र)क संगे जा कए ससुराल फिल्मक ग्रामोफोनक रेकार्ड किनने रही । “तेरी प्यारी-प्यारी सुरत को किसी की नजर ना लगे चश्मबद्धू” -ई गीत ओहि रेकार्डक एकपीठपर बजैक आ दोसर दिस रहैक अपनी “उल्फत पै जमाने का ना पहरा होता तो कितना अच्छा होता...”। कहि नहि सकैत छी जे ओहि रेकार्डकेँ अपन ग्रामोफोनमे बजा कए कतेक प्रसन्न भेल रही ।

पाबनि- तिहार

पहिने पाबनि तिहारमे धीयापुताकेँ प्रकृतिसँ स्वभाविक रूपसँ जुड़बाक अवसर होइत छलैक । ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ मसीन लोकक स्थान नहि लेने छल । दीयाबाती होइक कि फगुआ ,कि जुड़शीतल लोक घरे-घर प्रकृतिसुलभ संपदाक उपयोग करैत आनंद मनबैत छल । दीयाबातीमे बाँसक सुखाएल कोपर वा कटहरक सुखाएल पातसँ हुक्कालोली बनाओल जाइत छल । बाबा संठी आ सौनक मदतिसँ ऊक बनबैत छलाह । ओहिमे आगि लगा कए लक्ष्मीकेँ घर-बाहर करैत छलाह । बीच-बीचमे किछु-किछु मंत्रोच्चारण सेहो कैत रहैत छलाह । हमरोसभकेँ हुक्कालोली बाबा बना देथि । जुड़शीतलमे हमसभ पोखरिक पानिमे माटि-कादोसँ अपन संगीसभक संगे खेलाइत छलहुँ । हमरा मोन पड़ैत अछि जे एकबेर हम एहने अवसरपर अपन मित्र लालबच्चा(स्वर्गीय विष्णुकान्त मिश्र)क आँखिमे बहुत रास कादो धए देने रहिअनि । ओहुना हुनकर आँखि बच्चेसँ अवदाह रहनि । ओ मोसकिलमे पड़ि गेल रहथि । तथापि हमरा किछु नहि कहलाह ।

फगुआमे एकबेर हम अपन छोट बहिनोइ(सतलखा डीहटोलक स्वर्गीय कृष्णकान्त झा)केँ रंग मिश्रित पानि-कादोसँ सराबोर कए देने रहिअनि । भीजल-तीतल ओ एमहर-ओमहर भागैत रहलाह आ हम हुनका खिहारैत रहलिअनि । एकबेर तँ इसकूलसँ अबैत काल वर्षा शुरु भए गेल रहए । हमसभ भिजैत-तितैत पैरे अबैत रही । पाँच-सातटा विद्यार्थीसभक गुट रहल होएत। हम विष्णुपुरक स्वर्गीय खर्गीभाइकेँ थाल-कादोसँ नहा देने रहिअनि । ओ खौंझाइत रहल रहथि आ हमसभ हँसैत रहि गेल

रही। आब सोचैत छी जे हमसभ बिना कोनो साधनकेँ प्रकृतिसँ उपहारस्वरुप प्राप्त माटि-पानि-कादो- फूल-पात सँ जीवनमे कतेक आनंद भरि लैत रही । आबक नेनासभकेँ से कहाँ भए पबैत अछि? कोना हेतैक? ओकर जिनगी तँ शुरुएसँ फ्लैटमे मुनल रहि जाइत छैक , टिलीबीजन,मोबाइल आ इंटरनेतमे ओझराएल रहि जाइत छैक । ओ की जाने गेलैक जे वसंतमे सरिसवक फूल पीयर रंग केहन सौंदर्यपूर्ण होइत छैक?

एकतारामे प्रदर्शनी

ई बात सन् १९६२ ई०क थिक । हम मिडिल इसकूलमे पढ़ैत रही । एकतारामे उच्च विद्यालयक मैदानमे सरकारक दिससँ प्रदर्शनी लागल रहैक । रातिमे कोनो नाटक सेहो भेल रहैक । हम गामक दू-तीनटा नेनासभ मिलि कए ओहि कार्यक्रमकेँ देखबाक हेतु गामसँ बिना ककरो कहने-सुनने चलि गेल रही । इसकूलक मैदानमे सौंसे किछु-ने-किछु चीज-वस्तुसभ राखल रहैक । बेसी तँ आब नहि मोन अछि। मुदा ओतए बहुत रास लोकसभ आएल रहथि से अखनो मोन अछि। रातिमे हमसभ नाटक देखए लागल रही । बड़ी राति कए भुखले गाम वापस होइत रही । लगपासक गामक किछु लोकसभ लगपासमे चलैत रहथि आ समय-समयपर फराक होइत गेल रहथि। हमसभ जमुआरीसँ आगू बढ़ि गेल रही। मुसहरी टोल आबएबला रहैक । फटकिएसँ एकटा लालटेनक इजोत देखाएल । केओ लालटेन लेने थपरी पीटैत हमरे सभदिस बढ़ि रहल छलाह । ओ क्रमश: लगीच अबैत गेलाह आ अंततः देखैत छी जे ओ तँ हमर बाबू छथि जे हमरा बहुत राति धरि वापस नहि अएलासँ परेसान भए एकतारा लालटेन लेने बिदा भए गेल रहथि । हुनकर संग भए गेलाक बाद हमसभ कतेक आश्वस्त भए

गेल रही । ओतेक परेसानी भेलाक अछैत बाबू हमरा किछु नहि कहने रहथि ।

परीक्षामे नकल

हम जखन बी.एस-सी पार्ट वनमे सी.एम.कालेज दरभंगामे नाम लिखओलहुँ तखन स्वर्गीय एल.के.मिश्रजी ओहि कालेजक प्राचार्य रहथि । ओहि समयमे ओ कालेज इलाकाक मानल कालेजमे सँ छल । सभठाम परीक्षामे नकल होइक मुदा सी.एम.कालेजमे की मजाल छल जे केओ टस -सँ -मस भए जाएत। एक सँ एक प्रतिष्ठित शिक्षक ओहि कालेजमे रहथि । रसायन शास्त्रक विभागाध्यक्ष स्वर्गीय एल.के.शाहीक चर्चा तँ गाम-गाम होइत छल । कारण ओ परीक्षासभमे औचक निरीक्षण हेतु जाइत छलाह आ चारूकात हरकंप मचि जाए । सी.एम.कालेजमे तँ ओ नाम केनहि रहथि । हमरासभकेँ कार्बनिक रसायन शास्त्रकेँतँ घोखा देने रहथि । इसकूल जकाँ नित्य सबक देथि आ दोसर दिन भेने एक-एकटा विद्यार्थीक सबक देखथि । जँ केओ काज नहि केलाह वा देल गेल सबककेँ नहि घोखलाह तँ हुनकर तँ भगबाने मालिक। एकबेर एकटा छात्रा प्रयोगशालामे हमर टेबुलपरसँ दिआसलाइ बिना मंगने उठा लेने रहथि । शाही जी ई बात देखि लेलखिन । तकर बाद जे ओकर दुर्गति केलनि से देखए बला छल । कतेको काल धरि ओकरा हुनकर सभक सामनेमे भाषण सुनए पड़ल रहैक । कहक माने जे अनुशासनमे ओ एकटा उदाहरण छलाह ।

स्वर्गीय एल.के.मिश्रजी केँ जाइते सी.एम.कालेजक व्यवस्था जेना ढनमना गेल । स्वर्गीय डी.के.झाजी प्राचार्य भेल रहथि । तकरबाद तँ केओ ककरो सुनबे नहि करए । परीक्षाक तँ

जे हाल भेल से की कहू? हमर भौतिक शास्त्र प्रतिष्ठाक अंतिम वर्षक परीक्षा होइत रहए । कला निकायमे परीक्षाकेन्द्र छल । हमरासभकेँ उत्तरपुस्तिका आ प्रश्नपत्र दए देल गेल । तकर बाद परीक्षक सभ निपत्ता भए गेलाह । जकरा जतए मोन भेलैक ताहि ठाम जा कए परीक्षाक उत्तरपुस्तिका भरलक । बीच-बीचमे कागज घटि गेलाक बाद टेबुलपर राखल ढेरीमे सँ उत्तरपुस्तिका लए लेथि आ बगलमे राखल कागजपर तकर विवरण स्वयं लिखि देथि । हमरा डेरापर लौटबामे विलंब देखि हमर मित्र आ ग्रामीण लालबच्चा आ विमलजी परीक्षाकेन्द्रपर पहुँचलाह । ओहोसभ ओहिठामक दृश्य देखि अबाक रहथि । हम तँ बहुत मेहनत केने रही । मुदा सभ व्यर्थ भेल । तेहन ने परीक्षा भेल जे घोड़ा-गदहासभ बरोबरि भए गेल । रातिमे दस बाजि गेल । तखन लिखैत-लिखैत सभ विद्यार्थी थाकि गेल रहथि । उत्तरपुस्तिकासभ लेबाक हेतु केओ रहबे नहि करथि। आब की कएल जाए? हमरा लोकनि तकैत-तकैत तत्कालीन किरानी परमा बाबूक घरपर पहुचलहुँ । ओ एकटा चपरासीकेँ कुंजी देलखिन । प्राचार्यक कोठरीकेँ एकटा खिड़की खोलि देल गेल । हमसभ ओही बाटे उत्तरपुस्तिका फेकि देलहुँ आ अपन-अपन डेरा लौटि गेलहुँ । ओही उत्तरपुस्तिकासभकेँ जाँचल गेल आ परीक्षाफलो निकलल।

विचित्र अनुभाग अधिकारी

ई संसार विचित्रतासँ भरल अछि । तरह-तरहक लोक,तरह-तरहक चीज-वस्तु चारू दिस भेटत । कहबी छैक जे व्यक्ति एक-दोसरसँ फराक अछि । मुदा किछु गुण एहन होइत अछि जे एक मनुक्खकेँ दोसरसँ जोड़ैत अछि। एक-दोसरक सुख-दुखमे भाग लेब,एहन व्यवहार दोसर संगे नहि करब जे हम स्वयं पसिंद नहि

करैत छी । मुदा कर्मचारी आयोग,इलाहाबादमे पदस्थापित एकटा अनुभाग अधिकारीजी अपना-आपमे अजूबा छलाह । भोरसँ साँझधरि जाबे ओ कार्यालयमे रहितथि,सभटा कर्मचारी,अधिकारिओ,तनावमे रहैत । ओ अपने तँ तनावमे रहिते छलाह । कारी खुटखुट,पातर-छीतर ,कतहुसँ आकर्षक नहि -ने बजबा-भुकबामे,ने काजमे । मुदा ओ अपना-आपकेँ सभसँ बेसी काबिल बुझैत छलाह । दोसरकेँ तंग कए,दुख दए हुनका नीक लगैत छलनि । प्रायः अपना जीवनमे असफल रहबाक कारण तकर ओलि दोसरसँ चुकता करैत छलाह। करवन ककरापर आ किएक तमसा जेताह तकर कोनो ठेकान नहि । कार्यालयमे सेहो बीड़ी पीबैत रहैत छलाह । ओहि समयमे हमसभ ओतेक पाकल लोक नहि रही । किछु-ने-किछु एहन भए जाइत जकरा ओ बातसँ बतंगर बना दितथि । मेमो दए देब.डांट-फामट करब,आ चरित्रपंजिकामे उल्टा-पुल्टा लिखिदेब हुनका लेल सामान्य बात छल । प्रायः एकसाल वा दू साल ओ कर्मचारी चयन आयोगमे रहलथि । मुदा सभ हाकरोस करए लागल । सभकेँ इएह मोनमे रहैक जे हे नारायण ई करवन जाएत। एकदिन तँ तंग भए कए किछु कर्मचारी हुनकर घरपर चिठ्ठी लिखि देलक जाहिमे हुनका चेतौनी देल गेल छल । चिठ्ठी हुनकर श्रीमतीजीकेँ भेटलनि। ओ चिठ्ठी पढ़ि बहुत परेसान भेलखिन । साँझमे जखन ओ घर वापस अएलाह तँ हुनका माटि-पानि लागि गेल रहनि । असलमे रस्तामे वर्षा भए गेल रहैक जाहिसँ हुनकापर किछु थाल-कादो पड़ि गेल रहनि । घर पहुँचिते श्रीमतीजी हुनकर बगए-बानि देखि हड़बड़ा गेलीह ।

""की भेल,के मारलक?"'-ओ चिचिआ उठलथि । असलमे हुनका चिठ्ठीमे लिखल बातसभ सद्यः होइत देखाइत रहल छलनि । बहुत मोसकिलसँ ओसभ ओहिदिन सामान्य भेल रहथि ।

कार्यालयमे जँ अहाँ हुनकर चाङुरमे फँसि गेलहुँ तखन तँ भगवाने मालिक । नान्हिओटा काज जँ हुनकासँ पड़ि गेल तँ ओ परेसान कए दितथि । पूरा कार्यालय हुनकासँ तंग भए गेल रहए ।

हुनका संगे एकबेर हुनकर डेरा दरिआगंजमे हम गेल रही । लागल जेना परिवारमे हुनका पहुँचितहि सभ सहमि गेल,डरा गेल। केओ किछु बजबे नहि करए । अंततः थोड़ेक कालक बाद हुनकर पत्नी बाहर भेलीह । चाह-पान करओलीह । थोड़बे कालक बाद हम वापस भए गेलहुँ ।

शुरुमे किछुदिन हम हुनका अंदरमे काज करैत रही । ओ ततेक तंग केलाह जे हम बहुत प्रयास कए दोसर अधिकारीक ओहिठाम बदली करा लेलहुँ । ओ ताहि बातसँ बहुत कुपित भेलाह आ हमर वार्षिक चरित्रपंजिकामे किछु प्रतिकूल टिप्पणी कए देलथि,जाहि कारणसँ अनुभाग अधिकारीक प्रोन्नतिक हेतु विभागीय परीक्षा पास करबामे बहुत दिक्कति भेल । हमर एकसाल समय बरबाद भए गेल ।

सभकथाक कहिओ-ने-कहिओ अंत होइत छैक । से हुनको संगे सेहो भेलनि । एकदिन हुनकर बदली भए गेलनि आ हुनकर स्थानमे दोसर अधिकारी आबि गेलाह । हुनका जाइते कार्यालयक माहौल बदलि गेल । लोकसभ हँसि कए दिन बिताबए । काजो बेसी नीकसँ होअए लागल । लगबे नहि करए जे ओ ओएह कार्यालय अछि । एतेक दिन बिते गेलाक बादो जखन ओहि

समयक संस्मरण होइत अछि तँ देहक रोइआँ ठाढ़ भए जाइत अछि।

ओहि समयक दूटा घटना

हम बेसक चाहे जाहि परिस्थितिमे रहल होइ,मुदा अधिकांश लोकक इएह धारणा रहैक जे हमरा लग बहुत पाइ अछि आ हम लोककेँ जतेक मदति करबाक चाही वा कए सकैत छी से नहि करैत छी । हमरा लगैत अछि जे बहुत दिन धरि हमरा संगे रहनिहार हमर छोट भाइ सत्येन्द्रकेँ छोड़ि कए कमोबेस ई धारण सभकेँ रहैक । से एहू लेल जे हम शुरुएसँ बहुत संयमित जीवन जिबाक अभ्यस्त रहल छी । मुदा असलियत किछु आओर छल । बान्हल दरमाहा बिना कोनो अन्य स्रोतकेँ जतेक बरवतियार भए सकैत छलैक से हमसभ करबे करिऐक । माएकेँ मासे-मास मनीआर्डर जेबे करनि । से एक-दू साल नहि, कम सँ कम चौतींस साल नियमित । ई बात सभकेँ बूझल छैक । अपन परिवार सेहो चलेबाक रहैक । तखन पाइ बचैत कोना जे आओरो लोकक समाबेस कएल जाइत ?हम ककरोसँ पैंच-उधार-कर्जलेबाक सभदिन खिलाफ रहलहुँ । धन्यवाद कही हमर श्रीमतीजेकेँ जे सीमित साधनमे सदिखन नीकसँ परिवार चला लेलथि आ कहिओ अभाव नहि भेल ,ककरोसँ लेबए नहि पड़ल । हमरा नहि मोन पड़ैत अछि जे केओ,कहिओ पुछने होअए जे कोनो परेसानी तँ नहि अछि? गाम दिससँ चिठ्ठी वा फोन आएल तँ बुझू जे ओहिमे टाकाक मांग हेबे करैत । एहनमे केना लोग समय कटलक से भगवाने जनैत छथि ।

ओहि समयक दूटा घटना अछि जे बिसरने नहि बिसराइत अछि । एकटा तँ नबोनाथमिश्रजीक संगे भेल । नबोनाथजी संबंधमे हमर पितिऔत काका लगताह मुदा बएसमे हमरासँ छ मास

छोट छथि । शुरुमे हमरासंगे बहुत नीक संबंध रहलनि । हमरा जखन दिल्लीमे केन्द्रीय सचिवालयमे नौकरी लागल रहए तँ हुनके संगे साइकिलपर उच्चैठ भगवतीक दर्शन केने रही । मधुबनीक मकान बनबएमे सेहो ओ परिश्रम केने रहथि । बाबू मरि गेलाह तँ ओएह मधुबनी जा कए हमरा फोनसँ सूचना देने रहथि । मुदा एकाधटा छोट-छीन बात हुनका गरि गेलनि जे संभवतः मोनसँ निकलि नहि सकलनि ।

ई बात २००४ ईस्वीक थिक । हुनका अपन पुत्रकेँ पब्लिक इसकूलमे नाम लिखेबाक रहनि । हुनकर फोन आएल जे बच्चाकेँ नाम लिखेबाक हेतु दस हजार टाका चाही । हम हुनका साफ बात कहलिअनि जे हमरा तँ अपने क्षितिजक इंजिनीयरिंगक हेतु टाकाक जोगार करबाक अछि । हम मदति नहि कए सकब । मुदा से बातपर हुनका विश्वास नहि भेलनि । तकरबाद ओ सभ संपर्क कम कए लेलाह । हम प्रयासो केलहुँ जे हुनकर मोन फेरसँ हरिआ जानि। मुदा से नहि भेलनि । अन्यथा ओ हमरासँ बहुत घनिष्ट संबंध बनेने रहैत छलाह । बुझेबे नहि करए जे हुनका लोकनिक स्वभावमे एहन परिवर्तन केना आ किएक भेलनि ? बहुत दिन बाद भतीजीक बिआहमे हम गाम गेल रही। ओहो गेल रहथि । गप्पक क्रममे ओ खुजलाह –“जे वापस दए दैत तकरा तँ अहाँ पाइ देबे नहि केलिऐक।” कहक माने जे हुनका हम जरूरति पड़लापर टाका पैंच नहि देलिअनि । हम हुनका की कहितिअनि? अविश्वासक की इलाज भए सकैत अछि ?

एकटा एहने घटना लगभग २००२ ई.मे भेल । हमर भागिन लोकेशक बहिनक बिआह करबाक रहनि । दहेजमे टाका देबाक रहनि । हमरासँ दस हजार टाका मंगलाह । मुदा हमरा लग से नहि

छल । हम फोन धेने रहि गेलहुँ । किछु जबाब नहि कए सकलिअनि। हुनका भेलनि जे हम ध्यान नहि देलिअनि । तकर बाद ओ फेर कहिओ कोनो संपर्क नहि रखलाह । मुदा हम की करितहुँ?

सीमित आमदनीमे हमसभ अपन संपूर्ण जिम्मेदारीक बहनकेलहुँ । कहिओ ककरोसँ किछु नहि मंगलहुँ,ने केओ कहिओ कोनो प्रकारसँ सहयोग केलक । सभ इएह सोचैत रहि गेल जे हिनका कोन कमी छनि । हम जखन विद्यार्थी रही तखनो बाबूसँ कहिओ किछु नहि मंगलिअनि । जे हुनका पार लागनि से देथि आ ओहीमे गुजर करी । विद्यार्थीक समयमे आ तकर बादो नौ वर्ष हम स्वयं अपन भोजन बनाबी । के होटल जाइत अछि,के सीनेमा देखैत अछि? तखन ककरा मदति भेलैक कि नहि भेलैक से हम की कए सकैत छलहुं ?

नबोनाथजी एकबेर गाम गेल रहथि । गाम जएबाक काल हमरोसँ भेंट केने रहथि । हम माएक हेतु किछु टाका देने रहिअनि,से ओ गाम पहुँचतहि माएकेँ दए देलखिन । किछुदिनक बाद ओ गामसँ दिल्ली वापस अबैत रहथि तखनो हुनकर हाल-चाल फोनपर लेने रहिअनि । जहन ओ दिल्ली वापस अएलाह तँ न्यू अशोक नगर स्थित हुनकर घरक आसपास रहनिहार किछुगोटे हुनका खिलाफ थानामे पुलिस केस कए देने रहनि जे ओ हुनकासभक घर जरा देलाह अछि,आदि,आदि । आब तँ ओ बहुत परेसानीमे पड़ि गेलाह। थानाक पुलिस हुनकर पछोड़ केलक । तरह-तरहसँ हुनका तंग केनाइ शुरु केलक । एहन परिस्थितिमे ओ हमरा फोन केलाह आ कहलाह जे पुलिस कहैत छनि जे जँ हम थानामे हुनका पक्षमे गबाही दए दिऐक जे घटना दिन ओ गाममे छलाह तँ ओ पुलिससँ

उबरि जेताह । हमरा से करबाक इच्छा नहि होअए । कारण हम थाना-पुलिसक चक्करसँ बाँचए चाही । ओ कैकबेर हमरा फोन केलाह । हमर मोनमे रहए जे जरूरी भेलापर पुलिसमे किछु पैरबी कए देबनि जाहिसँ मामिला शांत भए जेतेक । मुदा ओ हमर थानामे गबाहीक बातपर जोर देने रहलाह ,हम से नहि कए सकलहुँ । बादमे पता लागल जे ओ मामिला सलटि गेलैक । एहि घटनाक बाद तँ ओ हमरासँ बहुत अप्रसन्न भए गेल रहथि । सालों हुनकर अता -पता नहि रहल । बहुत दिनक बाद एकबेर ओ गाममे भेटलाह । फेरसँ ओ हमर मोबाइल नंबर लेलाह । तकर बाद फोनपर कहिओ काल गप्प-सप्प होबए लागल। मुदा ओहिमे पुरनका बात नहि रहल।

बाबाकेँ आकाशमे किछु देखेलनि

पछिला पचास-साठि सालमे जे परिवर्तनसभ भेल से साइते केओ सोचने होएत । रंगीन टेलेबीजन,मोबाइल फोन, यत्र-तत्र उपलव्ध हबाइ जाहज ,गामे-गाम बिजली ओहो निरंतर आ ताहूसभसँ ऊपर इंटरनेट । ई परिवर्तन कोनो एक दिने नहि भेलैक। ताहि हेतु वैज्ञानिकसभ सालों तपस्या केलनि । दिन-राति लागल रहलाह । तखने नूतन अविष्कारसभ भेल जे समाजक स्वरूपकेँ बदलि देलक । शुरुमे लोक तँ छोट-छोट परिवर्तनसँ डराइत छल। ओकर विरोधो केलक । जखन नवका सिक्का अएलैक,वा गाममे चापाकल बैसाओल गेलैक वा खेतमे खाद देबाक बात भेलैक,लोक बिना बूझने-सुनने विरोधमे ठाढ़ भए गेल । मुदा वैज्ञानिकसभ बिना भयकेँ अनवरत प्रयासमे लागल रहलाह । लोककेँ जे बुझाउक,जकरा जे बजबाक होउक से बाजओ । लोककेँ जानकारीक घोर अभाव छल । कनीकोटा किछु भेल तँ ओ परेसान भए जाइत छल ।

एकबेर हमर बाबा खेतमे काज करैत रहथि । अचानक हुनकर ध्यान आकाशमे तेजीसँ बहराइत धुआँपर गेलनि । ओ धुआँ निसान बनबैत आगू बढ़ैत गेल ,से देखि बाबा इएह -ले,ओएह-ले खेतमे काज छोड़ि भगलाह । हकासल-पिआसल घर अएलाह । सभकेँ ओ कहने फिरथि जे केना हुनका आकाशमे किछु देखेलनि । केना ओ धुआँ तेजीसँ आबाज करैत भागल चलि गेल। हमर नानी तँ छाती पिटए लगलि । हुनका हिसाबे बाबापर कोनो बड़का संकट आबए बला छलनि । ओ कोनो जेट विमान रहल होएत जे तीव्रगतिसँ आगू बढ़ल जा रहल छल । ओकर धुआँटा देखा रहल छलैक । जाबे ओकर आबाज सुनाइत ताधरि ओ बहुत दूर चलि गेल रहैत छल । तेँ देखल नहि जा सकैत छल । आब तँ एहन घटनापर ककरो ध्यानो नहि जाइत छैक । मुदा ताहि समयमे ओ एकटा दुर्लभ बात छल जे सभकेँ डरा देलक ।

जोरबागमे झपटमारी

ई बात सितंबर २०१०क थिक । हमसभ नित्य भोरे पाँच बजे लोदी गार्डेन टहलबाक हेतु जाइत छलहुँ । छओ-सवा-छओ बजे वापस भए जाइत छलहुँ । ओहि बीचमे लोदी गार्डेनक दू चक्कर लगबैत छलहुँ । ओहूदिन तहिना हम सभ लोदी गार्डेन टहलबाक हेतु गेल रही । घरसँ जखन बाहर भेलहुँ तँ थोड़बे दूरपर किछु विकलांग भिखमंगासभ देखाएल । किछुदिनसँ ओ सभ एही समयमे हमरासभकेँ लोदीरोड वा आसपास कतहु देखाइत छल। ओना ओकरसभक मुख्य स्थान सांइ मंदरिक बाहर रहैत अछि जतए एहन-एहन विकलांगसभ भिखमंगा बनि बैसल रहैत अछि । ओकर हालति देखि लोककेँ दया आबि जाइत अछि । फेर लोकसभ पूजा करबाक मानसिकतामे रहैत अछि । तेँ किछु ने

किछु ओकरासभकेँ दए देबामे संकोच नहि होइत छैक । मुदा लोदीरोडपर वा आसपास सड़कपर ओ सभ घरहेर किएक केने छल,ओहिमे ओकरसभक किछु योजना छलैक से हमरासभकेँ सोचेबो नहि करए ।

सामान्यतः हमरा लोकनिक लोदी गार्डेन जेबाक आ ओहिठाम टहललाक बाद वापस अएबाक रस्ता तय छल । हमसभ खालिए हाथ रहैत छलहुँ। सामान्यतः रस्तापर चलैत केओ-ने-केओ परिचित भेटिए जाइत छलाह । बेसीकाल तँ सरदार वलदेव सिंह सपत्नीक देखा जइतथि। हुनका संगे गप्प-सप्प करैत हमसभ लोदी गार्डेनमे प्रवेश करितहुँ । किछुदिन पूर्व एहिना हमसभ लोदी गार्डेनसँ टहलि कए अपन डेरा वापस जाइत रही । डेरा आब लगीचेमे छल । जोरबागक कोनटा परहक पानक दोकान लग एकटा मोटर साइकिल बला पता पुछलक-

“फलना जगह कोन बाटे जेबैक?”

हम सामान्यतः एहन प्रश्नक उत्तर देबाक प्रयासमे नहि पड़ैत छी । ओकरोसभक प्रश्नक जबाबमे हम किछु नहि बाजल रही । हमर श्रीमतीजी हमरा पाछू कनीके दूरपर रहथि । साइत ओ रेकी कए रहल छल वा झपटमारी करबाक ओकरसभक प्रयास ओहि दिन खाली चलि गेल रहैक । हमसभ सकुसल घर वापस भए गेल रही। ई तँ सपनोमे नहि सोचाएल जे ओ सभ कोनो तरहें गड़बड़ आदमी छल किंवा हमरेसभक पाछा पड़ल छल ।

आन दिन जकाँ ओहूदिन हमसभ पाँचबजे भोरे डेरासँ श्रीमतीजीक संगे टहलए बिदा भेल रही । कनीके आगू बढ़लहुँ की दू-तीनटा विकलांग भिखमंगा हमरासभक आगू-पाछू गुड़कैत

देखाएल । आश्चर्यो लागल जे एतेक भोरे ई सभ एहिठाम किएक घुमि रहल अछि ?खैर! हमसभ आगू बढ़ैत गेलहुँ । कनीके आगू बढ़लापर लोदी गार्डेनक भीतर आबि गेलहुँ । प्रसन्नतापूर्वक दू चक्कर लगेलाक बाद हमसभ वापस अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ । लोदीरोड टपलहुँ। कनीके आगू जर्मन विकास परिषद(GDC)क कार्यालय छल । ओहिठाम दुबगली चौकीदारसभ अपन-अपन जगहपर ठाढ़ छल । फरीछ भइए गेल छल । केओ अबैत छल,केओ जाइत छल। थोड़बे आगू जोरबाग मार्केट छल । हम दुनूगोटे निधोख आगू बढ़ि रहल छलहुँ । हम हुनकासँ पाँच-छओ हाथ पाछा चलैत रही।

एकाएक एक आदमी गमछा ओढ़ने हमरासभ दिस अबैत देखाइत अछि । ओही समयमे कैकगोटे लगीचेसँ गुजरि रहल छलाह । तेँ कोनो शंकाक प्रश्ने नहि छल । ओ आदमी एकदम सुभ्यस्त रूपसँ हमर श्रीमतीजीक लगीचमे आबि जाइत अछि आ ओकर दोसर हाथ झोरासँ झाँपल अछि। ओकर दोसर हाथमे कट्टा छल जे ओ हमर श्रीमतीजीक पेटमे सटा देने रहनि । अचानक देखैत छी जे ओ आदमी हमर श्रीमतीजीक गलासँ चेन छिनि रहल अछि । हमर श्रीमतीजी जी-जानसँ ओहि चेनकेँ बँचेबाक प्रयास कए रहल छथि। एतबेमे ओ आदमी बजैत अछि-

"पीछे देखो । अभी उसको साफ कर दूंगा ।"

हमरा दिस ओकरा इसारा करैत देखि हमर श्रीमतीजी अचानक पाछू घुमि हमरा देखैत छथि । ओ आदमी हुनकर पेटमे कट्टा सटा देने रहए। दोसर हाथे चेन छिनि कए भागल । हम ई सभ देखि रहल छी । मुदा एकटा शब्द हमरा मुँहसँ नहि निकलैत अछि । हम एकदम बौक भए गेल छी । हमरा लागल जेना करेंट

लागि गेल अछि । कनीके पाछू एकटा युवक मोटर सइकिलसँ घटनास्थल लग आएल । चेन छिननाहर ओकरा पाछूमे बैसि गेल। हमर श्रीमतीजी मोटर साइकिल बलाकेँ गोहरबैत रहलाह । हुनका होनि जे ओ केओ तेसर आदमी अछि । मुदा ओ तँ झपटमारक दोस्त रहए । ताबे हमहु मोटर साइकिलबला लग पहुँचि गेल रही । मोटर साइकिल आगू बढ़ल । ओकर पाछूमे बैसल झपटमार तमंचा लहरबैत रहल। मोटर साइकिल आगू बढ़ैत रहल । जाबे ओसभ लगीचमे छल,हम अबाक भेल ठाढ़ रही। जहन ओ सभपाँच-छओ लग्गासँ बेसी बढ़ि गेल,तखन जेना हमर आबाज फुटल । हम जोर-जोरसँ चिकरए लगलहुँ-

"एकरा पकड़ू ,ई चेन छिनने जा रहल अछि । पकड़ू..पकड़ू... ।"

सड़कपर दुनू कात लोक-अबैत जाइत रहल । कथी लेल केओ ओकरासभकेँ टोकबो करत । ओ सभ लोदीरोडपर चढ़ि कए बामा कात मुरि गेल । हम चिचिआइत आगू बढ़ैत गेलहुं । लगपासमे कैकगोटे जमा भए गेलाह..बस तमासा देखबाक हेतु । बातो सही छैक ,केओ अपन जान किएक संकटमे दैत । ओ दुनूगोटे आगू बढ़ैत गेल आ किछु कालमे अद्दश्य भए गेल।

हम दुनूगोटे अपन डेरा वापस अएलहुं । हमर श्रीमतीजी बहुत आहत रहथि । ओ ओहि चेनकेँ बाइस वर्षसँ पहिरैत छलीह। छलैक हल्लुके मुदा हुनकर माता-पिताक देल उपहार छलनि । तेँ ओहिसँ बेसी लगाव भए गेल रहनि । मुदा आब की होइत? जे हेबाक छल से भए गेल। हमर श्रीमतीजीक इच्छाक अनुसार हम दुनूगोटे थाना जा कए एहि घटनाक सूचना देलिऐक । । हमर श्रीमतीजी थानामे दर्खास्त देलखिन। ओ सभ ओकरा राखि

लेलक। मुदा प्रथम सूचना रपट(FIR) नहि केलक । हमरासभक संगे एकटा युवक उप-निरीक्षक घटना स्थलपर अएलाह,थोड़े काल एमहर-ओमहर केलनि आ वापस थाना चलि गेलाह । ओकरा सभक पूरा प्रयास मामिलाकेँ टरका देबाक रहैक। हम एहि बातसँ बहुत क्षव्ध रही ।

एहि मामिलामे हम थाना जेबाक पक्षमे नहि रही । हम बुझिऐक जे ओहिसभसँ आब किछु होबए बला नहि छल । मुदा हमर श्रीमतीजीक बहुत जोर देखि हम नार्थ ब्लाकमे गृहमंत्रीजीक कार्यालयमे कार्यरत ओएसडी नागराजजी(जे हमर परिचित छलाह) लग गेलहुँ । हुनका सभबात कहलिअनि । ओ थानामे फोन केलखिन आ हमरा फेर थाना जेबाक हेतु कहलाह । साँझमे कार्यालयसँ लौटि हम सोझे लोदीरोड थाना गेलहुँ । ओहि समयमे थानेदारक रंगति बदलि चुकल छल । ओ हमरा देखिते कुर्सीपर बैसेलाह । कोलड्रिंक पिएलाह आ तुरंत एफआइआर करबाक आदेश कए देलखिन । सचमुचकेँ एफआइआर भए गेलैक । हम डेरापर वापस आबि श्रीमतीजीकेँ ई समाचार देलिअनि ।

एकर बात तँ नित्य दूटा पुलिस हमर डेरापर आबए लागल । आसपास लोकसभकेँ कान ठाढ़ हबए लगलैक जे बात की छैक? हिनका ओहिठाम पुलिस किएक अबैत रहैत छनि? एकदिन तँ ओ सभ किछु अपराधीक फोटो संगे आएल आ हमरासभकेँ तिहार जेलमे पहचान परेडमे उपस्थित हेबाक हेतु कहलक । हमसभ एहिबातसँ बहुत परेसान भए गेलहुँ । जे क्षति हेबाक छल से तँ भेबे कएल । आब पुलिस संगे जहाँ-तहाँ बौआइत रहू । हम तत्कालीन पुलिस उपायुक्त श्री आर.के. झा जीकेँ फोन केलिअनि । हुनका आग्रह केलिअनि जे कहुना ई केस बंद करा देथि जाहिसँ पुलिससँ

छुटकारा होअए । जे बात छैक ओ हमरा ओहिठाम आएल एएसआइकेँ कहलखिन जे एहि केसकेँ बंद कए देल जाए । ताहि हेतु हमसभ पुलिसकेँ लिखि कए सेहो देलिऐक । इहो लिखि देलिऐक जे हमसभ अपराधीकेँ नहि चिन्हि सकब । हमरासभकेँ पहचान परेडमे लए गेलासँ पुलिसक केस कमजोर पड़ि जाएत । तकर बाद हमरा ओहिठाम पुलिसक आवागमन बंद भेल । हमसभ निचैन भेलहुँ ।

करीब डेढ़ सालक बाद एकदिन कोर्टसँ समन भेटल । ओहिमे हमर श्रीमतीजीकेँ साकेत कोर्टमे उपस्थित हेबाक हेतु कहल गेल रहनि । हमसभ नियत समयपर कोर्टमे हाजिर भेलहुँ । पुलिस दूगोटेकेँ पकड़ने छल आ हमरोसभक मामिलामे ओकरेसभक नाम दए देने छल । असलमे ओ सभ हमर श्रीमतीजीक चेन झपटमारीमे सामिल नहि रहए । जाबे हमसभ कोर्ट पहुँचलहुँ ताबे एहि मामिलामे अगिला तारिख दए देल गेल रहैक । हमसभ जज साहेबकेँ आग्रह केलिअनि जे संभव होइक तँ आइए सुनबाइ कए लेल जाए । संयोगसँ मध्यावकाशक बाद ई मामिला फेरसँ लागि गेल । दुनू अपराधी कोर्टमे उपस्थित छल । हमर श्रीमतीजी कहलखिन जे ओ ओहि अपराधीसभकेँ नहि चिन्हैत छथिन । बातो ओएह छल । जज वारंबार पुछलकनि- “आप दबाब में तो नहीं बोल रहे हैं?”

हमर श्रीमती जी कहलखिन-“नहीं सर! हम स्वेच्छा से सही बात कह रहे हैं ।”

तकर बाद हमरासभकेँ कोर्टक तरफसँ यातायात खर्चा देल गेल आ हमसभ वापस अपन डेरा आबि गेलहुँ । मोनमे वारंबार

अफसोच होइत छल जे बेकारे पुलिसमे रपट केलहुँ । चेन तँ गेबे कएल ऊपरसँ व्यर्थक परेसानीसभ होइत रहल ।

आनलाइन भोज

पछिलाबेर नबंबर २०२०मे जखन माएक चारिम बरखीक करबाक छल तँ बहुत चिंतामे परि गेल रही। जकरे देखू सएह कोरोनाक चर्च करैत भेटैत । लोकक आबाजाही बंद,भेंट-घांट बंद। आखिर कोना की कएल जाए?

गामक बात जरूर फराक छल । ओतए सभकिछु पूर्वबते चलि रहल छल ।ओहिना भोज-भात,ओहिना उपनयन,बिआह आ श्राद्ध भए रहल छल । मुदा गाम जाएब तखन ने? ओतए जेबेक क्रममे जँ कोरोना गिरफ्तमे लए लेलक तखन? ग्रेटर नोएडा स्थित हमर घरक आसपास कोनो गड़बड़ी नहि छल । सभटा ओरिआन भए जाइत। मुदा ब्राह्मणक जोगार कोना होइत? कम सँ कम एगारहटा ब्राह्मण तँ चाहबे करी ।

ओना हम पहिल वर्षीक बात गया जा कए पिंडदान कए देने रही । पंडितजीक हिसाबे गयामे पिंडदान केलाक बाद साले-साल वर्षी करबाक अनिवार्यता नहि रहि जाइत छैक । मुदा कैकगोटे कहए लगलाह जे पाँचटावर्षी तँ करबाक चाही। हम सोचलहुँ जे पांचो वर्षी कइए लेल जाए । ताही क्रममे पछिला साल नबंबरमे माएक चारिम वर्षी छलनि । ओहि समयमे कोरोना किछु कम भए गेल रहैक । मुदा खतम नहि भेल रहैक । तेँ ब्राह्मणलोकनिकेँ घरमे एकठाम जमा करब ठीक नहि बुझाएल । तखन की कएल जाए? आओर विकल्पसभपर सोचए लगलहुँ ।

किछुए दिन पहिने हमरे सोसाइटीमे हमर एकटा परिचित मैथिल ब्राह्मणक ओहिठाम हुनकर माएक दोसर वर्षी रहनि। हमरा ओना ओ अवश्य नोत दैत छलाह । मुदा एहि बेर हुनका ओहिठामसँ नोत नहि आएल । भेल जे वर्षी करताह कि नहि? मुदा एकदिन जखन दुपहरिआमे घरसँ सड़क दिस जाइत रही तँ कर्त्ताकेँ केस कटओने देखलिअनि। पात्रकेँ कर्मक ओरिआन करैत देखलिअनि । एक-दू गोटे लगपासमे बैसलो देखेलाह । हम ओम्हरे ससरि कए गेलहुँ। भेल जे पता करिऐक जे कोना-की कए रहल छथि ?

गाछतर कर्मक तैयारी भए रहल छल । हम ओहिठाम जा कए ठाढ़ भेलहुँ । कर्त्ता अपने बाजए लगलाह-“एहिबेर कोरोनाक कारण ककरो नोत नहि दए सकलिऐक । महापात्रजीक अतिरिक्त ब्राहम्ण भोजनक हेतु मंदिरमे पंडितजीकेँ किछु अन्न आ टाका दए देबनि ।” हम टहलि कए वापस अबैत काल फेर ओतए कनी काल ठाढ़ भेलहुँ। असलमे हम देखए चाहैत छलहुँ जे एहन परिस्थितिमे ओ माएक वर्षी कोना कए रहल छथि । कर्ता खूब नीकसँ मास्क लगओने रहथि । मुदा महापात्रजीक लगमे मास्क नहि छल । हुनकर सहायक लग सेहो मास्क नहि छल । एकाध गोटे जे ओतए बैसल छलाह,तिनको लगमे मास्क नहि छल । एनामे कोरोनासँ वचाव कोना होइत?

ओहिठामसँ लौटलाक बाद हम सोचए लगलहुँ जे हमरो तँ माएक वर्षी करबेक अछि । तखन कोना की कएल जाए? मंदिरमे जा कए सीधा आ टाका दए देब हमरा पसिंद नहि पड़ल । ब्राह्मणसभकेँ नोत दए घरमे भोजन कराएब परिस्थितिक अनुसार काज नहि होइत,कारण कोरोना संक्रमणक खतरा भए सकैत छल।

तखन एकटा नवप्रयोग करबाक विचार भेल । हम दुनू बेकती एहिपर सहमत भेलहुँ । जिनका ओहिठाम हम वर्षी देखि आएल रही सेहो एकरा पसिंद केलनि,संगहि दूटा ब्राह्मण उपलव्ध करेबाक सेहो जोगार केलनि ।

नवप्रयोग ई छल जे ब्राह्मणलोकनिकेँ हुनके घरपर स्थानीय प्रसिद्ध भोजनालयसँ भोजन आनलाइन आदेश कए नियत समयपर पठा देल जेतनि । हमरे सोसाइटीमे रहैत दोसर मैथिल ब्राह्मण परिवार सेहो सहमति देलनि । ओना ओ तँ हमर घरोपर आबि कए ब्राह्मण भोजन करबाक हेतु तैयार रहथि । आओर कैकगोटे अपन सहमति देलनि ।

वर्षीक एकदिन पहिने हम एकभुक्त केने रही । केस कटाबक रहए। पछिला आठमाससँ केस जस-के-तस छल । कोरोनाक कारण हजाम लग नहि गेल रही । मुदा वर्षीमे तँ केस कटेबेक छल। हमर छोटपुत्र आनलाइन एकटा हजामक जोगार केलनि । जेना-तेना केस कटेलहुँ । साँझमे एकभुक्त केलहुँ । दोसर दिन नियत समयपर पंडितजी आबि गेलाह । कर्मक समानसभ पहिनेसँ तैयार छल । विधि-विधानपूर्वक कर्म संपन्न भेल । पंडितजीके यथेष्ट दक्षिना देलिअनि । ओ नीकसँ भोजन केलनि । तकरबाद अपन-अपन घरमे बैसल ब्राह्मणलोकनिकेँ भोजन समयपर पहुँचि गेलनि । फोनसँ तकर संपुष्टि कएल गेल । ओ सभ अपन-अपन घरमे भोजन केलनि । कैकगोटे तँ भोजन करैत फोटो सेहो पठा देलनि । आनलाइन ब्राह्मणभोजन करेबाक प्रयोग सफल रहल। एहि तरहें माएक चारिम वर्षी शांतिपूर्ण ढ़ंगसँ संपन्न भेल

हेलो दरभंगा! हेलो दिल्ली!

पोस्टकार्डक कमाल

ई बात जनबरी १९७३ ई०क थिक । हम कोनो काजसँ मधुबनी गेल रही । ओहि समयमे मधुबनीक पोस्ट आफिस टीसनक सामनेमे छल । हमरा कतहुसँ दूरभाष निरीक्षकक पदक हेतु रिक्तिक जानकारी भेटल । हम ठामहि एकटा पोस्टकार्ड किनलहुँ आ तुरंत आवेदन पत्रक हेतु आग्रहपत्र पठा देलिऐक । ओहिसँ पहिने हम कैकटा प्रतियोगिता परीक्षासभ दैत रही । किछुए मास पूर्व एससीआरएक साक्षात्कार हेतु संघ लोक सेवा आयोग दिल्ली गेल रही (अंततोगत्वा, हमरा ओहिमे चुनाओ नहि भेल)। बाबूकेँ जखन दूरभाष निरीक्षकक पदक पता चललनि तँ ओ प्रसन्न नहि भेल रहथि । कहलाह-"अखने तँ ओतेकटा पदक हेतु साक्षात्कार देबए गेल रही ।"हम बीएससी(प्रतिष्ठा) पास भए गेल रही। मुदा परीक्षाक परिणाम विलंबसँ अएबाक कारण एमएससीमे नामांकन बंद भए गेल रहैक । परिणामतः हम घरे बैसल रही । प्रतियोगिता परीक्षासभक तैयारी करैत रही । जुलाइ १९७३मे हमरा डाक विभागसँ दूरभाष निरीक्षक हेतु चयनक सूचना भेटल । बाबू बहुत प्रसन्न भेल रहथि । ओ समय रहैक जे एकटा पोस्टकार्डक जबाबमे हमरा आवेदन पत्र भेटि गेल । हम ओहि आवेदन पत्रकेँ भरि अंकपत्रसभक संगे पठा देलिऐक आ बिना कोनो ताम झामकेँ हमरा नौकरी हेतु चयन भय गेल । बीएससी डिग्री प्रथम भागक अंक पत्रक आधारपर हमरा ई नौकरी लागल छल । ओहिमे हमरा बहुत नीक नंबर आएल छल। हमरा मोतीलाल नेहरु रिजनल इंजिनियरिंग कालेजमे नामांकन होइत रहए (मुदा पारिवारिक

कारणसँ हम नाम नहि लिखा सकल रही) मुदा परिश्रम करवनो व्यर्थ नहि जाइत अछि। सएह भेल । ओ नंबर हमरा दूरभाष निरीक्षकक नौकरी दिआ गेल। ई बात अलग थिक जे एहि नौकरीसँ हम कहिओ संतुष्ट नहि रही आ मौका भेटितहि एकरा छोड़ि दिल्लीक केन्द्रीय सचिवालय सेवामे चलि गेलहुँ । ओ तँ जे हेबाक छलैक से भेलैक । ओहि नौकरीक हेतु चयन भेलाक बादो कैक मास धरि पदभार ग्रहण करबाक हेतु प्रतीक्षा करए पड़ल छल । ओ समय काटब पहाड़ टपब जेना लगैत छल । खैर! ओहो समय बितल । अगस्त १९७३मे राँची दूरभाष केंद्रमे हमर प्रशिक्षण शुरु भेल ।

ओहि समय हमर बएस २१ वर्ष छल । हम नौकरी नहि करए चाहैत रही । आगू पढ़ाइ करबाक इच्छा छल । मुदा परिस्थितिवश घोर अनिच्छापूर्वक हम नौकरी करए राँची पहुँचलहुँ । ओहिठाम दूरभाष केंद्र भवनमे प्रशिक्षण केन्द्र छल । बाहर दिस दहिना कातक पहिल कक्षमे प्रशिक्षण होइत छल ।

प्रशिक्षणक हेतु राँचीमे छओ मास रहबाक छल । बाबू हमरा डाक्टर सुभद्र झाक नामसँ एकटा चिठ्ठी देने रहथि । हम योगदा सतसंग आश्रम स्थित योगदा विद्यालयमे हुनकासँ भेंट केलिअनि आ बाबूक चिठ्ठी देलिअनि । जे बात छैक,ओ हमरा तुरंत अपना संगे रहबाक अनुमति देलनि । हम हुनकर डेरापर एकमास रहलहुँ। हमरा ओ जगह बहुत रनमगर लागल । प्रकृतिक सौंदर्यसँ भरल-पुरल ओ स्थान ककरो नीक लगितैक । डाक्टर साहेब असगरे रहैत छलाह । एकटा नौकर छलनि जे घरक काज करैत छल । भानस ओ अपने बनबैत छलाह। एक्के साँझ भानसमे दुनू साँझक जोगार होइत छल । हम लगीचेमे सड़कक कातक ढाबामे खाइ आ पैरे दूरभाष केंद्र जाइ आ पैरे साँझमे वापस योगदा आश्रम वापस

आबी। एकमासक बाद हम अपन डेरा लेलहुँ -राँची संस्कृत विद्यालयसँ सटले । ओ डेरा दूरभाष केंद्रसँ लगीचे छल । तेँ ओहिठामसँ प्रशिक्षण हेतु आएब-जाएब आसान छल ।

एकटा बंगाली अधिकारी प्रशिक्षणक प्रभारी रहथि । ओ दिन-राति सिगरेट पीबैत रहैत छलाह । दूरभाष निरीक्षकक प्रशिक्षणमे हमरासंगे पैतिस गोटे रहथि। किछुगोटे तँ विभागीय प्रोन्नतिक आधारपर आएल रहथि । मुदा बेसीगोटे हमरे सन युवक रहथि । हम बहुत परिश्रमपूर्वक प्रशिक्षण केलहुँ आ छओ मासक बाद ओकरा नीक जकाँ संपन्न कए व्यवहारिक प्रशिक्षणक हेतु लहेरिआसराय दूरभाष केंद्र आबि गेलहुँ ।

श्री एस.एन झाजी लहेरिआसराय दूरभाष केंद्रक प्रभारी रहथि । हुनका अतिरिक्त ओतए तीन-चारिटा आओर स्टाफ काज करैत रहथि । ओ समय हस्तचालित मसीनक रहैक । जँ दूरभाष सँ एसटीडी लगेबाक अछि तँ घंटो पहिने ट्रंक काल बुक करबाक होइत छलैक ।तकर बाद टेलीफोन आपरेटर ओकरा दूरस्थ दूरभाष केंद्रसँ संपर्क साधैत छल ।

“हेलो पटना!हेलो पटना! जमशेदपुर का लाइन दे दीजिएगा।” कमे जगह सोझे फोन लगैत छलैक नहि तँ कोनो-ने-कोनो सहरसँ घुमा-फिरा कए ट्रंक कालक लाइन लगाओल जाइत छल । चूंकि सभटा काज हाथेसँ होइत छल तेँ ओहिमे टेलीफोन आपरेटरसभक बहुत चलैत छल । जकर चाहए लाइन लगा दैक आ जकरा चाहए तकरा कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए लटका दिअए। एहि कारणसँ कदाचार सेहो होइत रहल होएत । जे से । मुदा हमर काज तकनीकी प्रशिक्षण लेबाक छल । झाजी रोज किछु-ने-किछु उपदेश दितथि आ काज खतम। हम जतेक काल

संभव होइत दूरभाष केंद्रक बेंचपर बैसल रहितहुँ आ तकर बाद लहेरिआसरायक बलभद्रपुर मोहल्ला स्थित अपन डेरापर चलि जइतहुँ । हमर डेरामे एकटा आओर विद्यार्थी रहैत छलाह । ओ बहुत सज्जन व्यक्ति छलाह । हमरा बहुत सहयोग करैत छलाह। हम तीनमास ओहि डेरामे रहलहुँ । एहि बीच फगुआमे गाम गेल रही आ चारि-पाँच दिन ओतहि रहि गेलहुँ । वापस अएलाक बाद झाजी बहुत तमसेलाह-

“अहाँक प्रशिक्षणमे ब्रेक भए गेल । आब फेरसँ सभटा प्रशिक्षण करए पड़त ।” हम किछु जबाब नहि देलिअनि । ओहो तमसाएक रहि गेलाह, किछु क्षति नहि केलाह । समयपर प्रशिक्षण पूरा भेल । प्रशिक्षण पूरा भेलाक बाद हमर पहिल पदस्थापना जमशेदपुर दूरभाष केंद्रमे भेल ।

जमशेदपुर दूरभाष केंद्र

प्रशिक्षणक बाद हमर इच्छा छल जे दरभंगामे पदस्थापना होइत । मुदा से नहि भए सकल । पहिनेसँ पुरान लोकसभ जोगार लगओने रहथि । तिनकासभकेँ दरभंगा आनल गेल आ हम जमशेदपुर एसडीओ फोन्सक ओहिठाम कार्यभार ग्रहण केलहुँ । जमशेदपुर हम पहिलबेर गेल रही । एसडीओ छलाह- श्री गोविंद प्रसाद। पिंडश्याम रंगक बेस नमगर-पोरगर लोक । मोटर साइकिलपर जखन ओ दूरभाष केंद्र आबथि तँ अनका जे होइत होइक हमरा तँ अदंक लागि जाइत छल । हमर अधिकारी छलाह- श्री बंगाली दास । ओ छपराक रहए बला छलाह । हमरासँ अनेरे तमसाएल रहैत छलाह । हम नौकरी शुरुए केने रही । हुनका हमरा सिखेबाक चाहैत छलनि । मुदा तकर बदलामे रहि-रहि कए उटपटांग गप्प-सप्प करथि । हमहु तँ नवे रही । की जाने गेलिऐक

नौकरी केना कएल जाइत छैक । कहिओ काल हुनका सुना दिअनि। आब तँ ओ अग्निश्च- वायुश्च भए जाथि । सभसँ बेसी हुनका एहिबातसँ परेसानी होनि जे हम आइएएस परीक्षा देबाक गप्प करी । ओ हमरा परीक्षा देबाक हेतु छुट्टी नहि देलाह । हमहु बिना किछु सोचने चलि जाइत रहलहुँ । मासदिन बाद जखन वापस अएलहुँ ताधरि तँ माहौल एकदम हमर खिलाफ छल । ओ हमरा बारेमे एसडीओ फोन्स श्री गोविंद प्रसादक कान भरि देने रहथि। कार्यालयमे बाबूसभ कहलक जे साहिब अहाँसँ बहुत तमसाएल छथि । थोड़बे कालक बाद ओ कार्यालय अएलाह । हम सोझे हुनकर कोठरीमे पैसि गेलहुँ आ सभटा बात कहलिअनि । ओ तुरंत श्री बंगाली दास कैँ बजओलखिन आ हुनका हमरा सामनेमे तमसा कए कहलखिन-

"नया आदमी है? कुछ सिखाओगे सो तो होता नहीं है । उल्टे दिन-रात उसको तंग करते रहते हो ।" ओ बेचारे मुँह लटकओने अपन सीटपर जा कए बैसि गेलाह । एहि तरहें हमर-हुनकर उठापटक चलैत रहल ।

जमशेदपुरक सरकारी अधिकारीसभक फोनक देख-रेखक काज हमरा जिम्मामे छल । बनिआ वा निजी मोट आसामीसभक फोन दोसर-दोसर निरीक्षकसभ देखथि । हमरा संगे एकटा लाइनमैन छल-ललन सिंह । ओ आराक रहएबला छल । काजमे एक नंबर । जे काज ककरोसँ नहि होएत से ललन सिंह एकमिनटमे कए दैत। कैकबेर हम आ ललन सिंह पैरे-पैरे अधिकारी लोकनिक आवासपर दूरभाष देखबाक हेतु जाइ । हम बहुत तेज चली । कैकबेर ललन सिंह कहबो करैत-

"पीआइ साहेब! अहाँ बहुत तेज चलैत छी ।"

कहक माने जे कनी हल्लुके चलू । एकदिन अहिना दुनूगोटे कोनो काजपर जाइत रही । हम पुछलिऐक-ललन सिंह तोहर प्रोन्नति कहिआ हेतह ।

“ओहि लेल तँ विभागीय परीक्षा पास करए पड़ैत छैक ।”

“तँ किएक ने पास कए लैत छह?”

“का कहें पी.आइ साहेब जैसे किताब खोल के बैसत हैं कि आँखे बंद हो जात है ।”

ललन सिंह हमरा बहुत मदति करए । सरकारी अधिकारीसभ सिकाइत करएमे माहिर होइत छथि। जहाँ कि फोन खराप भेल कि डीइटीक ओहिठाम सिकाइत पहुँचि जाइत । तकरबाद तँ तमासा भए जाइत । एसडीओ कहितथि-

“आप खुद जाइए । ललन सिंह को साथ ले लीजिए । आब कएल की जाइत । ओना हमरा किछु करबाक नहि रहैत छल । मुदा सरकारी हुकुम तँ बजेबाक छल । काज तँ ललन सिंह करए । महिनामे दू-चारिटा एहन मामिला आबिए जाइक ।

हम केन्द्रीय सचिवालय सेवामे नौकरीके हतु संघ लोक सेवा आयोग द्वारा सन् १९७६मे आयोजित होबएबला प्रतियोगिता परीक्षाक आवेदन पत्र भरने रही । आवेदन पत्र भरि कए विभागीय माध्यमसँ समय अछैत पठा देलिऐक । मुदा डीइटी कार्यालयमे कार्यरत बाबू- झाजी कोनो बातसँ हमरासँ तमसा गेल रहथि । ओएह एहि मामिलाकेँ देखैत रहथि । ओ संचिकामे एहन टिप्पणी केलाह जाहिसँ हमर आवेदन पत्र आगू नहि जाए । मुदा डीइटी हुनकर बात नहि मानलथि आ आवेदन पत्रकेँ संघ लोक सेवा आयोग पठा देबाक आदेश देलथि । झाजी तखनो नहि मानलथि

आ आवेदनकेँ सर्किल कार्यालय पटना पठा देलथि । तकर बाद की भेल की नहि,हमर आवेदन पत्र संघ लोक सेवा आयोग नहि पहुँचल। हम एकटा अग्रिम प्रति संघ लोक सेवा आयोग पठओने रहिऐक । मुदा ओहिसंगे पोस्टल आर्डर नहि रहैक। अंततोगत्वा,हमर आवेदन रद्द कए देल गेल । हम ई बातसभ बादमे तखन बुझलिऐक जखन ओ संचिका देखबाक अवसर भेटल।

जमशेदपुरमे हम एकमास सहकर्मी स्वर्गीय जगदीश कुमार मिश्रक संगे रहल रही । तकरबाद हम फराक डेरा लेलहुँ। ओ डेरा दूरभाष केंद्रक ठीक सामने छल । ओहि डेरा क एक कोठरीमे हम रही आ दोसर कोठरी टाटा मीलक कर्मचारी रहैत छलाह । ओ फ्लैट हुनका कंपनी द्वारा देल गेल रहनि । हम अपन भोजन अपने बनबैत छलहुँ। ओ सभ हमरा कहिओ खाइत नहि देखथि । कारण बेसीकाल हुनकरसभक ड्युटी रातिएमे रहैत छल । हुनकासभकेँ कैकबेर बजैत सुनिअनि-

“ई झाजी तँ खेबा बिना मरि जेतैक ।” हमरा बहुत हँसी लागए। ओ सभ बहुत खाइत छलाह । हमर भोजनक मात्रासँ तीन-चारि गुना बेसी कहक चाही । तँ हुनकासभकेँ हमर भोजन बहुत कम लगैत हेतनि ।

जमशेदपुर बहुत स्वच्छ सहरमेसँ मानल जाइत छल । ओहि समयमे ओ बिहारेक भाग छल । बादमे झारखंड राज्यक हिस्सा भए गेल । एक तँ ओ गामघरसँ बहुत दूर छल,दोसर ओहिठाम हमरा छुट्टी लेबामे बहुत दिक्कति होइत छल । पहिलबेर गामसँ एतेक दूर गेल रही । होअए जे जल्दीसँ वापस दरभंगा चलि जाइ । ताहि हेतु बाबू किछु प्रयास केलथि आ हमर बदली जमशेदपुरसँ दरभंगा डीइटीक अंदर भए गेल। हम एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेल

रही । मुदा जाबे हम दरभंगा पहुँचलहुँ ताधरि हमर पदस्थापन सुपौल कए देल गेल रहए । तेँ दरभंगासँ हम सोझे सुपौल जेबाक व्योंतमे लागि गेलहुँ । ओहि समयमे सुपौल जाएब बहुत टेढ़ बात रहैक । दरभंगासँ ट्रेन पकड़ि कए सहरसा जाउ । फेर ओतएसँ दोसर ट्रेन पकड़ि कए सुपौल जाउ । सहरसा जिला छल आ सुपौल ओकर सबडिबीजन ।

हम पहिने सहरसा दूरभाष केंद्र गेलहुँ । ओहिठाम सुपौल दूरभाष केंद्रक एसडीओ आ अन्य अधिकारी बैसैत छलाह। ओहिठाम पदभार ग्रहण केलाक बाद ओही दिन दुपहरिआमे ट्रेन पकड़ि कए हम सुपौल बिदा भए गेलहुँ ।

सुपौल दूरभाष केंद्र :

सहरसासँ सुपौल जाएबला ट्रेन उपरसँ नीचा ठसाठस भरल छल । ट्रेनक छतपर सेहो लोकसभ बेधरक यात्रा कए रहल छल। धनयवाद कही ट्रेनक चालकसभकेँ जे एहनो स्थितिमे ट्रेनकेँ घिचने जा रहल छल । केओ पौदानसँ लटकल,तँ केओ ट्रेनक बोनटपर लटकल। लगैत रहैक जेना ट्रेन स्वयं बरिआती जा रहल अछि । जेना-तेना सुपौल पहुँचलहुँ । टीसनसँ सोझे दूरभाष केंद्र गेलहुँ । ओहिठाम तीन वा चारिटा कर्मचारी छलाह । ओएहसभ हमर डेरा ताकि देलाह । साँझमे हम डेरापर पहुँचि गेलहुँ । दूरभाष केंद्रमे एकटा मौलबी साहेब टेलीफोन आपरेटर छलाह । ओ बहुत रमनगर लोक रहथि । ओ हमरा भोजनक जोगार मारवारी बासामे कए देलाह । एहि तरहें हमर आवास आ भोजन दुनूक व्यवस्था जाइते भए गेल ।

हमर डेरा सुपौल रेलवे टीसनक ठीक सामने छल । ओ लालकोठीक नामसँ प्रसिद्ध भवनक एकटा बाह्यकोठरी छल । घोघरडीहाक निर्भूषण झाजीक ओ मकान रहनि । ओहि कोठरीमे सुपौल पोस्ट आफिसक पोस्टमास्टर झाजी पहिनेसँ रहैत छलाह । हमरा ओहीमे जगह भेटि गेल छल । पोस्टमास्टर साहेब बहुत मेहनती लोक छलाह । भोरे पोस्ट आफिस चलि जाइत छलाह आ साँझमे थाकल-झमारल डेरा वापस अबैत छलाह । हम हुनका संगे खूब हँसी-मजाक करैत छलहुँ । कैकबेर तँ ओ खौंझा जाइत छलाह। हमरा दूरभाष केंद्रमे किछु करबाक नहि रहैत छल। ओहिठाम पहिनेसँ एकटा तकनीकी (टेकनिकल) कर्मचारी छलाह जे कोनो तकनीकी समस्या भेलापर सम्हारैत छलाह । हमरा ऊपर इंजिनीयरिंग सुपरवाइजर फोन्स छलाह । ओ जमशेदपुरमे किछुदिन हमरासभक संगे दूरभाष निरीक्षकक प्रशिक्षण करैत रहथि । प्रशिक्षणक बीचेमे हुनका अगिला पदक हेतु प्रोन्नतिक आदेश आबि गेल रहनि । विभागीय प्रशिक्षण कए ओ सहरसामे पदग्रहण केने रहथि । जखन कखनो हुनका मौका भेटनि हमरा घुड़की देबएसँ ओ बाज नहि आबथि । हमरा ई खराप लागए जे संगे रहलाक बादो ओ हमरा बकसि नहि रहल अछि,अपितु मौका भेटितहि सबारी करए लगैत अछि । मुदा एहन मौका कमे-काल अबैक । कारण सुपौल दूरभाष केंद्र बहुत छोट रहैक, बेसी काजे नहि रहैक । आइ-काल्हिक दूरभाषक तकनीकीक आगू तँ ओसभ खेलौना छल।

सुपौलमे किछु बात जे बहुत नीक लागल ओहिमे छल ओहिठामक पेरा,दही आ मारबारी बासाक उत्तम भोजन । सचार लगा कए भरिमोन निरामिष भोजन मारबारीबासामे होइत छल ।

रोटी घीमे बोरल आ एकदम कुरकुर । खैब तँ खाइते रहि जाएब । एहि तरहें सुपौलमे हमर समय नीकसँ बिति रहल छल ।

सुपौलमे हम बेसीदिन नहि रहलहुँ । हम तँ जमशेदपुरसँ बदली एहि हेतु करबओने रही जे मधुबनी वा दरभंगामे पदस्थापना भए जाएत । मुदा से नहि भए सकल । हमरा सुपौल जाए पड़ल । मुदा हमर शुभचिंतकसभ आश्वस्त केलनि जे अहाँकेँ शीघ्रे दरभंगा बजा लेब । चिंता नहि करू । चिंता कइए कए की होइत?नौकरी तँ करबेक छल । तैँ सुपौल चलि गेलहुँ ।

सुपौलमे रहैत सभसँ महत्वपूर्ण घटना भेल जे हमर बिआह पण्डौल डीहटोल तय भेल । ओतहि हमर ससुर अपन भाइ आ हुनकर ससुर(जेलर बाबू)क संगे हमरा देखबाक हेतु आएल रहथि। हमरासँ दूरभाष केंद्रमे भेंट भेल रहनि । यथासाध्य हुनकर स्वागत केलिअनि । हमर पितिआ ससुर रमेश बाबू हमर डेरा सेहो देखि गेलाह । कुलमिला कए ओ सभ काज करबाक मोन मना लेलथि । मुदा हमरा पता लागल बिआहसँ एकसाँझ पहिने । हमर बदली भए गेल । हम दरभंगा जा कए पदभार ग्रहण केलहुँ । रातिमे गाम पहुँचलहुँ । जखन दरबाजापर पहुँचलहुँ तँ ओहिठामक गहमा-गहमी देखि माथा ठनकल । बात की छैक? लालबच्चा(हमर मित्र-डाक्टर विष्णुकान्त मिश्र) हमरा कानमे समाचार देलथि-

"तोहर बिआह तय भए गेलह ।"

"कतए?"

"पण्डौल डीहटोल । काल्हिए बिआह हेतैक ।"

कहि नहि सकैत छी जे एहि बातसँ हमरा कतेक प्रसन्नता भेल रहए ।

डीइटी कार्यालय, दरभंगा

दरभंगामे डीइटी कार्यालयमे दूरभाष निरीक्षकक पदपर हमर नियुक्ति भेल छल । हमर ई काज अपेक्षाकृत रुचिगर छल । दरभंगा,मधुबनी,पुर्णिआ,सहरसा,कटिहार,सुपौल एहिसभ क्षेत्रमे जकरा ककरो ओतए दूरभाषक बिलक भूगतानक पुरान मामिला रहैत छल ओ सभ हमरा देखबाक होइत छल । संगहि न्यायालयमे चलि रहल मामिला सेहो देखबाक होइत छल। ताहि हेतु हमरा वारंबार यात्रापर जाए जरूरी रहैत छल । यात्राक हेतु हमरा रेलवेक पास देल जाइत छल। मुदा हम बहुत कम यात्रा करैत छलहुँ । कारण हमरा प्रतियोगिता परीक्षासभक तैयारी करब प्राथमिकता छल । हम मौका निकालि कए गाम चलि जाइ आ ओहीठाम खूब पढ़ाइ करी । न्यायालयसभमे जेना-तेना जोगार कए हाजिरी लगबा दैत छलिऐक । हाजिरीक अतिरिक्त तँ किछु होइतो नहि छल । मुदा एकाध बेर हम मोसकिलमे पड़ैत-पड़ैत बचलहुँ। हमरा तत्कालीन डीइटीक पीए मिसरजी बहुत मदति करथि । हुनकर डेरा आ हमर डेरा लगेपासमे छल । एहूसँ आपसमे तालमेल रहए । ओहुना ओ बहुत नीक लोक रहथि ।

डीइटी कार्यालय दरभंगा कैदराबादमे बस स्टैंडसँ सटले राजक मकानमे चलैत छल । साठि-सत्तरिगोटे ओहिठाम काज कए रहल छलाह । ओहि समयमे डीइटी छलाह -विस्वास जी । पतरे-छितरे मुदा तनल,बातक पक्का आ निर्णयमे सख्त । हुनकासँ ओहिठामक सभ कर्मचारी थर-थर कपैत छल । मुदा कर्मचारी युनियन बहुत मजगूत छल । एकदिन युनियनक नेतासभ हुनकर घेराव केलक । सुनैत छी किछु मारि सेहो लगलनि । दूरभाषक तार काटि देल गेल छल जाहिसँ पुलिस नहि आबि सकल । तकर थोड़बे

दिनक बाद हुनकर बदली भए गेलनि आ श्री एच.नारायण डीइटी अएलाह ।

ओहि समयमे डीइटीक पद बहुत पैघ मानल जाइत छल। कैक जिलामे ओकर साम्राज्य पसरल रहैत छल । आब तँ ओतेकटा क्षेत्र सीजेएमके सेहो नहि रहैत छनि । नारायण साहेब बहुत शांत प्रकृतिक व्यक्ति छलाह । ओना हमरा हुनका धरि जेबाक बहुत कमे काज होइत छल । बीचमे लेखा अधिकारी छलाह- श्री एस.पी चटर्जी । ओएह सभटा बात सोझरा देथि आ हमरा जे कहबाक होनि से कहि देथि । कुलमिला कए ई बहुत आरामक काज भेटि गेल छल । कार्यालयमे हमरा एकटा सहायक रहथि झाजी । ओ भोरे ताड़ी पीने कार्यालय अबैत छलाह । ताड़ीक गंध हमरा दिनभरि बरदास करए पड़ैत छल । ओही तावमे ओ चिठ्ठीसभ बनबैत रहैत छलाह आ कहि नहि करवन चुप-चाप कार्यालय छोड़ि चलि जाइत छलाह । कहक माने जे जँ दस-बारहटा चिठ्ठी बना देलाह तँ हुनकर काज समाप्त भए गेल । ओना ओ सज्जन व्यक्ति छलाह। हमरा कोनो तरहे बिदति नहि करथि ।

श्री एस.एन मिश्रजी कर्मचारी युनियनक नेता

ओहि समयमे श्री एस.एन मिश्रजी कर्मचारी युनियनक नेता रहथि । सुपौलसँ दरभंगा हमर बदली करबएमे हुनकर बहुत योगदान रहनि । डीइटी आफिसक आधिकांश कर्मचारी कोनो-ने-कोनो युनियनक गतिविधिसँ जुड़ल रहथि । हमर कोठरीसँ सटले पाँच-छओटा कर्मचारी बैसैत छलाह । दूरभाष बिलसँ संबंधित काज ओतए होइत छल । काज की होइत छल ओ गप्पक अरवाड़ा छल । दिन-राति कोनो-ने कोनो विषयपर चर्चा होइत रहैत छल । डीइटी कार्यालयमे कर्मचारी युनियन आ डीइटीक बीचमे निरंतर

शीतयुद्ध चलिते रहैत छल । ओ शीत युद्ध करवन सद्यःयुद्धमे बदलि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । कर्मचारी युनियन आ डीइटीक बीच संघर्षक एकटा प्रमुख विषय कर्मचारीसभक बीचमे काजक बटबारा लए कए होइत रहैत छल । ओना कहबाक लेल दूटा कर्मचारी युनियन छल मुदा मिसरजी बला युनियन बेसी प्रभावी छल । जँ कोनो बात युनियनक खिलाफ भेल कि आंदोलन शुरु भए जाइत छल । किछु सीट एहन छल जाहिपर कैकगोटेक बकोध्यान लागल रहैत छलनि । जेना कि टीए बिल पास करब,मेडिकल बिलक भूगतान करब । जँ एहन सीटपरसँ ककरो बदली कए देल गेल तँ ओ सीटपर बनल रहबाक हेतु आकाश-पताल एक कए दैत छलाह । एहन माहौलमे काज की होइत? दिन-राति अधखोइ-बदखोइ होइत रहैत छल ।

डीइटी कार्यालयक भीतरेमे दछिनबारि कात विभागीय कैंटीन छल । ओहिमे भरिदिन मेला लागल रहैत छल । कर्मचारीसभ अपन-अपन सीट छोड़िकए कार्यालयक राजनीति करैत रहैत छलाह,युनियनक नेतासभ डीइटीकेँ छकेबाक ब्योंत करैत रहैत छलाह । बीच-बीचमे फुर्ती आनबाक हेतु चाहो-पान करैत रहैत छलाह । एहन मौजक नौकरी तँ सभकेँ होउक । दरमाहा चाहे जे होइ,पद चाहे जेहन होइ मुदा डीइटी कार्यालयक कर्मचारीक मौज तँ कमालकेँ छल । करवनो काल सीटोपर बैसि जाथि आ कार्यालयक किछु काजो भए जाइक । मुदा ओ कोनो अनिवार्यता नहि छल । हम तँ बेसीकाल कार्यालयमे रहबे नहि करी। कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए प्रतियोगिता परीक्षासभक तैयारीमे लागल रही । तेँ डीइटी कार्यालयक उठापटकसँ बाँचल रही। एहि तरहे जून १९७५सँ जुलाई१९७७ धरि हम डीइटी

कार्यालय दरभंगामे काज केलहुँ । एही बीचमे हमर बिआह भेल,द्विरागमन भेल,एकटा बेटा भेल आ केन्द्रीय सचिवालय सेवा दिल्लीमे नौकरी सेहो लागि गेल ।

भास्करक जन्म

३१मई १९७७क दरमाहा भेटलाक बाद हम ट्रेन पकड़ि मुंगेर बिदा भेल रही । भोरे मुंगेर ससुरजीक डेरापर पहुँचतहि पता लागल जे काल्हि भोरे हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्करक जन्म भेलनि अछि । हुनकर जन्म मुंगेरक नवनिर्मित गोयनका अस्पतालमे भेल छलनि। हम चोट्टे ओहि अस्पतालक रुखि केलहुँ । अस्पताल नवमिर्मित हेबाक कारण चमकि रहल छल । चारूकात स्वच्छ वातावरण । लगबे नहि करैत जे अस्पतालमे चलि रहल छी ।

अस्पताल पहुँचलाक बाद हम सोझे निजी वार्डमे पहुँचलहुँ जतए हमर श्रीमतीजी भास्करक संगे छलीह । कहि नहि सकैत छी जे नवजात शीशुकेँ देखि हमरा कतेक प्रसन्नता भेल रहए । एक-दू दिनक बाद ओ सभ घर वापस आबि गेल रहथि । छठिहार हेबाक रहैक । मुदा हम ओहिठाम नहि रहलहुँ ,वापस दरभंगा चलि अएलहुँ । हमर ससुर नीकसँ छठिहारक भोज केलनि आ अस्पतालसँ लए कए छठिहार तकक सभटा खर्चा ओएह केलनि । ओहि समयमे हमर ससुरक पोस्टींग मुंगेरमे रहनि । भास्करक जन्मक मोसकिलसँ दू महिना बितल छल कि हम १ अगस्त १९७७क दिल्ली नव नौकरीक हेतु चलि गेल रही ।

हम ने रहब एहि ठाम

हम दरभंगामे नौकरी करैत छलहुँ । गाम लग छल । परिवारकेँ हमर आर्थिक सहयोगक बहुत जरूरति रहैक। जँ हम दिल्ली नौकरी करए चलि जाएब तँ से संभव नहि भए सकत । दिल्लीमे खर्चा बढ़ि जाएत । ताहि बातसँ बाबूकेँ सेहो बहुत चिंतित देखिअनि। ओ गाहे-बगाहे कहबो केलाह जे हम दिल्ली नहि जाइ। मुदा हमरा दूरभाषक नौकरी करबाक इच्छा नहि छल । कारण हम ई नौकरी घोर अनिच्छापूर्वक कए लेने रही । तेँ मौका भेटितहि एकरा छोड़ि देबए चाही । हमरा आब लगैत अछि जे हम जँ दूरभाषक नौकरीमे रहि गेल रहितहुँ तँ संभवतः बाबूकेँ उसास होइतनि,साइत कम कष्ट होइतनि। मुदा की होइतनि से के कहलक अछि? ओतबे बएसमे हमर बिआहो भए गेल छल,संतान सेहो भए गेल छल,तखन ओतनी दरमाहा मे की खइतहुँ आ की पकबितहुँ? जे-से। हम दिल्ली जेबाक निर्णय केलहुँ । तकर पाछा हमर आइएएस बनबाक महत्वाकांक्षा सेहो कतहु काज कए रहल छल जे सफल नहि भए सकल ।

मनुक्खक महत्वाकांक्षा ओकरा जे ने कराबए । हम शुरुसँ पचीस वर्षधरि गाम वा लगपासेमे रहलहुँ । मुदा समय-साल एहन भए गेल जे तकर बाद इलाहाबाद आ दिल्लीमे रहि गेलहुँ । दिल्ली जाइ कि नहि जाइ से दुबिधा हमरा बहुत दिनधरि बनल रहल । अपना हिसाबे जे केओ बुधिगर लोक भेटथि तिनकासँ हम बिचार लेबामे नहि चुकी । मुदा लोकसभकेँ हमर व्यक्तिगत स्थिति आ परिस्थितिक कोन जानकारी रहैक? लोक अपना हिसाबे सुझाओ

दए देथि । मोटामोटी सभक इएह कहब जे दिल्लीमे अपनो आ नेनोसभकेँ भविष्य बनेबाक बेहतर परिवेश भेटत । तेँ दिल्लीबला नौकरी पकड़ि लिअ । मुदा हमर पारिवारिक परिस्थिति ककरो थोड़े बूझल रहैक ?

आखिर हम दरभंगामे दूरभाष निरीक्षकक नौकरी छोड़ि दिल्लीक केन्द्रीय सचिवालय सेवाक नौकरी करबाक निर्णय केलहुँ। बाबू बहुत चिंतित भेल रहथि । हमरा छोड़ि कए परिवारमे केओ एहि निर्णयक पक्षमे नहि रहथि । दरभंगा डीइटीकार्यालयमे हमरा विदाइ देल गेल । ओहिमे पचाससँ बेसिए गोटे सामिल भेल रहथि । कैकगोटे हमरा प्रशंसा करैत विदाइ भाषण केलाह । हमहु अंग्रेजीमे जबाबी भाषण देने रही । ३१ जुलाइ १९७७क हम दरभंगासँ सेवामुक्त भए दिल्लीक हेतु प्रस्थान केलहुँ ।

दिल्लीक नौकरी:

दिल्ली जेबाक निर्णय भए गेल छल । ओहि समय हमर बएस पचीस साल छल । हम दूरभाष विभागमे प्रशिक्षणक अवधि मिला कए चारि वर्ष नौकरी कए लेने रही । बहुत प्रयाससँ दरभंगामे पदस्थापना सेहो भए गेल रहए । गाम लगमे रहबाक कारण बेसीकाल ओतहि रहैत छलहुँ । माए-बाबूसँ भेंट होइत रहैत छल,हुनका लोकनिक आशीर्वाद लेबाक अवसर आसानीसँ भेटैत रहैत छल । दिल्लीबला नौकरी केलासँ तत्काल दरमाहामे बेसीक अंतर नहि होबए जा रहल छल । तखन हम दिल्ली किएक चलि गेलहुँ? ई सबाल अखनो हमरा मोनकेँ भारी केने रहैत अछि। अंततोगत्वा, इएह बुझाइत अछि जे भावी प्रवल होइत छैक । जे हेबाक रहैत छैक तेहने वुद्धि भए जाइत छैक । दिल्लीक केन्द्रीय सचिवालयक नौकरी हम अपन जीदक कारण पकड़ि तँ लेलहुँ मुदा

हमरा मोनमे चैन नहि छल । सदिखन गाम पर रहैत माए-बाबू आ भाइ लोकनिक चिंता होइत रहैत छल। कहाँ अड़ेर गाम आ कहाँ दिल्ली? संपूर्ण परिबेश बदलि गेल छल । कैकबेर कार्यालयमे काज करैत काल कना जाइत छल । फाइल नोरसँ भिजि जाइत छल । केओ एहन परिचितो नहि रहए जकरा मोनक बात कहितिऐक , किछु समाधान तकितहुँ । दस-बारह दिन तँ मुँहसँ आबाज नहि बहराएल । कार्यालय जाइ आ आबी । केओ काज सिखओनिहारो नहि छल । लगपासक कर्मचारीसभकेँ किछु पुछितिऐक तँ टरका दैत । अधिकारी सभ अपनेमे बेहाल रहथि । आब तँ हमरा लागए जे बेकारे दिल्ली अएलहुँ । बाबूक बात मानि लेबाक चाहैत छल । स्वर्गीय विनय शेखरी पहिल व्यक्ति छलाह जे हमरा आश्वस्त केलाह। किछु काजक जानकारी देलनि । प्रशासन अनुभागेमे हमर पदस्थापना करबा देलनि । जाइते देरी चाह पिओलथि । कुलमिला कए ओ एकटा देवदूत बनि हाजिर भए गेलाह जाहि सँ हम कार्यालयमे बहुत सहजता महसूस करए लगलहुँ।

हमरा आब बुझाइत अछि जे घरक परिस्थिति एतेक डमाडोल छल तखन ओतेक जल्दी बिआह नहि करबाक छल । दोसर, जखन दरभंगामे नौकरी रहए तखन दिल्ली नहि आबक चाहैत छल । ई दुनूबात जँ हम केने रहितहुँ तँ हमरा व्यक्तिगत जे होइत से होइत मुदा गाम पर रहैत शेष परिवारकेँ जरूर मदति भए सकितैक ।

ओना तँ जे हेबाक सएह होइत छैक । मनुक्खक जीवन प्रारब्धक अधीन होइत अछि । ककरा केमहर जेबाक छैक,की करबाक छैक ,सभकिछु पहिनेसँ तय अछि । हम-अहाँ तँ निमित्त मात्र छी । तखन भगवान सभकेँ अपन-अपन माथा देने छथिन ।

सभकेँ सोचबाक,स्वतंत्र निर्णय लेबाक मानसिक शक्ति देने छथिन। जे परिस्थिति आबि गेल अछि ताहिमे बढ़िआँ सँ बढ़िआँ करबाक प्रयत्न तँ करबेक चाही । कैकबेर नीको काजक परिणाम अनुकूल नहि बुझाइत रहैत छैक । मुदा ई तँ जीवन छैक,कोनो मसीन नहि, जे जेना चला देबैक,चलैत रहतैक ।

हम सोचने रही जे दिल्ली जाएब,ओहिठाम प्रतियोगिता परीक्षासभक तैयारी करबामे सुबिधा रहत,बड़का हाकिम भए जाएब आ तकर बाद पूरा परिवारकेँ नीकसँ सेवा करब । सभकेँ मदति कए सकब । मुदा हमर स्वप्न त्रिशंकु जकाँ बीचेमे लटकल रहि गेल । हम प्रतियोगिता परीक्षासभ देलहुँ जरूर मुदा परिणाम अनुकूल नहि भेल ।

हम तरह-तरहक परीक्षा दैत रहलहुँ । मुदा परिणाम ढाकक तीन पात । हम दिल्ली गेलाक बादो ओही नौकरीमे रहि गेलहुँ । बेसक हमरा ओहूमे प्रोन्नति भेल मुदा सचिवालय सेवामे कोनो सुविधा नहि रहैक । ककरो मदति करबाक कोनो संभावना नहि रहैक । बस जीबैत चलि जाउ । एतेक काज तँ दूरभाष निरीक्षकक काज करितहुँ भए जाइत । साइत बेसी नीकसँ होइत । कारण गाम-घर लगमे रहलासँ ओहिठामक परिस्थितिक बेसी बढ़िआँ समाधान भए सकैत । ई बात आब बुझाइत अछि,मुदा होइत की से तँ भगवाने जानथि ।

सन् १९७३क अगस्तमे हम जखन नौकरी पकड़लहुँ तँ हमर बएस एक्कैस साल मात्र छल । लगभग चारिसालक बाद अगस्त १९७७मे दिल्लीक नौकरी करबाक जोग बनल । ओहि समय सन् १९७५मे हमर बिआह भए गेल छल । तकर सालक बाद मई १९७७मे हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्करक जन्म भए गेल रहनि । हमरासँ

तीनटा छोट भाइ ,माए आ बाबू गामपर बहुत खास्ता हालमे रहथि। गरीब-धनिक दुनिआमे बहुत होइत अछि । मुदा हमर भाइ लोकनिक व्यक्तित्वक समस्याक कारण समस्या आओर बिकट भए गेल छल । हमरा घरमे गरीबीक विष्फोट अचानक भेल रहए। घरमे हमरा लोकनिकेँ बाबू किछु बूझए नहि देथि जे की भए रहल अछि? संभवतः हुनकर प्रयास रहनि जे सभभाइ नीकसँ पढ़ि लेताह तँ परिस्थिति सम्हरि जाएत । ताहि हेतु ओ बहुत प्रयासो करथि । कालान्तरमे दू भाइ सरकारी नौकरीमे चलि गेलाह । अस्तु, हमरा दिल्ली जेबा काल पारिवारिक परिस्थिति बहुत जटिल छल । ताहि परिस्थितिमे हमरा दिल्ली जेबाक निर्णय निश्चय बहुत साहसपूर्ण छल ।

प्रसंगवश हमरसभक उपप्रधानाचार्य आ वर्ग शिक्षक स्वर्गीय कृष्ण कुमार बाबूक बात मोन पड़ैत अछि । ओ कहथि-"जवानीक कष्ट नीक । बुढ़ापाक कष्ट बहुत दुखदायी होइत अछि ।"

हुनकर कहबाक माने जे शुरुएमे जे संघर्ष करबाक अछि से कए लिअ जाहिसँ आगूक जीवन सुखद होअए । हमरा हुनकर ई बात बहुत नीक लागल रहए । ओ इहो कहलाह जे अंग्रेजी नीकसँ सीख लिअ । अंग्रेजी नहि सिखब माने अपना आपकेँ प्रतियोगिता परीक्षासभ सँ हटा लेब । हुनकर बातकेँ गिरह बान्हि हम प्रयास कए अंग्रेजीमे सिद्धहस्त भेलहुँ । तकरे फएदा भेल जे भरि जिनगी दिल्लीमे अंग्रेजीमे काज केलहुँ,पैघसँ पैघ अधिकारीक संगे अंग्रेजीमे झुरझार वार्तालाप करैत रहलहुँ । हमर गणित विषयक संगे अंग्रेजीक जानकारीसँ संघ लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित परीक्षामे सफलता भेटल आ केन्द्रीय सचिवालय सेवा,दिल्लीमे नौकरी भेल ।

दिल्ली चलि गेलाक बाद क्रमशः गाम-घरसँ संपर्क कम होइत गेल । यद्यपि माएकेँ गामे रहलासँ हमरा सालमे एकाधबेर अनिवार्यतः गाम जाए पड़ल मुदा ततबे । ओहिठाम तेहन-तेहन घटनासभ होइत रहल जे गाममे एकहु दिन रहनाइ कठिन होइत गेल । जाबे रही ताधरि हनुमान चलीसा पढ़ैत रही । गाम पहुँचतहि नूनसँ हरदि धरिक जोगार करी । तखन जा कए एकाध दिन समय बितए । एहन असुबिधाजनक परिस्थितिमे धीया-पुता कोना जाइत,कोना रहैत? से ओ सभ साइते कहिओ ओतए जा सकल ।

ओ दिन छल ३ अगस्त १९७७ जखन हम दिल्लीक नार्थ ब्लाकमे गृह मंत्रालयमे पदभार ग्रहण करबाक हेतु पहुँचल रही । ओहिदिन वर्षा भए रहल छलैक । कहुना कए भिजैत-तितैत हम ओतए पहुँचल रही । कहि नहि सकैत छी जे हमरा ओ कार्यालय कतेक भयावह लागल छल । चारूकात तीन महला विशाल भवन अछि नार्थ ब्लाक । ओहिमे कोनो नव आदमीकेँ भुतिआ जाएब स्वभाविक छल । मुदा हम जेना-तेना प्रशासन विभागक एडीवन(ब) अनुभागमे पहुँचि गेलहुँ । ओतए सभसँ पहिने हमरा भेटलाह स्वर्गीय विनय शेखरी ।

कमीशन अनुभाग

केन्द्रीय सचिवालयमे सहायकक नौकरी शुरु करबासँ पूर्व कोनो प्रशिक्षण नहि देल गेल । सोझे काज दए देल गेल । हमरा बगलमे बैसथि -श्री एम.के मलहोत्राजी । हुनका हम किछु-किछु पुछिअनि । मुदा ओ किछु सहयोग नहि करथि । अनुभाग अधिकारी छलाह पार्थसारथी । माथपर ठढ़का चानन केने हाफ सर्ट पहिरने ओ बेसी काल अवर सचिवक कोठरी जाइत-अबैत रहैत छलाह । टेबुलपर फाइलक करमान लागल छल । जँ कोनो

जरूरी फाइल रहितए तँ ओकरा बहुत मोसकिलसँ ओहि ढेरीमेसँ ताकल जाइत । जँ फाइल भेटि जाइत तँ ओकरा लेने उल्टे पैरे ओ अवर सचिवक कोठरीमे चलि जइतथि । मास दिन बाद हमर बदली ओहिठामसँ कमीशन अनुभागमे भए गेल। नार्थ ब्लाकक दुमंजिलापर उतरबरिआ कोनपर कमीशन सेक्सन छल । ओकर अनुभाग अधिकारी बिहार(राँची)क खोखा साहेब रहथि । हुनका बगलमे दोसर अनुभाग अधिकारी केरलक बालस्ला छलि । कमीशन अनुभाग तत्कालीन जनता पार्टीक सरकार द्वारा इन्दिरा गांधीजीक आपातकालक समयमे कएल गेल ज्यादितीक जाँच-पड़ताल कए रहल आयोगसभक सहायता करबाक हेतु बनाओल गेल छल । श्री आर.के बदेरा,आइ.पी.एस हमरसभक निदेशक छलाह ।

श्रीमती बालस्ला देखएमे बहुत रमनगर आ व्यवहारमे मधुर छलीह। यद्यपि ओ हमर अधिकारी नहि रहथि तथापि एकहि कोठरीमे बैसबाक कारण हमसभ हुनको आदर करिअनि । ओहो हमरासभक ध्यान राखथि । एकदिन साँझमे काज समाप्त केलाक बाद कार्यालयसँ निकलबाक पहिने हम कहलिअनि- “गुड नाइट सर!”

ओ हँसि देलथि आ कहैत छथि-

“से गुड नाइट मैडम ।”

कोठरीमे जोरसँ ठहाका भेल आ हमसभ अपन-अपन घर वापस बिदा भेलहुँ ।

ओहि समय केन्द्रमे जनता पार्टीक सरकार बनल रहए । सरकार बनिते स्वर्गीय इन्दिरा गांधीक खिलाफ तरह-तरहक

आयोग बना देल गेल । कैकटा नामी जजसभ ओहि आयोगसभक अध्यक्ष बनाओल गेलाह -जेना मारुति कमीशन आफ इनक्वायरी,शाह कमीशन आफ इनक्वायरी आदि,आदि । ककरो किछु काज छल तँ ककरो किछु । मुदा सभक उद्येश्य एकहि छल-स्वर्गीय इन्दिरा गांधीकेँ पस्त केनाइ । ओही आयोगसभक काजक समन्वय करबाक हेतु हमरसभक कमीशन अनुभाग गृह मंत्रालयमे बनाओल गेल छल । ओ अनुभाग तरह-तरहक फाइलसभसँ भरल रहैत छल । हमसभ भोरसँ साँझ धरि ओहि काजमे लागल रही । तथापि बानरक नाङरि जकाँ काज सोझ हेबे नहि करए । जतेक काज करी ताहिसँ कैक गुना बेसी काज आबि जाए । मुदा ओहिठामक माहौल नीक रहए । ककरो केओ टांग घिचबाक प्रयास नहि करए । सभ अपन काजमे लागल रहए । बेर -कुबेर लोक एक-दोसरकेँ मदतिओ करए । बहुत उच्च अधिकारी धरि हमरासभकेँ जेबाक काज नहि होइत छल । बहुत तँ निदेशक महोदय बजबितथि । एहि तरहें ओहिठाम समय खटाखट बितए लागल । करवन भोर होइक आ करवन साँझ भए जाइक से पते नहि चलैत।

नार्थ ब्लाकसँ घर जेबाक हेतु नार्थ ब्लाकसँ सटले बस लागल रहैत छल । किछु बससभ आगू गुरुद्वारा रकाबगंज लगसँ चलैत छल आ किछु बस उतरबारि कात चर्चक सामनेसँ । ओहि समयमे हम मोतीनगरमे रहैत रही । ओहिठामक बस ८० नंबर छल जे चर्चक सामने बनल बस स्टैंडसँ चलैत छल । सभ बसक ठहरबाक स्थान तय छल । जे बस पकड़बाक होअए ओतहि जा कए पाँतिमे ठाढ़ भए जाउ । बस आएत । बस चालक ओतहि टिकट देत आ बेरा-बेरी बसमे पैसि जाउ । जे सभसँ पहिने बसमे पैसत से सभसँ अगिला सीटपर बैसत । किछुए कालमे सभटा सीट भरि जाइत

छल । तकरबाद लोकसभ ठाढ़े जाइत । जाधरि बस ठसा-ठस नहि भरि जाएत ताधरि धरि लोक बसमे जाइत रहैत । बस भरि गेलाक बाद ओ बस खुजि जाइत आ बाँचल लोक अगिला बसक प्रतीक्षा करितथि । ओहि समयमे बस दिल्लीमे आवागमनक प्रमुख साधन रहैक । मेट्रो रेल तँ बहुत बादमे बनल । ओहिसँ पहिने निजी बससभ सेहो चलए लागल जाहिसँ बसक संख्यामे इजाफा जरूर भेल मुदा बससभक भीड़ ओहिनाक -ओहिना रहि गेल । निजी बसबलासभ बेसीसँ -बेसी टाका कमेबाक चक्करमे यात्रीसभकेँ बसमे ठुसि दैत छल । ठसाठस भरल बसमे ककर जेबी कटि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । कैकबेर भयानक दुर्घटना सेहो भेल । बादमे सरकार निजी बससभपर चाबुक चलओलक । तथापि स्थितिमे कोनो गुणात्मक परिवर्तन भेल हो से बात नहि छल ।

इलाहाबादमे फसाद

दिल्लीसँ इलाहाबाद(आब प्रयागराज) बदली

कमीशन अनुभागमे हम तीन-चारि मास मात्र रहल होएब कि हमर बदली नव निर्मित कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबाद(आब प्रयागराज)मे भए गेल । एहि हेतु हम स्वयं चेष्टा केने रही । हमरा दिल्लीमे रहैत बहुत असुरक्षा लगैत छल । आर्थिक शक्ति सीमित छल आ पारिवारिक बोझ बहुत भरिगर । ओना इलाहाबाद गेलासँ एहिमे कोनो बहुत मदति भेल से बात नहि । ओतहु मकान किराया कम नहि छल । मुदा एकटा आराम भेल । कार्यालय आ डेराक दूरी बहुत कम रहलासँ आवागमनक खर्चा आ समय दुनू बँचए ।

९ जनवरी १९७८क हम सपरिवार इलाहाबाद पहुँचि गेलहुँ। ओहीदिन डाक्टर जयकान्त मिश्रजीक सहयोगसँ एकटा डेरा किरायापर भेटि गेल । गामसँ हमर छोट भाइ सुरेन्द्रजी सेहो मदति करए आएल रहथि । एहि तरहें एकाध दिनमे हम इलाहाबादमे व्यवस्थित भए गेलहुँ । मुदा हमर पहिल डेरा दरिआगंजमे छल जे स्टेनली रोडपर स्थित कार्यालयसँ बहुत फटकी रहए । एकमासमे हम ओहि डेराकेँ बदलि कए १७,नयाममफोरगंज चलि अएलहुँ ।

इलाहाबाद जेबाक प्रमुख कारण

इलाहाबाद जेबाक एकटा प्रमुख कारण छल जे हमरा ओ धार्मिक स्थान बुझाएल छल । मुदा ई कहब जे ओहिठाम सभ गोटे तेहने रहथि से कतहु भलैक अछि? ओतहु तरह-तरहक लोक रहथि

आ तकर सभसँ पैघ उदाहरण हमरसभक कार्यालय,कर्मचारी चयन आयोग रहए ।

बितलाहा बातपर घमरथन केलासँ किछु लाभ होबए बला नहि अछि । जे समय बीति गेल,से गेल । आब ओहिपर विचार-विमर्शक की औचत्य? मुदा मनुक्खक स्वभाव थिक जे ओकर मोन आगू-पाछू करैत रहैत अछि । ई करितहुँ तँ ओ करितहुँ । एमहर जाउ की ओमहर जाउ । मुदा एकटा बात बुझाइत अछि जे हमर-अहाँक जीवन अपूर्णतासँ भरल अछि । कखनहुँ जे बहुत सही लगैत अछि सएह कालक्रमे व्यर्थ भए जाइत अछि । तकर हम-अहाँ की कए सकैत छी? जँ एतेक सोच-विचार करैत रहब,एतेक फुकि-फुकि कए पैर राखब तँ कखनहु चलबे नहि करब । जएह चलतैक,सएह खसबो करतैक । जे गलती करतैक,सएह सहीओ करतैक । तेँ प्रयास जरूरी अछि ।

हम सोचलिऐक जे दिल्ली जाएब तँ ततेक आगू बढ़ि जाएब जे शेष समस्यासभक स्वतः बहुत आसानीसँ समाधान भए जाएत । परिवारमे मूल समस्या आर्थिक रहैक । जँ हमरा बढ़िआँ नौकरी भेटि जाइत तँ से होइत । मुदा से प्रयासक बादो नहि भए सकल । हम सचिवालयक पैघ-पैघ देबालमे घेराएल रहि गेलहुँ । ओतएसँ इलाहावाद भगलहुँ तँ ओतहु फसादे-फसाद । गाम लग दरभंगामे तँ हम रहबे करी । तखन ओतेक फटकी दिल्ली चलि गेलहुँ । जखन ओहिठाम परता नहि बुझाएल तँ इलाहाबाद भगलहुँ। मुदा ओहिसभसँ हमर स्थितिमे कोनो बेसीक फर्क नहि भेल । दरमाहा ओतबे, आश्रितो ओतबे तँ बात कथीसँ बदलि जाइत ?

हम जनवरी १९७८ सँ मार्च १९८७ धरि इलाहाबादमे कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालयमे काज केलहुँ । एहि दौरान

कैकटा अधिकारी अएलाह-गेलाह,कैकटा कर्मचारी सेहो आएलथि-गेलथि । मुदा हम ओतहि रहि गेलहुँ। बादोमे हम ओतहि रहए चाही । तकर कारण छल जे हमरा ओहिठाम एकटा नीक सामाजिक परिवेश बनि गेल रहए। मैथिल लोकनिक अतिरिक्त आओरो लोकसभसँ सामाजिक संपर्क मधुर भए गेल रहए । अप्रैल १९८५मे जखन हमर छोट पुत्र क्षितिजक जन्म भेलनि तँ कमला नेहरु अस्पतालमे हुनका देखबाक हेतु लोकक पांति लागि गेल छल। ई छल इलाहाबादक विशेषता ।

इलाहाबादक अपन किछु विशेषता थिक जकरा बिसरल नहि जा सकैत अछि । ओहिठाम मैथिल बहुत छथि । मैथिल लोकनिक आपसी भेंट-घांट सेहो होइते रहैत छनि । सर गंगा नाथ झा इन्सटीच्युटमे मैथिल भरल छथि । हुनकासभसँ भेंट भेलाक बाद लागैत जेना अपन गाम-घर आबि गेल छी । सभसँ प्रमुख बात जे जयकान्त बाबू आ हुनकर परिवार ओतए रहथि । जेना पहिनेसँ कोनो मैथिलक स्वागत हेतु रस्तापर ठाढ़ होथि । आओर कोनो परिचयक काज नहि ,बस मैथिल हेबाक चाही ।

किरायाक मकान

दरभंगाक नौकरी छोड़ि कतेक सोच-विचार कए हम दिल्लीक नौकरी धेलहुँ । मुदा छओ मासक भीतरे दिल्लीसँ इलाहाबाद चलि गेलहुँ । संभवतः ई निर्णय बड़का गलती छल । जखन सौंसे जिनगी दिल्लीएमे नौकरी करबाक छल तँ बीचमे सोंगर लगाबक कोन काज? लगातार दिल्लीमे रहलासँ ओतए बेसी नीकसँ व्यवस्थित भए सकितहुँ । मुदा हमरा मोनमे ई बात छल जे दिल्लीसँ इलाहाबाद गामक लग होएत,ओहिठाम खर्चा कम होएत आ गामपर बेसी टाका पठा सकब । ओहिसभमेसँ किछु नहि भेल ।

इलाहाबादक १९८७सँ १९८७धरिक हमर प्रवासक दौरान हम चारिटा किरायाक मकानमे रहलहुँ । दरियागंजक पहिल मकानमे तँ मासे दिन रहलहुँ । तेँ ओकर बहुत किछु स्मृतिशेष नहि रहि सकल । बस एतबे जे ओ हमर स्टेनली रोड स्थित कार्यालयसँ बहुत दूर छल । अबैत-जाइत बहुत समय लागि जाइत छल । खर्चा तँ होइते छल। तेँ ओकरा फटाफट बदलि लेलहुँ । मुदा शेष तीनू मकानमे तँ बहुत-बहुत दिन रहलहुँ ।

किरायेदार चाहे कोनो मकानमे चलि जाए,मकान मालिक आ किरायेदारक समस्या सामान्यतः एकहि रंग रहि जाइत अछि । मकान मालिककेँ मासे-मास समयपर किराया चाहबे करी,बिजली-पानिक खर्चा चाहबे करी । जखन ओकर इच्छा होइक मकान खाली हेबेक चाही । हम नियमसँ दरमाहा भेटिते मकानक किराया दए दैत छलहुँ । तेँ जाहि मकानमे गेलहुँ ,बहुत-बहुत दिन धरि रहि सकलहुँ। हमरा मकान खाली करएमे मूल दिक्कत टाकाक अभाव रहैत छल । नव मकानमे जाएब तँ सभसँ पहिने किराया अग्रिम देबाक होइत । किछु आओर खर्च सेहो हेबे करत । तेँ अपना भरि टारैत रहिऐक । मुदा जे अपना वशमे नहि रहैक तकर की कएल जा सकैत छल? समय-समयपर मकान बदलहि पड़ैत छल ।

१७, नयाममफोरगंज

दिल्लीसँ इलाहाबाद जेबाक एकटा प्रमुख कारण हमर ई सोचब छल जे इलाहाबादमे कम खर्चा होएत । मुदा ई सोचब व्यर्थ छल । मकानक किराया दिल्लीमे १६० रुपया छल तँ इलाहाबादमे १६५ रुपया भए गेल । १७ नयाममफोरगंजमे हम चारि साल एही किरायापर रहल रही । बीच-बीचमे किराया बढ़बे कएल,कम हेबाक सबाले नहि छल । सभक ध्यान सभ दिस मुदा मकान

मालिकक ध्यान किराया दिस रहैत छल । एकबेर हम सीढ़ीमे बिजलीक बल्ब लगा देलिऐक । हमरा भेल जे हुनका ऊपर चढ़बा-उतरबामे मदति हेतनि । हमरोसभकेँ आराम रहत । हम बहुत प्रसन्नतासँ ई बात हुनका कहबो केलिअनि । औ बाबू! ओ तुरंते कहैत छथि-"अगिलामाससँ बिजलीक पैसा बढ़ा कए देब ।" हम चुप्पे रहि गेलहुँ ।

१७ नयाममफोरगंजक मालकिनी स्वतंत्रता सेनानी छलीह । मकानमे सुबिधा नामक इएह छल जे दूटा कोठरी आ आगूमे ओसारा जकाँ खाली जगह । भनसा घर सटले मुदा तेहनाहे सन । शौचालयक वर्णन की करू । ओहिमे गेलाक बाद पूरा कोशिश करी जे नीचा नहि देखी । जहि दिन से भए जाए तँ मोनक की गति होइत छल से नहि लिखल जा सकैत अछि । तखनो ओकरा केओ माथपर उठाकए लए जाइत तखन तँ ओ साफ होइत । ऊपर एस्वेस्टस देल,नीचा ईंटासँ घेरल । वर्षा भेल तँ भिजिते बैसू । स्नानक हेतु कनीकटा जगहमे पानिक पाइप रहैक , बेपर्द । कहुना कए जोगार कएल रहैक । तथापि हम ओतए प्रसन्न रही आ ओकरा छोड़ए नहि चाही । मकान मालकिनी तीन वर्षधरि तँ किछु नहि कहलथि मुदा तकर बाद ततेक तंग केलथि जे मकान छोड़हि पड़ल । हुनका होनि जे हम हुनकर मकानकेँ कब्जिआ लेबनि ।

स्वर्गीय वल्लभशरणजीक मकान

सन् १९८२मे १७ नयाममफोढ़गंज छोड़ि कए जखन हम स्वर्गीय वल्लभशरणजीक मकानमे अएलहुँ तखन जरूर किरायामे किछु आफियत भेल । मासिक १६५ रुपयासँ किराया घटि कए १२५ टाका भए गेल ,से ततेक उसास बुझाए जे कहि नहि सकैत छी । लगभग दूसाल हमसभ ओहि मकानमे रहलहुँ । मकान की

छल ओ एकटा छोटसन कोठरी छल । ओकरे भीतरेमे शौचालय छल । हमरा ताहि बातसँ बहुत घीन होइत छल । कोठरीक सामने कनीकटा जगह छल जतए भानस कएल जाइत छल । ओ जगह ततेक संकीर्ण छल जे एकबेर तँ स्टोभसँ हमर श्रीमतीजीक नुआमे आगि लागि गेलनि । बहुत मोसकिलसँ आगि बुझाओल गेल आ ओ बँचि गेलथि । संभवतः ओही घटनाक बाद हम ओ मकान बदलि लेलहुँ। तकर बादे सन् १९८४मे हम ६ नया कटराक मकानमे गेलहुँ ।

स्वर्गीय वल्लभशरणजी पुरातत्व विभागक वरिष्ठ पदसँ सेवानिवृत भेल छलाह । हुनकर एकटा पुत्री डाक्टर शशिवाला श्रीवास्तव कमला नेहरु अस्पताल इलाहाबादक प्रसिद्ध डाक्टर छलीह । एकटा पुत्र डाक्टरी पढ़ि रहल छलनि । ओही समयमे ओ बहुत जोर दुखित पड़ि गेल रहथि । बहुत मोसकिलसँ ओ ठीक भेलाह आ प्रायः सालभरिक बाद फेरसँ डाक्टरीक पढ़ाइ शुरु केलनि। बल्लभशरणजी बहुत सहनशील रहथि । ई बात हम एहि लेल कहि रहल छी जे अनचोकेमे हम हुनकर कैकबेर बहुत बिदति कए दिअनि । मुदा ओ रहथि जे किछु नहि बाजथि । चुपचाप सहि जाथि । हम गाम जकाँ करचीसँ दतमनि करी आ दतमनि करैत काल सभकिछु हुनकर आङनमे खसा दिअनि । होइक ई अनचोके। कारण हमर कोठरीसभसँ ऊपर छल । कोठरी जतेकटा छल तकर कैकगुणा बेसी ओकर सामने खाली छत छल । हमसभ ओहि छतक ऊपरे बेसी काल रहबो करी,बैसी-उठी आ पानिओ खसा दिऐक,करवनोक किछु-किछु आओरो बिदति कए दिऐक । एहिसभक बाबजूद हम हुनका पसिंद रहिअनि । से एहिबातसँ बुझाइत अछि जे ओहि मकानकेँ खाली कए देलाक बहुत दिनक

बाद हुनकर बीचबला फ्लैट जखन खाली भेलनि(संभवतः दिसम्बर १९८५मे) तँ ओ हमर कार्यालय जा कए हमरासँ भेंट केलाह आ कहलाह जे हम ओहिमे चाही तँ आबि जाइ । कहिओ हम ताहि तरहक चर्चा केने रहिऐक । हमरा ओ फ्लैट पसिंद रहए । मुदा ओ खाली जाबे भेलैक ताधरि हमर दिल्ली बदली हेबाक समय आबि गेल छल । से बात जखन हम हुनका कहलिअनि तँ ओ उदास भए गेल रहथि ।

६ नयाकटरा, इलाहाबाद

६ नयाकटरा इलाहाबादक मकानक मालिक धोबी छलाह। ओ मकान एकटा तंग गलीमे छल । मकान मालिकक परिवार भूतलपर रहैत छल । ऊपरका तलपर हमसभ रहैत छलहुँ । छत सेहो हमहीसभ उपयोगमे आनी । मकानक एक कोठरी दोसर कोठरीसँ जुड़ल छल । डाक्टर सुभद्र झा कहथि जे तोहर मकान केराक पात जकाँ एक-दोसरसँ जोड़ल अछि । मकानक बनाबट बहुत विचित्र रहैक । लगैक जे जेना-तेना मिस्त्री ओकरा जोड़ैत चलि गेल छल । मुदा रहैक ओ सुखकर -ऐल-फैल ,हबादार ।

मकानक लगपासमे एकाधटा नीक परिवारसभ रहैत छलाह। हुनकासभकेँ स्वेत-श्याम टीभी रहनि । हमसभ कहिओ -काल कोनो विशेष कार्यक्र भेलापर हुनके ओतए टीभी देखए चलि जाइत रही । चंद्रमापर पहिल भारतीय रूसक सैटेलाइटसँ गेल रहथि तँ तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इन्दिरा गांधीजी हुनकासँ दूरभाष पर गप्प केने रहथि । ओहि दृश्यकेँ सद्यः दूरदर्शनपर प्रसारित कएल गेल छल । हमसभ श्रीवास्तवजी(पड़ोसी)क ओहिठाम से देखने रही । हमरा लगमे अपन टीभी नहि छल । बादमे दिल्ली वापस गेलाक बाद सन्न १९८७मे हम स्वेत-श्याम टीभी

किनने रही। ओ मकान हमरा लेल बहुत शुभ रहल । हमर छोटपुत्र क्षितिजक जन्म ओतहि भेलनि । हमरा प्रोन्नति सेहो ओतहि रहैत भेल रहए ।

ओतए तँ मकान मालकिनी छलीह नब्बे वर्षक बुढ़ी। अपना परिवारमे ओएह सभसँ वुद्धिमान रहथि आ सभ हुनका आदरो करनि । हुनकर बेटासभ धोबीक काज करथि । मुदा माएक बहुत आज्ञाकारी रहथि । इलाहावादक प्रसिद्ध गणितज्ञ स्वर्गीय गणेश प्रसादजीक ओहिठाम ओ काज करैत छलीह आ ओएह हुनका ओ मकान बना देने रहथिन । लगभग चारि वर्षक बाद दिल्ली बदलीक बाद जखन हम ओ मकान छोड़लहुँ तँ मकान मालकिन तँ मरि गेल रहथि,हुनकर बेटा आ परिवारक आन लोकसभ बहुत दुखी भेल रहथि। मुदा हमरा तँ जेबाके रहए,से चलि गेलहुँ ।

कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबाद

कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादक स्थापना करबाक हेतु हमसभ पठाओल गेल रही । सोचल जा सकैत अछि जे एहन ठाम कतेक काज करबाक छल । नूनसँ लए कए हरदि धरिक जोगार करबाक छल ,ओहो बहुत सीमित साधनसँ । ततबे नहि । किछुए मासक बाद होबलबला परीक्षाक सूचना सेहो निकलि गेल छल । नित्य बोराक-बोरा दर्खास्त डाकिआ अनैत छल । ओकरासभकेँ रखबाक हेतु कोनो व्यवस्था नहि छल । एहिना एकटा कोठरीमे ढेरिआ देल जाइत छल । देखिते-देखिते कोठरी लिफाफासँ भरि गेल । फेर दोसर कोठरी खाली कराओल गेल । एहि तरहेँ तीनटा कोठरी लिफाफासभसँ भरि गेल । तकर बाद जे कोठरीसभ बाँचल ताहिमे पटिआ ओछा कए हमसभ चार-पाँचगोटे बैसी । अनुभाग अधिकारी श्री सतीश चंद्र श्रीवास्तवजी बजार जाथि आ जरूरी

समानसभ किनने आबथि । मुदा ओहो अपना दिससँ कतेक टाका लगबितथि ? सरकारी बैंकक खाता चालू नहि भेल छल । क्रमशः से भेल । खाता-बहीसभ किनल गेल । टेबुल-कुर्सी किनल गेल । किछु नैमित्तिक कर्मचारी राखल गेल । तखन जेना-तेना लिफाफासभक फारनाइ शुरु भेल । एहने माहौलमे एकदिन स्वर्गीय एल.के.जोशी,आइ.ए.एस निदेशक बनि कए अएलाह । गोर-नार,कारी घनगर मोछ, बगए- बानि बहुत आकर्षक मुदा सदिखन जेना अपनेमे ओझराएल ।

कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबादक घोषणा बिना पूर्व तैयारीकेँ कए देल गेल छल । ततबे नहि अगिला परीक्षाक तिथि सेहो निकलि गेल छल । परिणामतः ओहि कार्यालयक सीमित साधनक अछैत सभ कर्मचारी आ अधिकारीकेँ मालजाल जकाँ काज करए पड़लनि । निदेशक(स्वर्गीय एल.के .जोशी, आइ.ए.एस) स्वयं लिफाफासभपर पेनसँ पता लिखैत छलाह । अनकर कोन हाल रहल होएत से सोचल जा सकैत अछि। हमरासभ प्रतिदिन भोरसँ साँझधरि लिफाफामे पता लिखैत रहैत छलहुँ । सभहक ध्यान एतबे बात पर रहैक जे कहुना कए परीक्षा नियत कार्यक्रमसँ भए जाउ । कहिओ कोनो छुट्टी नहि । रवि दिनक तँ आओर बेसी काज रहैत छल । जाबे एकटा परीक्षा समाप्त होइत ताधरि दोसर परीक्षाक कार्यक्रम निकलि जाइत छल । माने ई क्रम सालों चलैत रहल । हम बेर-बेर अफसोच करी जे इलाहाबाद किएक अएलहुँ । आब जखन आबिए गेल रही तँ लौटनाइ सेहो आसान नहि छल । तेँ समयक संग सामंजस्य स्थापित करबाक प्रयास करैत रहलहुँ। काजक तँ जे हाल छल से तँ छलहे ,ओहि

कार्यालयमे लोकोसभ गजब छलाह । एक-एक आदमी सए-सएपर भारी पड़निहार ।

शुरुमे कर्मचारी चयन आयोग, इलाहाबादक कार्यालयमे बहुत कम अधिकारी आ कर्मचारी छलाह । मुदा जतबे रहथि से ककरो काबूमे नहि आबथि । ओहिठाम कार्य करैत अधिकांश लोक स्थानीय छलाह । हुनकासभक घर इलाहाबाद वा ओकर लगपासमे छल । अधिकारीलोकनि सेहो स्थानीय हेबाक कारणे ओतए अपन पदस्थापना करबैत छलाह । एकटा हमही रही जे रही मधुबनी(बिहार)क आ दिल्ली छोड़ि कए इलाहाबाद चलि गेल रही। इलाहाबाद जाएसँ पहिने हमर मित्रसभ मना केने रहथि । मुदा हमरा इलाहाबाद जाएब लिखल छल से ओहिठाम गेलहुँ,गेबे नहि केलहुँ जनवरी १९७८सँ मार्च१९८७ धरि(माने करीब नओ साल) ओहिठाम ओही कार्यालयमे रहि गेलहुँ ।

कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादमे बहुत कम कर्मचारीसँ बहुत बेसी काज नियत समयमे कराओल जाइक। सभकाजमे कोटा बान्हि देल जाइत । जेना पाँच सए लिफाफापर पता लिखबाक अछि, एक हजार बंद लिफाफाकेँ खोलबाक अछि। निदेशक महोदय स्वयं सेहो ई काज करथि । जखन ओहो सएह काज करथि तँ केओ की करैत? कार्यालयमे काज दिन-प्रतिदिन बढ़िते गेल । क्रमश; बेसी सँ बेसी परीक्षा आयोजित होबए लागल। कर्मचारीक संख्यामे कोनो खास इजाफा नहि भेल । समयोपरि भत्ताक लोभमे कर्मचारीसभ लागल रहैत छलाह । परीक्षाक आयोजनक हेतु विभिन्न सहरमे परीक्षा केन्द्रसभक व्यवस्था करब,ओहिठाम प्रश्नपत्रसँ लए कए जरूरी सभटा सामान पहुँचाएब आ परीक्षा दिन करे-कमान रहब । ई सभटा काज इलाहाबादेसँ

संचालित होइत छल । अस्तु,जिम्मेबारी बहुत बढ़ि गेल छल । किछुदिनक हेतु तँ उत्तरपुस्तिकासभक मुल्यांकन सेहो ओतहि होबए लागल जे बादमे वापस दिल्ली चलि गेल । बादमे जा कए कंप्युटरसँ बहुत रास काजसभ कराओल जाइत छल । तखन जा कए काज कम भेल आ कर्मचारीलोकनिक जीवन आसान भेलनि। मुदा ताहिमे बहुत समय लागि गेल । ताधरि सालक-साल ओहिना धक्कम-धुक्की चलैत रहल ।

कार्यालयमे गुटबंदी

कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबादमे हम जखन पहुँचलहुँ तँ ओतए एकटा अधिकारी,आ दूटा कर्मचारी रहथि । दू सँ तीन दिनक भीतरे दू-तीनगोटे आओर पहुँचलाह जाहिमे एकटा हमहु रही । एकटा बाबू कारी खुटखुट ,बिड़ी पीबैत पटिआपर बैसल आ दोसर गोर-नार , देहक मजगूत तरह-तरहक कबाइत पढ़ैत । जखन हम पहुँचलहुँ ताधरि दुनूगोटेमे विवाद शुरु भए गेल छल । एकटा एहन विवाद जकर कोनो अंत नहि भेल आ जाबे हम ओहि कार्यालयमे रहलहुँ (माने करीब नओ वर्ष) ताधरि अनवरत चलिते रहल । कालांतरमे ओ दूटा गुटक रूप धए लेलक । तकरबाद जे केओ ओहिठाम आबथि,पहिले दिनसँ ई प्रयास शुरु भए जाइत जे ओ गुटविशेषसँ जुड़ि जाथि ।

मनुक्खक स्वभावमे विचित्रता होइत अछि । ओ जतहि रहत ओतहि अपना पसिंदक लोकसभक गुट बना लेत,किछुलोकसभसँ विरोध उतपन्न कए लेत,स्वार्थपर कनिको आघात भेलापर शत्रुता कए लेत । एही कारणसँ नान्हिटा जिनगी एतेक संघर्षपूर्ण भए जाइत अछि । इएह हाल कार्मचारी चयन आयोग इलाहाबादक रहए । कतए-कतएसँ अधिकारी आ कर्मचारी ओहि कार्यालयमे

अएलाह । साइते केओ ककरो जनैत छल । देखिते-देखिते किछुगोटे शत्रु बनि गेलाह तँ किछु गोटे एक-दोसरक मित्र । ई तँ तखन जखन कि सरकारमे सभकिछु नियमसँ निर्धारित होइत अछि। कोनो तरहक विवादक समाधान हेतु अधिकारी नियुक्त रहैत छथि । एहिमे के सही रहए,के गलत से कहनाइ बहुत मोसकिल । मुदा एतबा तँ तय अछि जे झंझट होबए लगलैक आ तकर प्रभावमे ओहि कार्यालयमे कार्यरत समस्त कर्मचारी आ अधिकारी पर पड़ैत रहलनि । जे बेसी बुधिआर रहथि से तँ झंझटसभकेँ सलटबैत समयकेँ नीक जकाँ बिता लेलाह । मुदा जे स्वयं ओहीमे सामिल भए गेलाह से अपने तँ मोसकिलमे पड़बे केलाह,आओरो लोकसभक जीवन दुष्कर कए देलाह ।

ई सोचि कए कनीक आश्चर्य जरूर भए सकैत अछि जे सरकारी नौकरी करबाक हेतु कोनो कर्मचारी वा अधिकारीकेँ एतेक जोड़-तोड़ किएक करए पड़तैक?मुदा व्यवहारमे ओहि कार्यालयक स्थिति तेहने छल । कार्यालय आ घर दुनू जीवनक अभिन्न अंग अछि । घरकेँ चलेबाक हेतु कार्यालय जाएब अनिवार्य रहैत अछि। मुदा कार्यालय साधन थिक जाहिसँ उपार्जित धनसँ गृहस्थी नीकसँ चलए। जँ कार्यालयक काज वा वातावरण एहन भए जाए जकर अनुताप घरो धरि चलि जाए तँ विचारबाक प्रश्न भए जाइत अछि ।

ओहि कार्यालयमे कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति एकटा महान योद्धा छलाह जे अपन तरकसमे तरह-तरहक तीरसभ रखने छलाह। नियमित कर्मचारीक बात तँ छोड़ि दिअ,नैमित्तिक कर्मचारीसभ सेहो अपना-आपमे नमूनासभ छल । ओ सभ कोनो-ने-कोनो सिफारिससँ भर्ती भेल रहए । तेँ ओकरासभपर पैघ लोकसभक वरदहस्त रहैत छल । हेबो कोना नहि करितैक । ओ सभ हुनका

लोकनिक ओहिठाम काज करैत छल आ दिनमे कार्यालयमे । किछुगोटे तकर अपवादो रहल होएताह । ऊपरसँ काजक भरमार रहैत छल । एकहु दिन पलखति नहि रहैत छल । रविदिन कए तँ आओर काज भए जाइत छल । सामान्यतः लिखित परीक्षासभ रवि दिन कए आयोजित कएल जाइत छल । एहि तरहे मासक-मास नित्यप्रति बिना कोनो छुट्टीकेँ कार्यालय जाइत रहू । एक हिसाबे ई दंड छल । दिल्लीमे कम सँ कम रवि दिन कए छुट्टी भेटि जाइत रहए । काजोक एतेक मारामारी नहि रहैक । जौं एकटा अधिकारीसँ नहि बनल तँ दोसरठाम आसानीसँ बदली भए सकैत छल । मुदा इलाहाबाद कार्यालय तँ जेना एकटा टापूपर बनल छल। ओएह कर्मचारी,ओएह अधिकारी। कोनो परिवर्तनक संभावना नहि । जँ ककरोसँ नहि बनल तँ हुनका सहैत रहू ।

स्टेनली रोडसँ बेली रोड

जाबे कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालय स्टेनली रोडपर रहए ताधरि मोसकिलसँ छओटा नियमित कर्मचारी ओतए रहथि । १०टा नैमित्तिक कर्मचारीसभ सेहो राखल गेलथि । तखन जेना-तेना ओतुका काज रस्तापर आएल ।

कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबादक कार्यालय स्टेनली रोडसँ बदलि कए ८ बेली रोडपर आबि गेल छल । ओ बहुत पैघ मकान छल । लगेमे सरकारी अस्पताल छल । कनीके हटि कए चौक छल जाहिठाम बहुत नीक मधुरक दोकान छल । ओहिठामसँ सटले इलाहाबादक प्रसिद्ध कचहरी छल जतए जिला न्यायालयक कार्यालय छल । कुलमिला कए ओ महत्वपूर्ण स्थान छल । हमसभ कार्यालयमे काज करी आ बीच-बीचमे चौकपर आबि कए तफरी सेहो । ओहिसमय धरि श्री संजीव सिन्हा,श्री उज्जवल कुमार,श्री

पी.के बनर्जी आ श्रीसक्सेनाजी सहायकक पदपर आबि गेल रहथि। कार्यालयमे कुल १३टा नियमित कर्मचारी रहथि । मुदा तकरे सम्हारब मोसकिल छल।

किछु मासक बाद स्वर्गीय एल.के.जोशी ,निदेशक बदली दिल्ली भए गेलनि। स्वर्गीय एल.के.जोशीक स्थानपर अएलाह श्री जीतेन्द्र प्रसाद माथुर । ओ प्रोन्नतिसँ आइ.ए.एस भेल छलाह । हुनकर पिता इलाहाबाद उच्च न्यायालयमे न्यायाधीश रहथि । ओ अपन पिताक असगर संतान रहथि आ पूर्ण रइसीमे जिनगी बितओने रहथि। कहथि जे ओ कहि कतहु पैरे गेले नहि छथि । ओहि समयमे हुनका फीएट कार रहनि। फिएट आ एम्बेसडर,इएह दुनू कार ओहि समयमे प्रचलित छल । जकरा ओ कार होइत छलैक से पैघ लोकमे गनल जाइत छल । लगभग चारिसाल ओ निदेशकक पदपर रहलाह । कहुना कए समय बिताबथि । कैकबेर तँ विरोधाभाषी प्रस्तावपर एकहि संगे दस्तखत कए देथि । मोटामोटी ई कहल जा सकैत अछि जे ओ मात्र समय बितबैत छलाह आ सभटा भार कनिष्ठ अधिकारीपर छोड़ि दैत छलाह ।

श्री जीतेन्द्र प्रसाद चारि वर्ष धरि निदेशक रहलाक बाद चलि गेलाह । हुनका स्थानपर डाक्टर श्री जी.सी.श्रीवास्तव आइएएस,निदेशक बनि कए अएलाह। डाक्टर श्री जी.सी.श्रीवास्तवजी बहुत विद्वान आ विवेकशील व्यक्ति रहथि। शिक्षासँ हुनका बहुत लगाव रहनि । इलाहाबादमे रहैत काल ओ जर्मन भाषाक नियमित क्लास करैत छलाह । व्यक्तिगत जीवनमे ओ बहुत आस्थावान रहथि । नित्य नियमित भोरे उठि दिनचर्या प्रारंभ ईश्वरक आराधनासँ करैत छलाह। ओ बहुत शांत प्रकृतिक लोक छलाह । सामान्यतः करवनहु उद्विग्न नहि होइत छलाह ।

कर्मचारीसभक झगड़ामे निष्पक्ष रहैत छलाह । तेँ जाबे ओ निदेशक रहलाह,ओ कार्यालय बहुत नीक जकाँ चलैत रहल। एहन बात नहि जे लोकसभक आपसी संबंध बहुत नीक भए गेलैक,गुटबाजी रहबे करैत,सिकाइतो हेबे करैक,मुदा निदेशकक स्तरपर बात सम्हरि जाइक ,आगू नहि बढ़ैक।

डाक्टर श्री जी.सी.श्रीवास्तवजीमे गजबके सहनशीलता छल। एकबेर हुनकर पीए(श्री एस.एन.शुक्लजी) हुनकासँ श्रुतलेख लैत-लैत सुति रहलाह । श्रीवास्तव साहेब हुनका सुतैत छोड़ि आओर काजमे लागि गेलाह आ जखन शुक्लजीक निन्न टुटलनि तँ फेर ओहिना काज शुरु कए देलाह जेना कि किछु भेले नहि होइक । एतेक आत्मसंयम हुनकामे रहनि । सामान्यतः एहन अधिकारी भेटब बहुत दुर्लभ । यथासंभव ओ सभकेँ मदति करथि,मुदा एकटा सीमे धरि । ककरो लेल ओ बहुत अनट काज नहि करितथि चाहे ओ व्यक्ति हुनकर कतबो निकट किएक नहि होथि ।

डाक्टर श्री जी.सी.श्रीवास्तवजीक चलि गेलाक बाद हुनका स्थानपर श्री शशिप्रकाश अएलाह । ओ मणिपुर-त्रिपुरा काडरक आइएएस अधिकारी रहथि । हुनकर पैतृक घर इलाहाबादेमे रहनि। दुर्भाग्यवश कही वा जे कही हमरा हुनका संगे नहि पटल ।

साइकिल बनाम पंखा

ई बात सन् १९७९ ई०क थिक । हम साइकिल किनबाक हेतु कार्यालयसँ अग्रिम भूगतान लेने रही । मुदा हमरा लेबाक रहए पंखा। कारण घरमे पंखाक बिना गर्मी काटब मोसकिल भए रहल छल । तेँ ओहि टाकासँ हम पंखा किनि लेलहुँ। ई बात किरानी

बाबूकेँ पता लागि गेलैक । आब ओ हमरा पाछा पड़ि गेल जे साइकिल किनबाक रसीद दिअ। हम से कतएसँ दितिऐक?आखिर तत्कालीन अनुभाग अधिकारीजीकेँ सभटा बात कहलिअनि । ओएह मामिलाकेँ रफा-दफा करओलाह। एहन-एहन छोट-मोट घटनासभ होइते रहैक । ओहि समयमे पैसाक दिक्कति रहैत छलैक। कोनो टीए बिल देलहुँ कि किरानी बाबूओहिमे कैंची लगेबाक फिराकमे पड़ि जाइत । ओ दोसरकेँ तंग कए सुखी भेनिहार लोक छल । कार्यालयक काज जी-जानसँ करैत छल। तेँ कोनो अधिकारी सामान्यतः ओकरा अप्रसन्न नहि करए चाहैत छलाह । तकरे ओ दुरुपयोग करैत सभकेँ तंग करैत रहैत छल ।

इलाहाबादक सांस्कृतिक संपन्नता!

माघमेला

इलाहाबदमे रहैत सभसाल संगमपर आयोजित भेनिहार माघमेलाक आनंद लेब एकटा महत्वपूर्ण उपलब्धि छल । दुनिआ भरिसँ तीर्थयात्रीसभ बिना कोनो व्यक्तिगत सूचनाकेँ ओतए अबिते नहि छथि,अपितु माघमेलामे एकमास धरि टेंटमे रहैत छथि । माघमेलाक दौरान कैकबेर लाखोंक संख्यामे लोकसभ ओतए संगमस्नान करए पहुँचैत छथि । दुनिआमे एहन आओर कोनो उदाहरण साइते होएत । एहन ऐतिहासिक आ धार्मिक स्थानक लगीचमे रहबाक हमर सौभाग्य भेटल छल । जाबे हम इलाहाबादमे रहलहुँ ताधरि माघमेला जाइत रहलहुँ । ओतए एकहिठाम तरह-तरहक संत-महात्मासभक दर्शन होइत रहल । माघक ठाढ़मे ओतए लोकसभ भोरे-भोर गंगामे डुबकी लगबैत अछि । मास दिन एकटा सामिआनामे रहि कए भजन -कीर्तन करैत अछि आ सभसँ प्रमुख

ई बात जे गाम-घरक चिंता बिसरि एकटा दोसर तरहक जीवन जिबाक अवसर प्राप्त करैत अछि ।

माघमेलामे गाम-घरसँ लोकसभ मास करए अबैत रहैत छलाह । हुनका लोकनिसँ भेंट-घाट हेबाक अवसर सेहो ओतए होइत रहैत छल ।

संगमपर सभसाल एकमास लगैक जेना स्वर्ग उतरि गेल अछि । नैनीपूलसँ ट्रेनसँ आगू बढ़ैत माघमेलाक दृश्य देखए जोगर रहैत छल । हजारों टेंट लागल ,चारूकात बिजली जरैत ,भोरे- भोर संगममे स्नान करैत तीर्थवासी लोकनि फटकिएसँ देखा जइतथि ।

इलाहाबादमे ओकील आ कवि घरे-घर भेटि जेताह । जकरे देखू कविताक डायरी लेने घुमि रहल अछि । जतहि देखू ओकीलक नामपट्ट लागल अछि । कहि नहि एतेक संख्यामे ओकीलसभ की करैत छथि ? कारीकोट पहिरिए लेलासँ की होएत? काज तँ भेटतनि नहि । तखन? केओ दोकान करैत छथि,केओ बिचौलिआक काज करैत छथि आ ओहीमेसँ केओ नेता बनि जाइत छथि । पैरे चलू,एक्कासँ चलू,रिक्सासँ चलू ,कोनो हीनता नहि बुझाएत । अहाँक संगे कतेकोगोटे जाइत-अबैत भेटिए नहि जेताह,रस्ताभरि बतिआइत जेताह । इलाहाबाद सहरमे एकटा विशेषता ई देखबामे आएल जे लोक आपसमे गप्प-सप्प बहुत इतमिनानसँ करथि । बड़का सहरक दौर-बरहा ओहिठाम नहि भेटत । कालक्रमे हमरो ओतए कैकटा घनिष्ट मित्र बनि गेलाह,कैकगोटेसँ परिचय होइत गेल । छुट्टीदिनक आबा-जाही होइत रहल । एहिसभसँ कार्यालयक तनावसँ मुक्ति भेटि जाइत छल ।

कर्मचारी चयन आयोग ,इलाहाबादक ओहन माहौल रहितहुँ हम ओहीठाम रहए चाहैत छलहुँ। अपना भरि पूरा प्रयास केलहुँ जे बदली नहि होअए । तकर की कारण? कार्यालयक माहौल चाहे जेहन रहल होइक,ओकर बाहर हमरा एकटा नीक समाज बनि गेल रहए । एकटा एहन समाज जाहिमे भावुकता रहैक,अपनापन रहैक,जे बेर-कुबेर जी-जानसँ हमरा लेल ठाढ़ भए सकैत छल । हमरा लगमे टाका तँ छल नहि,मात्र नौकरीसँ मासे-मास भेटि रहल दरमाहाक अतिरिक्त हमरा लगमे छल इलाहाबादक समाजमे सहज,सुलभ एकटा अपनत्वसँ परिपूर्ण परिवेश । तेँ हमरा ओतए मोन लागि गेल छल,सुरक्षाक बोध से होइत रहैत छल । लगैत छल जेना अपने गाममे रहि रहल छी । इलाहाबाद टीसनसँ उतरि जहाँ सिभिल लाइन्स बाटे डेरा दिस आगू बढ़ी तँ लागए जेना अपन लोकक बीचमे आबि गेलहुँ । ई भाव तखनो होइत छल जखन बदली भए गेलाक बाद हम इलाहाबाद गेलहुँ । आब तँ बहुत दिन भए गेलैक । कहि नहि आब ओ अंदाज ओहिठामक लोकमे बाँचल रहि गेल कि नहि ? मुदा दू साल पहिने हम श्रीमतीजीक संगे श्री संजीव सिन्हाजीक बेटाक बिआहक क्रममे गेल रही तखनो ओ अपनत्व ओहिठामक अपरिचित,अज्ञात लोकसभमे गप्प-सप्पक क्रममे भेटल । तिपहिआबला हमरा अतिथिगृह तकैत काल कतेक ध्यान रखलक,कतेक प्रेमसँ हमर समानकेँ उतारि कए डेरामे पहुँचओलक,डेरा तकबाक क्रममे कतेक तरहक गप्प-सप्प करैत रहल,से एहि बातक प्रमाण छल जे इलाहाबादक आत्मा अखनहुँ जीवित अछि ओ मरि नहि गेल अछि । बेसक ओकर बाह्यस्वरुप बदलि गेल होइक मुदा ओकर अंतरात्मासँ ओहिना मधुर ध्वनि प्रतिध्वनित भए रहल अछि-आउ,आउ । चाह पीबि लिअ ।

क्षितिजक जन्म

इलाहाबादक स्मरणीय घटनामेसँ अछि हमर कनिष्ठ पुत्र क्षितजक २० अप्रैल १९८५क कमला नेहरु अस्पतालमे जन्म। ओहि समयमे गामसँ हमर माए आएल रहथि । हमर छोट भाइ सत्येन्द्र जे सामान्यतः हमरा संगे इलाहाबादेमे रहैत छलाह,गाम चलि गेल रहथि ।माएकेँ अस्पतालमे अकबक किछु नहि फुराइक ।ऊपरसँ ओ टिटिम्हामे लागल रहैत छल । भरिदिन भुखले रहैत छल,अस्पतालमे कोना खाएब,छुति भए जाएत? तहन रहि गेलहुँ हम आ श्रीमतीजी । मुदा हमरा संगे कर्मचारी चयन आयोगमे कार्यरत श्री संजीव सिन्हा,श्री के.पी.शुक्ल,श्री राम लखन उपाध्याय,श्री राम लखन वाहन चालक(सरकारी माटादोर भैनकसंगे) सदति ठाढ़ रहथि ।ततबे नहि ,शल्यकृयाक पूर्व ६०० रुपयाक जोगार सेहो श्री संजीव सिंहा केने रहथि । किछु टाका हमरा अपनो लग रहए ।हमर ज्येष्ठ पुत्र श्री भास्कर चौथामे पढ़ैत रहथि ।हुनकर परीक्षा रहनि ।ओ श्री संजीव सिंहाजीक ओहिठाम एक सप्ताह रहि कए परीक्षा देलथि। हुनकर श्रीमतीजी(श्रीमती स्मिता सिंन्हा) दिन-राति हुनकर सेवा केलथि ।

जखन हमर श्रीमतीजी कमला नेहरु अस्पतालमे भर्ती भेलथि तखन ओतए हड़ताल रहैक ।बहुत कम डाक्टर,नर्ससभ काज करथि । दू दिन धरि जखन किछु नहि भेल तँ डाक्टर हमरासभकेँ घर पठा देलक ।हम दुनूगोटे घर वापस आएले छलहुँ कि हुनका तुरंत परेसानी भेलनि आ हमरासभकेँ चोट्टे फेर अस्पताल जाए पड़ल । डाक्टर कहलक जे शल्य कृया करए पड़तनि । सीजीएचएससँ पानि चढ़बाक हेतु अनने रही । ओ पानि भयानकरूपसँ खरापी कए गेलनि ।संयोग एहन रहैक जे हुनका

सभसँ पहिने स्वयं एहिबातकेँ अहसास भेलनि । ओ सिस्टरकेँ कहलखिन । डाक्टरसभ दौड़लाह । डाक्टरलोकनिक अथक प्रयाससँ बहुत मोसकिलसँ हुनकर जान बँचलनि ।

दोसरदिन शल्यकृयाक तैयारी शुरु भेल । भोरे दबाइसभ अनलहुँ । डाक्टर शशिवाला श्रीवास्तव केँ शल्यकृया करबाक रहनि । ओ आबिओ गेलथि । मुदा बेहोशीक डाक्टरकेँ अएबामे विलंब भए रहल छलनि। हम हुनकर एलेनगंज स्थित घरपर गेबो केलहुँ । मुदा ओ अपना हिसाबेसँ अएलीह । परिणामतः शल्यकृया प्रारंभ हेबामे किछु विलंब भेल । ओहि समयमे श्री संजीव सिंहाजी श्री के.पी.शुक्ल आओर कैकगोटे ओतए रहथि । श्री के.पी.शुक्ल बहुत घबराथि । हम हुनका बहुत मोसकिलसँ शांत केलहुँ । श्री संजीव सिंहाजीक पिता डाक्टर शशिवाला श्रीवास्तवकेँ फोन सेहो केलखिन । किछुदिन पूर्वधरि हम हुनकर पिता स्वर्गीय वल्लभ शरणजीक किरायेदार रही । ताहि बातसभक ध्यान रखैत डाक्टर शशिवाला बहुत ध्यानसँ शल्यकृया संपन्न केलनि । थोड़बे कालक बाद सिस्टर कहैत निकललि-

"बेटा हुआ है ।" ओ समय बिसरल नहि जा सकैत अछि । हमसभ बहुत आनंदित रही । तुरंत निजी वार्डमे जगह लेलहुँ । श्रीमतीजीकेँ होश भेलापर पहिल शब्द निकललनि-

“आइ अमावस्या छैक । कहीं चोर ने भए जाइक ।” जाबे हमसभ अस्पतालमे रहलहुँ ताधरि केओ-ने-केओ भेंट करबाक हेतु अबिते रहलाह । ई थिक इलाहाबादक विशेषता ।

इलाहाबादमे बाबू

इलाहाबादमे ६ नयाकटराक मकानमे बाबू हमरासंगे किछु दिन रहथि । बहुत आग्रहपूर्वक हम हुनका गामसँ अनने रही। सामान्यतः ओ कतहु ककरो ओहिठाम नहि जाइत छलाह । हुनका ओतेक कष्टक समय आएल,परंतु कहिओ कोनो बेटीक ओहिठाम कहिओ नहि रहलाह ,जखन कि हुनका पाँचटा बेटी ठीक-ठाक स्थितिमे रहथि । नया कटराक मकानक बहरिआ कोठरीमे बाबू रहथि । ओहि कोठरीसँ बाहर देखाइत छल,रस्ताक चहल-पहलसँ माहौल कनी रमनगर रहैत छल । नीचा मकान मालिक धोबीक परिवारक लोकसभ किछु-किछु करैत रहैत छल । तेँ कम सँ कम बाबू ओकर बाल्कनीमे ठाढ़ भए मनुक्खक दर्शन तँ कइए सकैत छलाह । यद्यपि हम अपना भरि हुनका नीकसँ रखबाक प्रयास करी,तथापि हुनकर मोन नहि लगैत छलनि । ओ बेर-बेर कहथि-

"लगैत अछि जेना जहलमे बंद छी । हमरा गामे पहुँचा दिअ।"

गामो पहुँचेबाक हेतु तँ जोगार करबाक छल । ओही समयमे माघमेला लागल आ हमरा गाम कैकगोटे माघमेलामे आएल रहथि। एकदिन ओसभ हमरा ओहिठाम आबि कए बाबूकेँ भेंटो कए गेल रहथि । एकदिन हम दुनू बेकती माघमेला गेल रही । डेरापर बाबू असगरे रहथि । ओही बीचमे हुनकर हार्निआ उतरि गेलनि। दर्दसँ ओ छटपटाइत रहि गेल रहथि । मुदा केओ लोक नहि भेटनि। बहुत कालबाद हमसभ लौटलहुँ तँ ओ बहुत परेसानीमे छलाह । बादमे बहुत अफसोच भेल जे हुनका असगरे छोड़ि कए किएक गेलहुँ ?

इलाहाबाद प्रवासक अंत

एतेक परेसानी अछैत ओहि कार्यालयसँ केओ जाए नहि चाहैत छल । जँ कोनो कारणसँ ककरो बदली भए जाइक तँ ओ फेर जेना-तेना वापस ओतहि आबि जाइत छल । तकर मूल कारण रहैक जे ओ सभ स्थानीय लोक छलाह आ इलाहाबादमे रहलासँ हुनकासभकेँ आओर तरहक फएदा होइत रहल हेतनि । तेँ जँ कार्यालयमे कनीक दिक्कतो होनि तँ सहि लेथि । मुदा हमरा तँ से सभ किछु नहि रहए । जहिना दिल्ली,तहिना इलाहाबाद । दुनूठाम किरायाक मकानमे रही । किराया सेहो एकहि रंग । हमहु इलाहाबादक कार्यालयमे रहबाक हेतु जी-जान लगा देने रही ।

तत्कालीन निदेशक इलाहाबादसँ हमर बदलीक हेतु जी-जानसँ लागल छलाह । हम दिल्ली नहि जाए चाही,ओहनो स्थितिमे इलाहाबादेमे रहए चाही । ओहि समयमे इलाहाबादमे केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण(C.A.T.) खुजल रहैक । हम प्रयास केलहुँ जे ओहि कार्यालयमे हमरा लए लेल जाए । मुदा से प्रयास सफल नहि भेल । अंततोगत्वा, फरबरी १९८७मे हमर इलाहाबादसँ दिल्ली बदली भए गेल । एकदिन भोरे कार्यालयमे हमर बदलीक चिट्ठी आबि गेल । सौंसे कार्यालयमे ओकरे चर्चा भए रहल छल। हमरा बदलामे गुप्ताजी कोनो बाहरी कार्यालयसँ प्रतिनियुक्तिपर आनल गेल छलाह । ओ कार्यभार ग्रहण केलाह आ हमर छुट्टी भए गेल । ओहीदिन साँझमे हमरा बिदाइ देल गेल। कार्यालयक सभ कर्मचारी आ अधिकारी ओहिमे मौजूद छलाह । हमरा मोनमे लगैत छल जेना हम हारि गेल होइ,जेना हमरा संगे न्याय नहि भेल हो । से मूलतः एहि लेल जे हमर प्रतिद्वंदी आ विरोधी सहकर्मीक बदली नहि भेल रहए । हम ऊपर मुख्यालयमे आवेदन कए आग्रह कएने रहिऐक जे

जँ हमर बदली होइत अछि तँ हुनको बदली हेबाक चाही कारण ओहो ओहिठाम हमरे संगे आएल रहथि। मुदा तत्कालीन निदेशकपूरा प्रयास कए हुनका रोकि लेलथि । कहाँदनि ओ मुख्यालयमे कहलखिन जे हुनका बिना ओ कार्यालय नहि चला सकताह । जे-से । हम आखिर एकमास छुट्टी लए लेलहुँ जाहिसँ इलाहाबादसँ प्रस्थान पूर्व आवश्यक व्यवस्था कए सकी । ओहि समयमे हमर बाबू किछुदिनसँ हमरासभक संगे रहैत छलाह। हुनका गाम पठाओल । परिवारकेँ सेहो सासुर पठओलहुँ । तकरबाद एकदिन अन्हरोखे ट्रकसँ सभटा समानक संगे दिल्ली बिदा भए गेलहुँ । हमरा संगमे ओहि कार्यालयक नैमित्तिक कर्मचारी श्री रामलखन उपाध्याय सेहो रहथि । एहिप्रकारसँ हमर लगभग नओ वर्षक इलाहाबाद प्रवासक अंत भए गेल ।

हमर बदली इलाहाबादसँ दिल्ली तँ भए गेल मुदा हमर प्रतिद्वंदी सहकर्मीक नहि भेल रहनि । तकर एकसालक बाद हुनको बदली भेलनि । ताधरि तँ हम दिल्लीमे व्यवस्थित भए गेल रही । सरकारी डेरा सरोजिनीनगरमे भेटि गेल रहए । पटेल भवन स्थित जेआइसीमे काज करैत रही । तँ एकदिन देखलहुँ जे ओहो ओही कार्यालयमे टहलि रहल छथि ।

समय सिखाबए कोतबाली

इलाहाबादसँ स्थानांतरण

इलाहाबादसँ स्थानांतरणक बाद एकबेर फेरसँ दिल्लीमे व्यवस्थित करबाक छल । दिल्ली पहुँचलाक बाद इलाहाबादमे हमर अधिकारी रहल श्री मोरध्वज रायजीक डाबरीमोड़ लग वैसाली कालोनीक घरपर पहुँचलहुँ । जे बात छैक ओ बहुत स्वागत केलाह। ओहीदिन लगीचेमे प्रसादजीक घरमे डेरा से ताकि देलथि।

जे आइ सीमे पोस्टींग:

सन्१९८७मे इलाहाबाबदसँ दिल्ली वापस अएलाक बाद हमर पोस्टींग काबीना सचिबालयसँ संवद्ध कार्यालय जेआइसीमे भेल । ओ कार्यालय पटेल चौकपर पटेल भवनक तेसर मंजिलपर छल । ओना सचिवालयमे ओकरा नीक पोस्टींग नहि मानल जाइ आ हमरा तंग करबाक उद्येश्यसँ तमसा कए अवर सचिवजी हमरा जेआइसी पठा देने रहथि जाहिसँ हम कष्ट काटी । मुदा भेल उल्टे। ओहिठाम बिताओल गेल दूसाल हमर नौकरीक नीक समयसभमेसँ अछि । ओहि संस्थामे कैकटा उच्च अधिकारीसभ रहथि । हमर अधिकारी छलाह गोरखा रेजीमेंटक ब्रिगेडियर पुरी । हुनका असैनिक अधिकारीसभसँ बहुत दिक्कति रहनि । एकटा अनुभाग अधिकारीकेँ तँ ओ कोर्ट मार्शल करबाक हुकुम दए देलथि । मुदा हुनका अवर सचिव(प्रशासन) श्री ओमप्रकाश गुप्ताजी कहलखिन जे ई असैनिक संस्थान छैक । एहिठाम कोर्ट मार्शल नहि होइत छैक । तकर बादो ओ नहि रूकलाह आ ओकरा गिरफ्तार करबाक

हेतु पुलिस बजा लेलथि । मुदा ओ अधिकारी सेहो छद्ग छल । जेना-तेना जोगार लगा कए गृह मंत्रालय चलि गेल । ब्रिगेडिअर साहेब हुनका तकिते रहि गेलाह । तकर बादे हमर पोस्टींग हुनका अंदरमे कएल गेल छल । मुदा हमरा हुनका संगे बहुत नीकसँ समय बितल। जखन कखनो देखितथि तँ बहुत आदरसँ बजबितथि । बादमे हमर वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट सेहो ओ हमरा सामनेमे लिखलाह आ बहुत नीक लिखलाह ।

ओही विभागमे स्वर्गीय भागवत झाजीक पुत्र श्री यशोवर्धन आजाद,आइपीएस(सेवानिवृत्त) सेहो रहथि । हमरा बहुत मदति करथि । कैकबेर हम हुनकर डेरापर सेहो गेल रही । हुनकर माएसँ से बहुत बेर भेंट भेल,गप्प-सप्प भेल । एकबेर ओ अपना संगे लए जा कए अपन पिताजी स्वर्गीय भागवत झाजीसँ सेहो भेंट करओलथि । ओही समयमे ओ थोड़बे दिनक बाद बिहारक मुख्यमंत्री भेल रहथि । जेआइसीसँ चलि गेलाक बादो आजादजीसँ संपर्क बहुत दिन धरि बनल रहल ।

गृहमंत्रालयक आंतरिक वित्त एकक

दिसंबर१९८८मे हमर बदली जेआइसीसँ गृह मंत्रालयक आंतरिक वित्तीय एककमे भए गेल जतए हम मार्च १९९२ धरि रहलहुँ । हम नार्थ ब्लाकक कमरा संख्या ६६मे बैसैति छलहुँ । एतए काज करितहि फरबरी १९८९मे हमर पिताक देहावसान भए गेलनि। हुकर देहांतक बाद एकमास धरि हम बहुत दुखी रही । कोनो काजमे मोन नहि लागए । क्रमशः मोन शांत भेल आ फेरसँ काजमे लागि गेलहुँ । ओतहि काज करैत हम श्री आर.आर झाजी आ श्री

सी.एम.झाजीक संगे मध्याह भोजनावकासक समय बहुत आनंदसँ बितबैत छलहुँ । श्री सी.एम झाजीक कोठरी हमर कोठलीसँ थोड़बे दूर पर रहनि । श्री आर.आर झाजीसेहो ओही विभागमे रहथि । एहि तरहें दू-तीन साल बहुत नीकसँ समय कटि गेल । तकर बाद श्री सी.एम झाजी बदली भए गेलनि । हमहु गृह मंत्रालयक दिल्ली डेस्कमे चलि गेलहुँ । मुदा श्री आर.आर झाजीसँ भेंट-घांट होइत रहैत छल ।

सन् १९८८ सँ १९९२ मार्च धरि हम गृहमंत्रालयक आंतरिक वित्त एककमे काज केलहुँ । गृह मंत्रालयक वित्त एकक(आइएफडी)मे काज करैत काल एकटा महत्वपूर्ण घटनाक्रममे छल हमर सहकर्मी स्वर्गीय आर.एन शर्माजीक अवर सचिरक पदपर प्रोन्नति । लगभग बारह साल अनुभाग अधिकारी रहलाक बाद ओ अवर सचिब बनि रहल छलाह। हुनकर प्रसन्नताक अंते नहि छल । ओ प्रसन्न छलाह से तँ नीक बात मुदा ओ गाहे-बगाहे अपन भावी शक्तिसँ हमरा लोकनिकेँ प्रभावित करबासँ नहि चुकैत छलाह । हमरा मोनमे भेल जे हिनका अंदरमे चलि जाएब तँ परेसानीमे पड़ि सकैत छी । तेँ हम प्रयास करए लगलहुँ जे कोनो दोसर अधिकारीक संग लागि जाइ । ताहिक्रममे ओही विभागक दोसर अधिकारी श्रीमती तिरमीजीसँ भेंट केलिअनि । तिरमीजी बिहारक छपराक रहथिआ हमरा संग हुनका सद्भावना रहनि । ओ भारतीय पोस्टल लेखा सेवाक अधिकारी छलीह । हम हुनका सभबात कहलिअनि । इहो कहलिअनि जे हम हुकनर विभागमे काज करए चाहैत छी । ओ तैयार भए गेलीह । बात घुमि-फिरि हमर तत्कालीन निदेशक श्री ए.के.हुइ लग गेलनि । ओ हमरा किन्नहु बदली नहि करए चाहथि । ताधरि ई तय भए गेल छल जे

स्वर्गीय शर्माजी ओहीठाम सहायक वित्तीय सलाहकार(जे अवर सचिव स्तरक पद छल) बनताह । हम हुइ साहेबकेँ बहुत कहलिअनि जे हमरा जाए देथि कारण शर्माजीक संग काज करब हमर भविष्यक हेतु ठीक नहि होएत होएत । मुदा ओ अड़ि गेलाह आ अड़ले रहि गेलाह। शर्माजी हमरा संसद भवन लए जा कए भोज खुएलाह आ बहुत आग्रह केलाह जे हम हुनका संगे काज करी,कोनो तरहक दिक्कति हमरा नहि होबए देताह ,से तँ कहिते रहलाह । आखिर हम हुनकर बात मानि लेलहुँ । मुदा ई निर्णय बादमे हमरापर बहुत भारी पड़ल। ओ तरह-तरहसँ मौका ताकि-ताकि तंग करथि । अंततोगत्वा, हुनकेसँ जान छोड़ेबाक हेतु हम नेहरु युवा केन्द्र मे उप निदेशकक पदपर प्रतिनियुक्तिपर चलि गेलहुँ। ओहिठाम श्री यशोवर्धन आजादजीक पत्नी महानिदेशक रहथि आ आजादेजी हमर ओहिठाम पोस्टींग करओने रहथि । मुदा ओतहु हम मात्र आठदिन रहलहुँ । हमरा सरजिनीनगरमे सरकारी आवास भेटल छल जे नेहरु युवाकेन्द्रमे नहि रहि सकैत । ताहि हेतु काबिनेटक स्वीकृति चाहैत छल जे हमरा लेल बहुत मोसकिल काज छल । यद्यपि श्रीमती आजाद हमरा वारंबार कहथि जे ओ हमर मकानकेँ बँचा देतीह मुदा हमरा लागल जे हुनको बुते ई काज हेतनि की नहि?

आठ दिनक बाद हम वापस गृहमंत्रालय चलि अएलहुँ । ओहिठामसँ एतेक जलदी वापस अएबाक हमर कोनो योजना नहि छल । मुदा एहन संयोग बनि गेलैक । भेलैक ई जे सरोजिनी नगर मकान लए कए हम बहुत चिंतित रही । हम ओहिठाम कार्यरत अधिकारी लग अपन मोनक बात बाजि देलिऐक । ओ श्री ओमप्रकाशजीकेँ जा कए चुगली कए देलक । ओमप्रकाशजी हमर

पूर्व परिचित छलाह । जेआइसीमे संगे हमसभ काजो केने रही। ओ जा कए सभटा बात श्रीमती आजादकेँ कहि देलखिन । ओ हमरापर बहुत तमसा गेलीह आ इएह ले ओएह ले हमरा नेहरु युवा संगठनसँ कार्यमुक्त कए देलीह । हमरा लेल एक हिसाबे ई नीके भेल । कहब जे जखन हमरा मकानक नियम बूझल छल जे नेहरु युवा संगठनमे गेलासँ हमर सरोजिनी नगरक मकान नहि रहत तखन हम ओहि विभागमे गेबे किएक केलहुँ? तकर मूल कारण स्वर्गीय आर.एन .शर्माजीसँ पिंड छोड़ाएब छल । हमरा भेल जे कम सँ कम हुनकासँ छुटकारा भेटि जाएत ।

किशोर कुणालजीसँ भेंट

श्रीकिशोर कुणालजीकेँ अपना ओहिठाम के नहि जनैत छनि? गुजरात कैडरक प्रसिद्ध आइ.पी.एस अधिकारी कुणालजी पटनामे टीसनसँ सटले विशाल हनुमान मंदिर बनबओने छथि । पहिने ओ छोटसन मंदिर छल । मुदा तखनहु ओ सिद्ध मंदिरमे मानल जाइत छल । हम जखन प्रतियोगिता परीक्षा देबए पटना जाइ तँ कैक बेर ओतए जाइ । सुनैत छी कुणालजी विद्यार्थी रहथि तखनहिसँ ओहि मंदिरमे हनुमानजीक दर्शन हेतु जाथि । बादमे जखन ओ आइ.पी.एस भए गेलाह,तखन ओहिठाम एकटा भव्य हनुमान मंदिर बनबेलाह जे आइ-काल्हि पटनाक प्रसिद्ध स्थान भए गेल अछि । मंदिरक व्यवस्था प्रशंसनीय अछि । ओतए निरंतर रामधुन होइत रहैत अछि ।

कुणालजीमे आध्यात्मिकता भरल छल । ओ कहलथि जे हुनका दू बेर हनुमानजीक सद्यः दर्शन भेल छनि । एक बेर तँ ओ कोनो नदीमे हेलैत काल डुबैत रहथि कि हनुमानजी हुनका बँचा

लेलखिन । दोसर बेर प्रयागमे माघमेलामे ओ अपना आगू ब्राह्मणक भेषमे हनुमानजीकें देखलखिन ।

कुणालजीसँ पहिलबेर भेंट हमरा भेल १९९० ई.मे । हम गृहमंत्रालयक आंतरिक वित्त एककमे काज करैत रही । ओतहि हमरसभक निदेशक लग ओ आएल रहथि । तकर बाद कैकबेर हुनकासँ भेंट भेल । हम एकबेर एकटा परिचितक स्वतंत्रता सेनानी पेनसनक स्वीकृतिमे भए रहल विलंबक चर्च केलिअनि । कहि नहि सकैत छी जे ओ कतेक तत्परतापूर्वक ओहि काजकें करबा देलथि। सालोंसँ लटकल मामिला थोड़बे दिनमे सोझरा गेल । ओही समयमे ओ पटनामे एकटा कैंसर रोगीक इलाज हेतु अस्पताल बनेबाक हेतु संकल्प लेने छलाह । देश-विदेशसँ हुनका एहि काजमे बहुत सहयोग भेटलनि । आइ ओ महावीर आरोग्य संस्थानक नामसँ पटनामे विख्यात अछि आ कतेको कैंसरक रोगीक उपचार ओतए सुलभ भए गेल । अन्यथा पहिने ओ सभ उपचारक हेतु मुम्बई जाइत छलाह ।

कुणालजी कैकबेर हमरा व्यक्तिगतरूपसँ सेहो मदति केने छथि । मधुबनीक मकान माप-तौल विभागकें किरायापर देल गेल रहैक । मुदा ओ सभ किराया देबे नहि करए । किरायाक निर्धारण एसडीओ मधुबनी करितथि तकर बादे किराया देल जाइत । एसडीओ ओहिठाम सालों फाइल पड़ल रहि गेल । तारिखपर-तारिख पड़ैत रहल । हम मधुबनीक आइबी(इंटेलीजेंस अधिकारी)कें एहि संबंधमे भेंट केलिअनि । ओ अपना भरि प्रयासो केलथि । मुदा किछु भेल नहि । उल्टे जखन हम संबंधित दंडाधिकारीकें भेंट केलिअनि तँ ओ उपराग देलाह जे अहाँ तँ सीबीआइमे सिकाइत कए देलिऐक अछि । आइबी आ सीबीआइमे

हुनका कोनो फर्क नहि बुझाइनि । जखन बहुत दिन एहिना मामिला लटकल रहि गेल तखन हम कुणालजीसँ दिल्लीमे हुनकर कार्यालयमे भेंट कए सभ बात कहलिअनि । ओहि समयमे ओ स्वर्गीय सुबोध कांत सहाय ,गृह राज्यमंत्रीक ओएसडी छलाह । तकरबाद कुणाल जी की केलाह की नहि जे मास भरिक भीतरेमे मधुबनी मकानक किराया निर्धारणक आदेश भए गेल । मुदा किराया १५०० रुपया सँ घटा कए ९७० रुपया कए देलक । जे से । मुदा एकटा बहुत भारी चिंतासँ हम कुणालजीक सहयोगसँ मुक्त भए गेलहुँ ।



श्री नंद लाल मिश्र

ई जीवन अद्भुत अछि । भगवानक बनाओल एहि दुनिआमे कोनो चीजक कमी नहि अछि,कोनो चीजक अंत नहि अछि । जाही दिस देखबैक एक सँ एक लोक देखबामे आबि जाएत । विद्वानेमे एक सँ एक लोक भेलाह, छथि आ आगूओ हेताह । तहिना एक सँ एक धनवान एहि दुनिआमे भेलाह आ छथिओ । एक सँ एक गबैआ,चित्रकार,साहित्यकार एहि दुनिआमे अएलाह आ चलि गेलाह । तखन? हमसभ की करी? अपनाकेँ कतए देखी? कतहु देखबाक कोन काज? ककरोसँ अपन तुलना जँ करब तँ करिते रहि जाएब आ अंततोगत्वा, दुखी भए एहि दुनिआसँ चलि जाएब। जे जतए,जाहि रूपमे अछि सएह कमाल अछि । सभमे भगवान

किछु चमत्कारिक गुण देने छथि,सभ किछु-ने-किछु कमाल केने अछि । जरूरी थिक सही दृष्टिकोणक।

हमरा जीवनमे एक सँ एक लोक भेटलाह जिनकर गुणक वर्णन करब बहुत कठिन काज अछि। हुनका बारेमे किछु कहब संभवतः हुनका छोट कए देब होएत । एहन कैकटा हमर मित्र अरवनो छथि जे जीवनभरि हमरा मदति करैत रहि गेलाह । हे ओ सभ तँ कोनोठाम संग भेलाह,संपर्कमे अएलाह आ क्रमशः जुड़िते चलि गेलाह । मुदा एकटा एहन व्यक्ति भेलाह जे अप्रत्यासित हमरा सामने प्रकट भेलाह ,ओहो तरवन जरवन हम हुनका देरवनो नहि रही,कहिओ भेंटो नहि रहए आ तकर बाद बहुत आत्मीय भए गेलाह आ जीवन यात्रामे बहुत मदतिगार साबित भेलाह । ओ व्यक्ति छथि-डुमरी(मधुबनी) गामक श्री नंदलाल मिश्रजी ।

हमर मधुबनीक मकानक पहिल किरायेदार माप-तौल विभाग,बिहार सरकार जरवन मकान रवाली कए देलक तकर बाद तीनसाल धरि ओ रवाली पड़ल रहल । तकर कैकटा कारण छल । एक तँ हम किरायेदारीसँ तंग भए गेल रही । माप-तौल विभागकें बहुत मोसकिलसँ भगेने रही । तकर बाद? मकान रवाली कतेक दिन रहैत । मकानमे बहुत रास काज बाँकी रहैक । हमरा छुट्टी रहए नहि । तरवन केना की होइत? आरिवर हमर श्रीमतीजी तैयार भेलाह। हुनका पठओलहुँ आ संगे हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्कर सेहो रहथि । ओसभ दिन-राति मेहनति कए मकानक बहुत रास जरूरी काज करओलथि । तकरबादो मकानक की होएत? अपने तँ रहि नहि सकैत छलहुँ । तें ओकरा किराया लगाएब जरूरी छल । ओही समयमे मधुबनी स्थित हमर मित्र श्रीनारायणजी श्री नंदलाल मिश्रजीकें तकलनि । हुनका मकानक जरूरति रहनि । ओ

मधबनीक उद्योग विभागमे बड़ाबाबू छलाह । हमरा अनुपस्थितिएमे श्रीनारायणजीक सहमतिसँ मकान किरायापर दए देल गेल । नंदलाल मिश्रजी ओहि मकानमे तेरह वर्ष रहलनि । बीच-बीचमे हुनकर बदली दरभंगा,सहरसा आ कतए-कतए होइत रहलथि । मुदा मकान इएह रहलनि । किराया कनी-मनी बढ़बैत रहलाह । कैकबेर किराया बाँकी रहि जाइक । मुदा बादमे ओ पाइ-पाइ जोड़ि कए चुकता करैत रहलाह । बैंकड्राफ्ट बना कए दिल्ली हमर डेरापर पठा दैत छलाह । मकानक बिजलीक बिल लए कए थोड़ेक समस्या जरूर भेल। कोनो कारणसँ बिजलीक बिल अबितहि नहि छल । एहिप्रकारेण सालो बिजली तँ जड़ैत रहल मुदा बिलक भुगतान नहि भेल । बादमे शासन सख्ती केलक आ बाँकी किरायाक संग जुर्माना सेहो हुनका देबए पड़लनि । हम हुनका समय-समयपर कहिअनि जे बिजली बिल जमा करैत रहथि । मुदा से नहि कए सकलाह आ घाटा उठाबए पड़लनि । मुदा से ओ सहि गेलाह ।

हमर मधुबनीक मकानमे ओ एकटा समांग जकाँ रहलाह आ आसपासक चीज-वस्तुक रक्षो करैत रहलाह । बगलमे हमर संबंधी लोकनिक खाली पड़ल भूखंडक सेहो ओ ध्यान रखैत रहलाह । ई सभ तँ भेल किरायेदारी बात । ओहुना ओसभगोटे बहुत नीक लोक छथि । सभदिन बहुत नीक व्यवहार रखलनि । जखन कखनो हम ओतए गेलहुँ हमरा लागल जेना अपने लोकसँ भेंट भए रहल अछि। जखन कखनो हम हुनका बारेमे सोचैत छी तँ मोन हुनका प्रति सद्भावनासँ भरि जाइत अछि । लगैत अछि जे हमर अंतरमन एकटा सुखद स्मृतिसँ गुजरि रहल अछि । सही मानमे अखनो एहि दुनिआमे बहुत नीक लोकसभ छथि आ तेँ ई चलिओ रहल अछि ।



कमरे आलम

हम मधुबनीक मकान बनाबएक क्रममे बहुत रास जन-बोनिहारक संपर्कमे अएलहुँ ।सन्१९८८मे शुरु भेल मकानक काज सन्२०१४मे समाप्त भेल । तकर बादो कैकटा जरूरी काज रहबे करए ।ताधरि सन्२०१६मे मकान बिकाइए गेल ।ओहीक्रमे हमर मित्र श्रीनारायणजीक माध्यमसँ कमरे आलम सेहो संपर्कमे आएल रहए। ओ मधुबनीसँ सटले भौआरा गामक रहनिहार अछि ।कहब जे ओकरामे कोन एहन बात छल जे अखनो ओकर चर्च भए रहल अछि ।तँ सुनि लिअ ।आलम औअल नंबरक इमानदार छल ।जे काजमे लागि जाएत ताहिमे भोरसँ साँझ धरि लागल रहत ।कोनो देख-रेख करबाक काज नहि ।दैनिक मजदूरीपर ओ काज करैत छल ।ठीकाक काज ओकरा नहि सोहाइक ।मुदा दैनिक मजदूरीपर एकदिनमे ओ ततेक काज कए दैत जे सामान्यतः दू आदमी मिलिओ कए नहि कए सकैत छल ।ओ मकानक पेंटींगक काज सेहो करैत छल ।एकबेर हम अपन मकानक रंग-रोहन करबाक हेतु ओकरा ठीकापर काज देबए चाहलहुँ ।अपना हिसाबे हम ओकरा फाजिले बोनि लगा देने रहिऐक ।मुदा ओकर माथमे से नहि धसलैक ।ओ ठीकापर काज करबाक हेतु तैयार नहि भेल। कहलक जे ओ दैनिक मजदूरीए पर काज करत ।बादमे जखन काज खतम भेलापर हिसाब भेल तँ पता लागल जे ठीकापर ओकरा

दोबर टाका भेटितैक । हम ई बात ओकरा कहलिऐक तँ ओ हँसि कए कहैत अछि-

"की करबैक मालिक । जतबे भागमे रहतै ततबे ने भेटतै।"- से कहि ओ हँसि देलक ।

एकबेर मधुबनीक मकानमे चोरी भए गेल । ओ बहुत दिनसँ खाली रहैक । बाहर-भीतरमे कुल मिला कए आठटा ताला लागल रहए । जखन हम मधुबनी पहुँचलहुँ तँ फटकीसँ कोनो गड़बड़ी नहि बुझाएल । मकानक मुख्य द्वारि लग जा कए देखैत छी जे ताला खुजल लटकल अछि । मकानमे अंदर पैसैत छी तँ कोनो केबारक ताला टुटल छल तँ ककरो कुंडी उखरल पड़ल छल । एहि तरहेँ कहि नहि कतेक दिनसँ मकान ओहिना खुजल पड़ल छल। एकटा कोठरीमे हम एकटा पेटीमे किछु ओछाओनसभ रखने रही। पेटी तँ ठामहि छल । मुदा ओछाओनसभ लापता छल । लगैत अछि ओ चोर बहुत नफीस छल । जाढ़मे सीरक,ओछाओनसभ तँ बहुत उपयोगी रहैक,तेँ ओसभ लए गेल । पेटी तँ बहुत भारी रहैत,तेँ ओकरा छोड़ि देलक ।

मकानक ओ हाल देखि हम क्षुब्ध रही । मकानक सुरक्षाक हेतु आलमकेँ चौकीदारीमे लगेलहुँ । ओ अपन एकटा कुटुंबक संगे राति मे ओतहि सुतए । हमहु दोसर कोठरीमे रही । दिनभरि काज चलए । रातिमे कहिओ गाम,कहिओ सासुर आ कहिओ ओतहि रहि जाइ । मुदा आलम अपन कुटुंबक संगे लगभग एकमास ओतए रखबारी केलक । तकरबाद ओ मकान किराया लागि गेल । हमर मोन हल्लुक भेल आ हम निश्चिंत भए दिल्ली वापस भेलहुँ ।

पातर-छीतर, गोर-नार आ सदिखन प्रसन्न रहनिहार आलम शुरुमे आर.के.कालेजमे गणितक प्रध्यापक श्री एम.पी.सिंहजीक ओतए काज करैत छल । बादमे श्रीनारायणजीक ओहिठाम जखन कखनो काज होअए तँ ओ बजाओल जाइत ।एहि तरहेँ बहुत दिन धरि आलमसँ संपर्क बनल रहल । कैकबेर तँ मधुबनी पहुँचबासँ पहिनहि ओकरा फोन कए दिऐक । ओ मुस्तैद रहैत छल आ मकानपर पहुँचितहि काजमे लागि जाइत छल । बादमे जखन मकान बिका गेल तखनो ओ कैकबेर हमरा फोन केलक । जखन ओहि मकानक नव मालिक मकानमे काज करबए लगलाह तखनो आलम हमरा फोन केलक । मुदा हम ओकर फोनक जबाब नहि देलिऐक । भेल जे की कहबैक? आब आलमक फोन नहि अबैत अछि । प्रायः ओ असलियत सँ वाकिफ भए गेल होएत जे ओ मकान आब हमर नहि अछि । मुदा ओकर स्मृति हमर मोनमे ओहिना बनल अछि आ बनल रहत ।

स्वर्गीय मदन मोहन झा

ई बात सन् १९९१-९२क थिक । श्री ए.के.हुई उपसचिवक निदेशकक पदपर प्रोन्नतिक बाद वित्त मंत्रालयमे बदली भए गेलनि। हुनका स्थानपर स्वर्गीय मदन मोहन झाजी ,बिहार काडरक चर्चित अधिकारीक हमरासभक विभागमे पोस्टींग भेलनि । हम एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रही जे एकटा मैथिल अधिकारीक संगे काज करबाक अवसर भेटत । ओ हमरा विभागमे अबितहि जकरा-तकरा जखन-तखन डाँटि देथि । मुदा हमरा किछु नहि कहथि । एही बातकेँ स्वर्गीय आर.एन.शर्मा,अवर सचिव पकड़ि लेलक आ सभकेँ कहए लगलैक जे आर.एन.मिश्रक चुगलीक कारण झाजीसभकेँ ओना करैत छथि । सच बात तँ ई रहैक जे हमरा

हुनकासँ सरकारी काजक अलावा साइते भेंट होअए। पहिनेसँ हुनकासँ कोनो परिचय नहि रहए । मुदा ओ बहुत सख्त लोक छलाह आ स्वयं अपन हिसाबसँ जकरा जेना फुराइन से करैत छलाह । हमरा तँ काजसँ लादि देने छलाह । तथापि हम जी-जानसँ काज करी जे हमरा चलते हुनका कोनो परेसानी नहि होनि,केओ ई नहि कहनि जे ओ हमर पक्ष लैत छथि। मुदा अहाँ ककरो विचारकेँ तँ नहि पलटि सकैत छी । सएह बात स्वर्गीय आर.एन शर्मापर सेहो लागू होइत छल । ओहि समयमे हम डेस्क अधिकारी रही आ नियमानुसार हमर फाइल सोझे निदेशक लग जेबाक चाही । मुदा ओहि विभागमे पहिने सँ डेस्क अधिकारी अवर सचिवक माध्यमसँ निदेशक लग फाइल पठबैत छल । हम झाजीकेँ कैक बेर कहलिअनि जे हमरा आर.एन.शर्मा तंग करैत अछि ओहो मात्र सकक कारण । तेँ हमर फाइल अहाँ सोझे अपना लग लेल करू । ओ कोनो गलत नहि होइतैक । मुदा झाजीक एकमात्र जबाब होइत छलनि -" दस दिनक बाद विचार करब ।" कहबाक माने जे ओ हमरा टरका दैत छलाह आ अहिनाा टरकबैत रहि गेलाह। हमर बात नहि सुनलनि । स्थिति हुनकर ई रहए जे केओ चपरासी पानि पिआबए हेतु तैयार नहि होबए । कारण ककरो समयोपरिभत्ता देबे नहि करथिन जे मंत्रालयसभमे आम बात रहैक। ओहिसँ कर्मचारीसभकेँ आर्थिक उसास भए जाइक । आओर कोनो तरहक फएदा मंत्रालयमे तँ रहैक नहि । कोनो सुबिधाक तँ बाते छोड़ू । मुदा झाजी जाबे रहलाह ताधरि ओ ककरो समयोपरि भत्ताक बिल पास नहि केलाह । हम तैओ प्रसन्न रही जे कम सँ कम केओ हमरा क्षति नहि कए सकत कारण ऊपरमे झाजी छथि ।

साल भरिक अंदरे एकदिन अचानक हुनकर बदली भए गेलनि । ओ चुपचाप चलि गेलाह । हुनका अपन अधिकारी (जी.गणेश आइ.ए.एस)सँ नहि बनैत छलनि आ तेँ हुनकर बदली सालभरिक अंदरे भए गेलनि । हमर एकसालक एसीआर(वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट) ओ लिखलाह। कोनो प्रतिकूल टिप्पणी रहलापर संबंधित कर्मचारीकेँ बताओल जाइत अछि । हमरा से सभ किछु नहि भेल। ओहुना हमरा हुनकापर पूर्ण विश्वास रहए जे ओ हमर क्षति नहि करताह । औ बाबू! सेवानिवृत्तिक बाद जखन पूरा एसीआरक बंडल हमरा सरकार घर पठा देलक तँ बहुत उत्सुकतासँ झाजीक लिखल एसीआर पढ़लहुँ ।ओ हमर एसीआरक पुनरीक्षण केने रहथि । ताहिसँ पहिने रिपोर्टींग अधिकारी हमरा अतिउत्तम श्रेणीमे रखने रहथि । झाजी सेहो हुनकर बात मानि गेल रहथि । मुदा ऊपरसँ चारि पाँति हमरापर निवंध लिखने रहथि जे कतहुसँ सही नहि छल,प्रतिकूल छल । मुदा हमरा सरकार बतओने नहि रहए ।कहक माने जे ओकरा प्रतिकूल नहि मानल जा सकैत छल। तेँ हम बँचि गेलहुँ आ हमर प्रोन्नति भए सकल।

पुष्पविहारमे सरकारी डेरा

इलाहाबादसँ दिल्ली अएलाक बाद हम एकमास प्रसादजीक डेरामे(डाबरीमोर,वैशाली कालोनी,दिल्ली) रहल रही कि हमरा पुष्पविहारमे सरकारी डेरा भेटि गेल । कहि नहि सकैत छी जे हमरा एहि बातसँ कतेक प्रसन्नता भेल रहए । मकानक कब्जा लेलाक बाद हम एकटा बड़ीटा ताला घरमे लगा कए बहुत राहतक अनुभव केने रही । ओ डेरा सेक्टर सात,पुष्पविहार मे प्रथम तलपर छल। ओहिमे छोट-छोट दूटा बेडरूम ,आगूमे कनीकटा खाली स्थान छल। ओहिठामसँ कनीके फटकी पुष्पा भवन छल। मदनगीर सेहो

ओहिठामसँ सटले छल । सेक्टर सात, पुष्प विहारसँ सचिवालय जेबाक हेतु सरकारी बस संख्या ५८०,५८१ छल। दुनू बस खचाखच भरल रहैत छल । बेस यात्री जन-बोनिहारसभ रहैत छल । ओहिबसमे जेबीकटि जाएब सामान्य बात छल । यद्यपि हमरा जेबीमे किछु रहिते नहि छल,तथापि हम सतर्क रहैत छलहुँ । मुदा एकबेर हमरो जेबी कटल आ जे किछु टाका छल से चलि गेल। तकरबाद हम कहिओ जेबीमे टाका रखबे नहि केलहुं । जे किछु टाका आ जरूरी सामानसभ रहैत छल से झोड़ामे राखि दैत छलिऐक । बसमे बैसबाक जगह भेटि जाए,ताहि हेतु निरंतर प्रयासमे लागल रहैत छलहुँ । क्रमशः खाली होइत सीटपर बैसबाक हेतु ठाढ़ यात्रीसभ धपाएल रहैत छलाह । कैकबेर तँ यात्रीलोकनिमे कहा-सुनी भए जाइत छल । ५८० आ ५८१ नंबरक बस सोझे नार्थब्लाक धरि जाइत छल । तेँ केन्द्रीय सचिवालय गेनिहार लोकनिकेँ लेल ई बस बहुत बढ़िआँ रहैत छल । बादमे ठाढ़ो यात्रीसभकेँ बैसबाक स्थान भेटि जाइत छलनि । मुदा कहिओ-कहिओ तँ ठाढ़े जाए पड़ैत छलैक । जतेक लोक उतरल ताहिसँ बेसी चढ़ि गेल । बस लदम-लद रहैत छल । कैकगोटे तँ ओकर गेटसँ लटकल रहैत छलाह । दिल्लीक बसक ओ दृश्य बिसरल नहि जा सकैत अछि ।

पुष्पविहारक हमर फ्लैटक सामनेक फ्लैटमे तामिलनाडुक व्यक्ति असगरे रहैत छलाह । ओ जासूसी संगठनमे काज करथि। ओ बहुत स्वच्छताप्रेमी छलाह आ चारूकात नित्य साफ करैत छलाह । माथमे त्रिपुंड करथि । ओ बहुत सात्विक लोक रहथि आ हमसभ हुनका बाबा कहिअनि । थोड़बेदिनक बाद ओ सेवानिवृत्त भए गेलाह । बहुतदिनक बाद हमसभ मलाइ मंदिर गेल रही तँ

हुनका ओतहि देखलिअनि। ओ कहबो करथि जे सेवानिवृत्तिक बाद ओ मलाइ मंदिरमे काज करताह । तकरबद ओ कतए गेलाह की भेलनि से किछु जानकारी नहि भेटि सकल ।

हमर डेरासँ थोड़बे फटकी एकटा मैथिल परिवार रहैत छलाह । ओ सीतामढ़ीक आस-पास कोनो गामक रहथि । बीएसएफमे काज करथि । थोड़ेक दिन तँ हुनकासँ बहुत नीक संबंध रहल । ओहो हमरा ओहिठाम सपरिवार आबथि,हमहुसभ जाइ ।बादमे ओ एकदिन हमर फ्लैटक स्कूटर पार्क करबाक हेतु देल गेल छोटसन कोठरी लेबए चाहलाह ,जे हम मना कए देलिअनि। कारण हम सरकारी मकानक कोनो भाग किरायापर देबाक पक्षधर नहि रही ।एहिबातसँ कुपित भए ओ आएब-जाएब बंद कए देलनि ।तकर बहुत दिनक बाद एकबेर हुनका ओहिठाम एकटा घटकैतीक क्रममे गेल रही ।ओहि समयमे हम आरकेपुरम सेक्टर तीनमे रहैत रही ।हुनकर बेटा(जे ताहि समयमे इसकूलमे पढ़ि रहल छल) जबान भए नीक नौकरी कए रहल छल ।तकरे प्रति बिआहक प्रस्ताव हमर केओ निकटवर्ती लोक देने रहथिन आ हमरा सेहो चर्चामे सामिल केने रहथि ।हम हुनका ओहिठाम गेबो केलहुँ ।ओ ओही फ्लैटमे रहैत छलाह। मुदा ओ तेहन सन व्यवहार केलाह जेना चिन्हितो नहि होथि ।संभवतः भेलनि जे परिचय ठहरि गेलापर काटरक मांग कहीं कम ने करए पड़ि जानि । ओना ओ कथा नहि पटलैक ।

पुष्पविहारमे हमर डेरासँ सटले कनीके फटकी विरला विद्या निकेतन इसकूल खुजल छल । हम अपन ज्येष्ठ पुत्र भास्करक ओतए नामांकनक क्रममे गेल रही ।नामांकनमे बहुत टाका लगैत छलैक ।हमरा लग तकर जोगार नहि छल ।परिणामतः ओतए

नामांकनक विचार छोड़ि हुनका पुष्पविहार सेक्टर पाँच स्थित सरकारी इसकूलमे कराओल गेल । पुष्पविहार सेक्टर सातक हमर डेरासँ ओ बेसीकाल पैरे इसकूल जाइत छलाह ।हमर डेरासँ इसकूल कम सँ कम तीन किलोमीटर रहल हेतैक । ओहि कालोनीक कैकटा विद्यार्थीसभ ओहि इसकूलमे पढ़ैत छल । कैकबेर ओ बससँ सेहो वापस भए जाइत छलाह। एहि तरहें एतेक छोट बएससँ भास्कर(घरक नाम-सोनू) बहुत मजगूत व्यक्ति छलाह । हुनकर ई गुण आगू बढ़िते रहल जे जिनगीमे बहुत मदति केलकनि । कतहु बाहरो जेबाक होइक तँ ओ असगरे चलि जाथि । ग्वालिअरमे एमबीएमे नामांकन करबाक हेतु असगरे चलि गेलाह आ सफल रहलाह । एकसालक बाद हुनकर नामांकन सरोजिनी नगरक एक नंबर सरकारी इसकूलमे कराओल गेल । किछुदिन धरि ओ पुष्पविहारसँ सरोजिनी नगर बससँ अबैत-जाइत रहलाह । साँझमे वापस जेबाक काल हम बेसीकाल हुनकर संग भए जाइत छलिअनि । हमर इच्छा छल जे सरोजिनी नगरमे सरकारी मकान बदलि ली जाहिसँ भास्करकेँ सुविधा हेतनि । हमरो कार्यालय लगीच भए जाएत ।

दिल्ली अएलाक बाद हमर पदस्थापना जेआइसीमे भेल रहए। श्री विजय करण आइपीएस हमर अधिकारी रहथि । हम हुनका अपन सरकारी आवासक परिवर्तन हेतु कहलिअनि । ओ हमरा हेतु सिफारसी चिठ्ठी संपदा निदेशालयकेँ देलखिन । परिणामतःतीन दिनक भीतरे हमर काज भए गेल आ हमरा सरोजिनीनगरक इएफ ब्लाकमे मकान नम्बर ६४३भेटि गेल । तकर किछुए दिनक बाद ओ दिल्लीक पुलिस आयुक्त बनलाह । बादमे सीबीआइक निदेशक सेहो भेलथि । तरवनो ओ हमरा देखथि तँ

कैकबेर नार्थ ब्लाकक कोनटामे बहुत नीकसँ हाल-चाल पुछितथि। ताधरि चारूकात हुनकर अंगरक्षकसभ मुस्तैद रहैत छलनि।

सरोजिनीनगरक इएफ ब्लाकमे मकान

सरोजिनी नगरक फ्लैट नम्बर ६४३ क आवंटनक बाद हम स्वर्गीय आर.के.सक्सेनाजीक संगे ओतए पहिल बेर गेल रही । ओ पहिनेसँ सरोजिनीनगरक जीआइ ब्लाकमे रहैत छलाह आ हुनका ओहिठामक सभचीजक जानकारी रहनि । हुनका हमरा आवंटित फ्लैट पसिंद पड़लनि । तकरबादे हम ओहि फ्लैटक कब्जा लेलहुँ । जेना-तेना ओकरा साफ केलहुँ। पुष्पविहारसँ सामानसभ अनलहुँ। ओहि समयमे हमर परिवार गर्मीक छुट्टीमे गाम गेल रहए । जखन ओ सभ वापस दिल्ली अएलाह आ सरोजिनीनगरक फ्लैटमे पैर देलनि तँ हुनकासभक प्रसन्नताक अंते नहि छल । सरोजिनीनगरक सभसँ पैघ विशेषता ओकर बजार छलैक । जे सामान चाही से एक्केठाम भेटि जाएत,सेहो सुभिस्तगर। ओकरे एकभागमे बाबूमार्केट रहैक । ओहिठाम नित्यप्रतिक आवश्यकताक सामान जेना सुई,बट्टन,गंजी,कच्छिआ आदि-आदि भेटि जाइक । सरोजिनीनगरमे दूरभाषक कैकटा बूथ छल आ दसबजे रातिक बाद एसटीडी फोन करबाक हेतु लोकक पाँति लागि जाइत छल । सरोजिनीनगरमे बहुतरास अपना ओहिठामक लोकसभ तरकारीक दोकान पटरीपर चलबैत छल । दसबजे रातिक आसपास तरकारी बहुत सस्ता भए जाइत छलैक । ढेरीक-ढेरी तरकारी किछुटाकामे भेटि जाइत छल ।

सरोजिनीनगरक हमरा आवंटित सरकारी फ्लैट बंगाली इसकूलक पछुअति आ सरोजिनी नगर इसकूल नंबर १क आगूमे छल । ओहिठाम लगपासमे सात-आठटा इसकूल छल । सटले

सरोजीनगर मार्केट छल । बसस्टैंड जरूर कनीक फटकी छल । मार्केटसँ सटले सीजीएचएसक औषधालय छल । कनीके हटि कए पोस्टआफिस छल । कहक माने जे सरोजिनीनगर आवश्यक सुविधासँ परिपूर्ण छल । हमर ज्येष्ठ पुत्र भाष्कर सरोजिनी नगर एक नंबर इसकूलमे पढ़ैत छलाह । इसकूलक घंटी बजैक सेहो हमसभ सुनिऐक । सरोजिनीनगरक फ्लैटक आगूमे आङन छल जतए बच्चासभ खेलाइत छलाह । एहन सुविधा दिल्लीमे कतए पाबी? शुरुमे ओहिठामक माहौल बहुत रमनगर छल । मुदा बादमे लोकसभ बदलैत रहल । नवलोकसभसँ सामंजस्य ओतेक नीक नहि रहैक । बच्चासभक खेलक हेतु कैकबेर फसाद भए जाइक ।

स्वर्गीय इन्द्रानंद मिश्र

हम कुलमिला कए नओ वर्ष सरोजिनीनगरमे रहलहुँ । ताहि समयमे कतेको तरहक नीक-बेजाए होइत रहल । ओहीठाम रही तँ हमर ज्येष्ठ साढ़ू स्वर्गीय इन्द्रानंद मिश्र दुखित पड़ल रहथि आ इलाजक क्रममे दिल्ली आएल रहथि ।

मिश्रजी गुर्महा,पचाढ़ी ग्रामक छलाह । ओ भागलपुर कालेजसँ इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरींग केने रहथि । असाधारण प्रतिभाक लोक छलाह । सभदिन छात्रवृत्ति भेटैत रहलनि । बिहार विद्युत बोर्डक नौकरीमे अएलाक बाद ओ कतेको लोककें मदति करैत रहलाह । कतेक निर्धन विद्यार्थीकें पढ़बामे आर्थिक सहायता केलाह । दुर्भाग्यवश कमे बएसमे हुनका मुँहमे कैंसर भए गेलनि । ओहीक्रममे ओ सरोजिनीनगरक हमर डेरापर आएल रहथि । ई बात सन् १९९२क थिक । ओहिसँ पहिने ओ टाटा मेमोरिअल,मुम्बईमे इलाज करओने रहथि। जखन मामिला काबूसँ बाहर बुझेलैक तँ ओसभ टरका देलकनि । तकर बादे ओ दिल्ली आएल रहथि आ

एम्ससँ थोड़ेक फटकी ग्रीनपार्क एक्सटेंसनमे ओ डेरा लेने रहथि । हम नित्य कार्यालयसँ छुटलाक बाद साँझमे हुनकर हाल-चाल लेबए ओतए जाइ । करीब मासदिन भरि एम्समे टपला खाइत रहलाह । कोनो इलाज नहि केलकनि । भर्ती करबाक तँ सबाले नहि । ओहि समयमे एम्समे बहुत कम लोककेँ कैंसरक इलाजक हेतु भर्तीक जोगार रहैक । आखिर मास दिनक बाद बहुत कष्टप्रद स्थितिमे ओ मुम्बई चलि गेलाह । जाइत-जाइत ओ इसारामे कहि गेलाह जे सोनू(हमर ज्येष्ठ पुत्र) एकबेर बाजल रहए जे ओ पाँच भाइ-वहिन छथि । ओहि समयमे हुनकर तीनू संतान बहुत छोट रहथिन । सभसँ ज्येष्ठ आदित्य सिन्द्रीमे इंजिनीयरिंगमे पढ़ैत रहथिन। सभटा जिम्मेबारी बँचले रहनि । तेहने स्थितिमे ओ मार्च १९९३मे एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलाह । मुदा प्रतिकूल परिस्थितिक बाबजूदो हुनकर तीनू संतान उत्तम शिक्षा प्राप्त केलाह। आदित्य(इंजिनीयर) एनटीपीसीमे उच्चस्थानपर छथि । हुनकर छोट भाइ अमेरिकामे इंजिनीयर छथि। बहनोइ आइआइटी इंजिनीयर छथि आ बहुत उच्चपदपर टाटा कंपनीमे काज करैत छथि । कहबाक माने जे जँ सही दिसामे धैर्यपूर्वक प्रयासरत रहए तँ केहनो स्थितिमे लोक बढ़ि जाइत अछि-तकर ईसभ उदाहरण छथि ।

उपनयन

हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्कर आ छोट पुत्र क्षितिजक बएसमे आठसालक अंतर अछि । सन् १९९५मे जखन हुनका लोकनिक उपनयन भेल तँ भास्कर १८सालक आ क्षितिज दस सालक रहथि। गाममे जा कए उपनयन करब बहुत झंझटाह बुझाएल । गाम जेबाक माने भेल जे नून-तेलसँ लए कए सभकिछुक जोगार करू,तखन तँ ओतए पैर धरू । फेर ओहिठामक व्यवस्थामे लागि

जाउ । से सभ संभव नहि बुझाएल । हम बच्चासभक उपनयन दिल्ली स्थित अपन सरोजिनीनगरक डेरापर करबाक निर्णय केलहुँ। हमर ससुर एहिबातक पूर्ण समर्थन केलनि । सासु-ससुरकेँ छोड़ि कए हम मात्र अपन माए आ भाइ लोकनिकेँ बजओने रहिअनि । राँचीसँ सत्येन्द्र आ दरभंगासँ सुरेन्द्र सपरिवार आएल रहथि । पंडित राघवेन्द्र बहुत विधि-विधानसँ उपनयन करओलथि। काली भाइ (श्री कालीश्चन्द्र मिश्र) आ नबोनाथजी गुरू बनल रहथि । हमर ससुर यथासाध्य योगदान देलनि । ओहि समयमे दिल्लीमे बच्चासभक उपनयन करब एकटा प्रयोगे छल । मुदा हमरा बाद कैकगोटे ओतहि उपनयन केलनि । आब तँ ई आम बात भए गेल अछि । उपनयन,बिआह,श्राद्धसभ एतहि करैत अछि। मुदा अखनो किछु लोक गाममे ई सभ करए चाहैत छथि आ करितो छथि ।

ससुरक इलाज/देहावसान

सन् १९९५क दिसंबर मासमे अचानक पटनासँ फोन आएल जे हमर ससुर(स्वर्गीय गणेश झा ग्राम पण्डौल) बहुत दुखित छथि आ पटनाक इन्दिरा गांधी अस्पतालमे भर्ती छथि । हुनकर दुनू किडनी खराप भए गेल रहनि । हमर श्रीमतीजी बहुत परेसान भए गेलीह । समाचार सुनितहि ओ पटना बिदा भए गेलीह । एक-दू दिनक बाद ओ सभ दिल्लीमे एम्समे इलाज करेबाक निर्णय केलनि। ओहि समयमे श्री भास्कर खुल्वे,आइ.ए.एस.(सेवानिवृत्त) बहुत मदति केलनि । हुनकर परिचित कांडपालजी एम्समे काज करैत रहथि । हुनका ओ कहलखिन । काण्डपालजीक सहयोगसँ हमर ससुरक भर्ती एम्समे भए गेलनि ।

हमर ससुरक किडनी तँ खराप भइए गेल रहनि। ओहि समयमे डायलिसिसक नव पद्धति सीओपीडी आएल रहैक । तकरे

जोगार कएल गेलैक । यद्यपि ओ एकटा बहुत महग आ दुरूह तरीका छल तथापि ओ करीब अढ़ाइ साल ओहि तरीकासँ जीवित रहलाह । मुदा सभगोटे परेसान भए गेलाह । सभसँ बेसी तँ हमर सासुकेँ परेसानी भेलनि । दिन-राति हुनकर सेवा केलथि । पण्डौल-दिल्ली एक कए देलथि । कैकबेर हमरो डेरापर अबैत-जाइत रहलाह । हमरा लेल सेहो ओ बहुत कठिन समय रहए । कारण हमर श्रीमतीजी बहुत संवेदनशील रहथि आ से उचिते । जे से । कहुना कए ओहो समय बिति गेल । अगस्त १९९७मे हुनकर अपन पैतृक गाम पण्डौलमे देहावसान भए गेलनि। हमसभ हुनकर इलाजमे बहुत परिश्रम केने रही ताहि बातक संतोरव रहए अन्यथा कष्ट तँ बहुत भेल । कारण हुनका रहलासँ ओहि इलाकामे हमरासभकेँ एकटा जबरदस्त खाम्ह छल,जे हुनकर देहावसानक बाद सदा-सर्वदाक लेल उखरि गेल ।

श्री जगमोहन

कार्यालयक जीवन कार्यकर्ताक पारिवारिक जीवनकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि । ओकर दिनमे बारह घंटासँ बेसी कार्यालय वा रस्तामे बितैत अछि । कार्यालमे जँ अधिकारी ,सहकर्मी अनुकूल छथि तँ समय नीक कटि जाइत अछि ,जँ किछु उल्टा-पुल्टा भइओ गेल तँ ओकरा सोझराओल जा सकैत अछि । मुदा जँ से नहि अछि,खास कए जँ अधिकारी नीक नहि छथि,तँ भगवाने मालिक । लगभग चालीस सालक सरकारी नौकरीक दौरान एहन कतेक कटु-मधु अनुभव भेल । जखन हम गृह मंत्रालयक दिल्ली डेस्कमे काज करैत रही तँ तीन साल (१९९२-९५)हम श्री जगमोहन(युटी काडरक प्रोन्नतिसँ बनल आइएएस)क अधीन काज करैत रही । पहिले दिन जखन हम हुनका लग पहुँचलहुँ तखन हम हुनका एकटा अधीनस्थ

अधिकारीकेँ गदहा कहैत सुनलिअनि आ ओहो मुस्काइत सुनैत रहए । जगमोहनजी हमरा कोठरीसँ बाहर चलि जेबाक हेतु कहलाह,एहि लेल जे कहीं हुनकर व्यवहार देखि हम घबरा ने जाइ। मुदा ओ तँ हुनकर नित्यप्रतिक अभ्यास छल । जहाँ कोनो बाहरी व्यक्ति आएल कि कोनो अधीनस्थ कर्मचारी वा अधिकारीकेँ बजा कए ओकरा हुटिंग करए लगितथि जाहिसँ आगन्तुक बूझए जे ओ कतेक पैघ आदमी छथि आ अधीनस्थ सभकेँ कोना नाथि कए रखैत छथि ।

आब जखन हमरा हुनका अधीन पोस्टींग भइए गेल रहए तखन अगुतेलासँ किछु फएदा होइत नहि । अपितु,घाटे भए सकैत छल । तेँ धैर्यपूर्वक हम हुनकासंगे काज करबाक तरीका तकलहुँ । बादमे ओ अपने कहलाह जे हुनकर बाजब कनी कठोर भए जाइत छनि ,तकरा ध्यान नहि कएल जाए । हुनकामे कैकटा गुण सेहो छल जाहिसँ हमसभ फएदा उठाबी । जँ हुनकर अंग्रेजीक लोहा मानि लेल जाइत तँ ओ सभटा काज अपने करबा हेतु तैयार रहैत छलाह । बस हुनकर अहंकेर रक्षा हेबाक चाही । कोनो रुक्ख जबाब नहि देबाक चाही । जँ से केलहुँ तँ मौका ताकि कए ओ बदला निकालैत छलाह आ संबंधित व्यक्तिकेँ बहुत तंग करैत छलाह । हुनकर इच्छा रहैत छलनि जे जाबे ओ बैसल छथि ताधरि केओ नहि जाए,सभ कार्यालयमे उपस्थित रहए । जँ हुनका बिना बतओने घसकि गेलहुँ तँ दोसर दिन अहाँक भगवाने मालिक । ई बात नहि रहैक जे हुनका अपन एहि तरहक रुक्ष आ प्रतिशोधी व्यवहारक कारण दुख नहि होनि,अपितु ओ कैकबेर अफसोचो करथि मुदा आदतिसँ लाचार छलाह ।

लेडी हार्डिंगमे काज करैत जगमोहनजीक पत्नी डाक्टर माहेश्वरी शर्मासँ भेंट भेल । हुनकर स्वभाव जगमोहनजीसँ एकदम अलग रहनि । ओहि समयमे ओ एनेस्थिसिआ विभागक प्रधान छलीह । स्वभावसँ सख्त मुदा इमानदार छलीह । सही बातपर ओ प्राचार्यासँ सेहो अड़ि जाइत छलीह । हुनका कालेजक परिसरमे बड़ीटा मकान भेटल छलनि । बादमे सेवानिवृत्तिक बादओ ओ कैकसाल ओहि मकानमे रहि गेलथि जाहि कारणसँ नियमानुसार हुनकापर मकानसँ निकालबाक हेतु कारवाइ भेल । हमरा हुनकर मकान खाली कराबए पड़ल । मकानमे बेसीदिन रहि जेबाक कारण जुर्माना लगबए पड़ल । एहिबातसँ जगमोहनजी तमसा गेलाह । हुनका होनि जे हम उचित मदति नहि केलिअनि । हुनकर ई सोच गलत छल । एहि मामिलामे नियम/कानून बहुत स्पष्ट छल । बादमे एकदिन ओ अपने फोन कए कहलाह -"आपने जो किया सो सही था । हमारे कई साथियों ने बताया कि आप इस में कुछ अलग कर ही नहीं सकते थे । मैं नाहक आपसे नाराज हो गया था । मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मन में इस अपराधवोध के साथ इस दुनिया से नहीं जाना चाहता हूँ । इसीलिए सोचा कि आपको फोन करके अपनी गलती मान लूँ ।"

एहि फोनक बाद बहुतदिनसँ हुनकासँ भेंट नहि भेल । किछु साल पूर्व पता लागल जे हुनकर पत्नीक देहांत भए गेलनि । आब ओ करवनो बच्चासभ लग तँ करवनो असगरे अपन मकानमे रहैत छथि ।

श्री जगमोहनजीक बदली भए गेलाक बाद श्री प्रदीप सेन,श्री भास्कर खुलबे आ अंतमे श्री अजय श्रीवास्तवजी निदेशकक रूपमे हमर अधिकारी रहलाह । श्री प्रदीप सेन आ श्री खुलबे एक-एक

साल धरि रहथि । तकर बाद हुनकर बदली अन्यत्र भए गेलनि । मुदा श्री अजय श्रीवास्तवजी रहबे करथि तखने हमर प्रतिनियुक्तिपर लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्लीमे मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक पदपर नियुक्ति भए गेल । श्रीवास्तवजी बिना कोनो परेसानीकेँ हमरा दिल्ली डेस्कसँ कार्यमुक्त कए देने रहथि ।

श्री प्रदीप सेनजी समयमे हम ट्युशनक काज करैत रही । ताहि हेतु हमरा बहुत-बहुत दूर बससँ जेबाक होइत छल । तेँ हम प्रयास करी जे कार्यालयक सभटा काज समयसँ निपटा ली आ साढ़ेपाँच बजे कार्यालयक समय पूरा होइतहि निकलि जाइ । मुदा प्रदीप सेनजीकेँ ई बात नीक नहि लागनि । ओ चाहथि जे जाबे ओ कार्यालयमे छथि ताधरि हमहु बैसी । हुनका हमर अगिला कार्यक्रमक कोनो जानकारी नहि रहनि । तेँ ओ सोचथि जे हम परिश्रमसँ बँचबाक फिराकमे रहैत छी जे सही बात नहि छल । जतेक परिश्रम हम दिनभरि करी आ तकर बादो करी से कमगोटे करैत रहल होएत । जे किछु,साल भरिक बादे हुनकर बदली भए गेलनि । हुनका गेलाक बाद श्री खुलबेजी दिल्ली डेस्कमे अएलाह । हुनका संगे हमरासभक समय बहुत नीकसँ बितल । ओ स्वयं बहुत परिश्रमी छलाह आ हमरा लोकनिकेँ व्यक्तिगत स्तरपर मदति करथि । परिणामस्वरुप, सभ कर्मचारी हुनकर प्रशंसक भए गेल । ओ जे कहथि से सभगोटे दौर कए करथि । हुनकासंगे एक सालक समय कोना बिति गेल से नहि बुझाएल ।

स्वर्गीय पी.के.जलाली

स्वर्गीय पी.के.जलाली(केन्द्रीय सचिवालय सेवा) गृह मंत्रालयक यूटी डिबीजनमे सन् १९९६-सँ छ-सात साल संयुक्त

सचिव रहथि । ओ मूलतः कश्मीरी छलाह । हुनका संगे हम दू खेप काज केलहुँ। पहिल खेप सन् १९९६-९७मे जखन श्री भास्कर खुल्वे(आइ.ए.एस,सेवानिवृत्त) हमर निदेशक छलाह । दोसर खेप सितंबर १९९९सँ सितंबर २००१ धरि ।

जलालीजी बहुत तमसाह आ अगुताह लोक छलाह। एकदिन कोनो संसदीयप्रश्नक जबाब हमर व्यक्तिगत सहायक श्री प्रकाश चंद्र पाण्डेय टंकन करैत रहथि । जलालीजी बेर-बेर खुलवे साहेबकेँ ओहि काजक हेतु तगादा करथि । अंतमे दौड़ल प्रकाशक टाइपराइटर लग पहुँच गेलाह । ओ खुलवे साहेब के पुछैत छथि-" और कितना टाइम लगेगा?"

खुलवे साहेब उत्तर देलाह-" पीए अपना काम कर चुका है। अब मसीन को अपना काम करना है ।"

जलालीजी अगुता कए कागज घिचए लगलाह । ओहिक्रममे कागज फाटि गेल । फेरसँ सभटा काज करए पड़लैक। एहने छल हुनकर स्वभाव ।

साल भरि जलालीजीक अंदर काज केलाक बाद संघ लोक सेवा आयोग दिल्ली द्वारा हमर चयन लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजमे मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक रूपमे भए गेल । हम सितम्बर १९९७मे ओतए चलि गेलहुँ । करीब दू साल ओहिठाम काज केलाक बाद हमर प्रोन्नति अवर सचिवक पद पर भए गेल रहए । तेँ हमरा गृह मंत्रालय वापस आबए पड़ल ।

गृह मंत्रालयमे वापस अबितहि हमर पोस्टींग जलाली साहेबक अंदर यूटी डिबीजनमे दिल्ली डेस्कमे कए देल गेल । एहि लेल ओ पहिनेसँ प्रशासनमे प्रयास केने रहथि । हम वापस

ओहीठाम आबि तँ गेलहुँ मुदा एहिबेर हमरा जलालीजीक संगे नहि पटल । हमरा काज सेहो बदलि गेल छल । ओहि समयमे निदेशक रहथि श्री अमिताभ कुमार, आइ.आर.एस. । ओ बिहारेक रहए बला छलाह । नेतरहाटसँ इसकूली शिक्षा प्राप्त केने रहथि । हमरा संगे अपना भरि बहुत नीक व्यवहार राखथि । मुदा जलालीजी संगे निरंतर खटपट होइत रहल। जखन-तखन अपन अधीनस्थ कें बजा कए ओकर हुटिंग करैत रहब हुनका लेल आम बात छल । हुनकर कोठरीमे घुसलहुँ कि ओ शुरु भए जाथि । एहन माहौलमे केओ की काज करत? हुनका लग जाइते लगितए जेना माथामे लकबा मारि देलक । किछु फुरेबे नहि करैत । ओ दिन-राति सिगरेट पीबैत रहैत छलाह । हुनका कोठरीमे गेलापर सिगरेटक दुर्गंध भरल रहैत छल ,होइत जे जलदीसँ बाहर निकलि जाइ । ओ तेहन जिद्दी छलाह जे कहतथि जे हुनकर सामनेमे बैसि कए काज करी । हुनका लग बैसल रहबामे एक तँ सिगरेटक दुर्गंध सुंघैत रहू आ दोसर रहि-रहि कए हुनकर तामसकें बरदास करू । हम लाख प्रयास करी जे ओ हमरा अपन जगहपर जाए देथि जाहिसँ इतमिनानसँ काज करितहुँ,से ओ नहि मानथि । परिणामस्वरुप,काज नहि कएल होइक आ ओ आओर तमसाइथ। एहि तरहें दिन-राति किछु-ने-किछु होइते रहैत ।

जलालीजी एकबेर लंदन गेलाह आ वापस अएलाक बाद अपन कोठरीमे सार्वजनिक रूपसँ सिगरेट पीनाइ छोड़ि देलनि । तकरबाद सिगरेट पिबाक हेतु ओ अपन कोठरीसँ बाहर भए कोनो कोनटामे ठाढ़ भए जाथि । एहिसँ कोठरीमे प्रदूषण कम भेल आ लगैत जेना कोनो दोसर कोठरीमे बैसल छी ।

हमरसभक एकटा संगी रहथि स्वर्गीय कमल कालराजी । जलाली जी हुनकापर करवनो नहि तमसाथि । ओ यूटी काडरक आइ.ए.एस आइ.पी.एस.क मामिला देखैत छलाह । हुनकर काज बहुत महत्वपूर्ण एहि लेल छल जे ओहिमे दिल्लीक पैघ सँ पैघ अधिकारीक व्यक्तिगत हित सामिल रहैत छल । ओना कालराजी बहुत नीक लोक छलाह । हमरे कालोनी सरोजिनी नगरक सरकारी आवासमे रहथि । सामनेमे सरोजिनी नगर मार्केटमे हुनकर कपड़ाक पारिवारिक व्यबसाय रहनि । एकाध बेर ओ हमर डेरोपर आएल रहथि । कार्यालयमे सेहो हमरासभसँ नीके रहथि । जखन कि पूरा यूटी डिबीजन जलालीजीसँ त्रस्त छल आ साइते केओ एहन होइत जे हुनकासँ तंग नहि रहए मुदा कालराजीपर कोनो प्रभाव नहि रहए । एहि मामिलामे ओ अपवाद छलाह। जलालीजीक तँ ई स्थिति छल जे हुनकर संगे काज केने कर्णजी,निदेशक पर्यंत हुनकासँ तंग रहथि । ओ मैथिल रहथि आ हमरासँ बहुत नीकसँ गप्प-सप्प करथि । कहथि –"जहिआ जलालीजी नहि रहैत छथि तहिआ हमर फाइल सोझे,बिना कोनो दिक्कतिकेँ मंत्री धरि चलि जाइत अछि । मुदा हुनका रहलापर की मजाल जे ओ कोनो फाइलकेँ साबूत छोड़थि। सभमे किछु-ने-किछु गलती ताकि लेथि आ शुरु भए जाथि ।"

जलालीजीक संगे दिन भरि काज केलाक बाद जखन साँझमे हम आ हमर पीए श्री प्रकाशचंद्र पाण्डेय नार्थ ब्लाकसँ बिदा होइ तँ रस्ताभरि हुनका मोने-मोने फज्जति करी । एहिसँ मोनक तामस निकलि जाइत आ शांत भावसँ डेरा पहुँची ।

एकदिन हमर तत्कालीन निदेशक अमिताभ कुमारजी कहलनि –"जलालीजी अहाँपर बहुत तमसाएल छथि । हम

कहलिअनि-" हमहु हुनकापर बहुत तमसाएल छी । ओ तँ अहाँक मुँह देखि हम चुप रहि जाइत छी । मुदा आइ नओ-छओ भइए कए रहत ।"

हम बहुत तमसाएल मुद्रामे अमिताभजीक संगे जलालीजीक कोठरीमे पहुँचलहुँ । हमरा हाथमे पहिलेसँ बदलीक दर्खास्त छल । हम तैयार रही जे जलालीजी किछु अर्र-बर्र बजताह आ हम हुनका ओही भाषामे जबाब देबनि । मुदा ओ हमर मोनक बातकेँ बूझि गेलाह आ हमरा तखन किछु नहि कहलाह । हम तुरंत अपन दर्खास्त हुनका दैत आग्रह केलिअनि जे हमरा एहिठामसँ बदली कए देल जाए । ओ हमर दर्खास्तकेँ ऊपर आदेश केलथि-" अनुमोदित बशर्ते हमरा बदलामे कोनो सही व्यक्ति हुनका भेटनि।" तकर बाद बहुत मोसकिलसँ कैकमासक बाद हमर बदली उत्तरपुर्व डिबीजनमे भए गेल । कहि नहि सकैत छी जे हम एहि बातसँ कतेक प्रसन्न रही।

श्री दलीप कपुर

अप्रैल १९९२मे गृह मंत्रालयक दिल्ली डेस्कमे हमर पोस्टींग भेल छल । ओहि डेस्कपर स्वर्गीय एल.एन.आंचल काज कए रहल छलाह। ओ प्रतिनियुक्तिपर दिल्ली मिल्क स्कीममे जा रहल छलाह। हुनके स्थानपर हमरा ओतए पोस्टींग भेल छल । दिल्ली डेस्कमे डेस्क एक पर हम आ डेस्क दू पर श्री दलीप कपुर काज करैत छलहुँ । कपुर साहेब हमरासँ पहिनेसँ काज कए रहल छलाह। हमसभ लगभग पाँच साल संगे काज केलहुँ । गृह मंत्रालयसँ पहिने ओ काबीना सचिवालयमे काज करैत छलाह ।

कपुर साहेब बहुत सहनशील आ विनम्र व्यक्ति छथि । कैकबेर हम जँ कोनो बातपर अढ़ि जइतहुँ तँ ओ सहजतासँ हमर बात मानि लितथि,कम सँ कम विवाद तँ नहिए करथि । एक हिसाबे ओ बहुत बुझनिक व्यक्ति जकाँ अपन समाधान कए लेथि । बेसी झंझट काजक अधिकता आ कर्मचारीक कमीक कारण होइत छल। डेस्क प्रणालीमे कर्मचारीक सहयोग बहुत सीमित रहैत अछि। बेसी काज स्वयं करए पड़ैत छैक । तेँ जौँ अनकर हिस्साक काज आबि जाइक तँ झंझट होइक आ फेर समाधानो होइक । कैकबेर हमरा आ दिलीप कपुरजीमे काज लए कए झंझटि भए जाइत छल । दिल्लीसँ जुड़ल कतहु कोनो चिठ्ठी अबितए तँ लोकसभ ओकरा हमरासभ लग पठा दैक । तकर बाद समस्या होइक जे ओहि काजकेँ करत के? हम वा कपुरजी? फेर जेना ने तेना समाधान होइत ।

श्री जगमोहन दिल्ली डेस्कमे बहुत दिन धरि हमरसभक अधिकारी रहथि । ओ अपने बात बूझथि । जँ हुनकर बात मानि लिअ तखन तँ अहाँ शांतिसँ रहि सकैत छी अन्यथा ओ ततेक तंग करथि जे जिनाइ मोसकिल। आब ओ जँ बेसी राति धरि बैसल छथि तँ हुनकर इच्छा रहनि जे हमहुसभ बैसल रही । हमसभ तखन तेसर रस्ता निकाली। हम आ कपुर साहेब कनाट प्लेस वा कतहु लगपासमे चलि जाइ,जलखै करी आ घुमैत-फिरैत घंटा-दू घंटाक बाद वापस होइ । ताधरि जगमोहन साहेब कैकबेर ताकि चुकल रहथि। हमसभ किछु बहाना बनबितहुँ-जेना कि हमसभ तँ कनीके काल लेल बाहर भेल रही मुदा वापसीमे बानरसभ घेरि लेलक । ओहो बूझथि,नहि बूझथि से बात नहि,मुदा अंठा दैत छलाह । ताधरि रातिक आठ-नओ बाजल रहैत छलैक । सभ थाकल-

झमारल घर वापस होबए चाहैत छल । ने ओ बेसी गप्प करबाक स्थितिमे रहथि ने हमसभ । छुट्टी होइतहि हमसभ झोरा उठाबी आ बिदा होइ । बादमे तँ जगमोहन साहेब बहुत सुधरि गेलाह ,किंवा हमरा लोकनिक आपसी समझ बढ़ल जाहिसँ नित्यप्रतिक काजमे तनाव कम होइत गेल ।

दिलीप कपुरजी मूलतः हिमाचल प्रदेशक रहनिहार छथि । मुदा आब तँ पकिआ दिल्लीबासी भए गेल छथि । हुनकर पिता दिल्लीक मालवीयनगरमे घर बनओने रहथि जतए ओ अखनहु रहैत छथि । अपनो कपुर साहेब फ्लैट किनने छथि । हुनका दूटा कन्या छनि । दुनूक बिआह भए गेल छनि । पत्नी सेहो स रकारी इसकूलमे शिक्षक छथिन । कुलमिला कए ओ एकटा सुखी गृहस्थ जीवन बिता रहल छथि ।

आब तँ कपुर साहेब सरकारी सेवासँ सेवानिवृत्त भए गेल छथि । तथापि ओ अखनो सरकारी विभागमे सलाहकारक काज करिते छथि । कपुर साहेब बहुत मृदुभाषी,मिलनसार आ सौम्य स्वभावक लोक छथि । एतेक समय बिति गेलाक बादो हमरा ओ मोन पड़ैत रहैत छथि आ मोन पड़ैत रहैत अछि हुनका संग बिताओल गेल पाँच सालक समय ।



श्री प्रकाशचंद्र पाण्डेय

श्री प्रकाशचंद्र पाण्डेयसँ हमर पहिलबेर भेंट भेल जखन ओ दिल्ली डेस्कमे हमर व्यक्तिगत सहायक(पीए)क रूपमे काज शुरु केलनि । ओ नौकरी शुरुए केने छलाह आ हमरासंगे हुनकर ई पहिल पोस्टींग रहनि । हुनकासंगे हुनकर पिता सेहो आएल रहथि,जेना छोटनेना संगे ओकर अभिभावक इसकूल जाइत छथि। ओ सभ उत्तराखंडक रहनिहार छथि । हुनकर पिता सेहो सरकारी सेवामे रहथि ।इन्टर पास करिते ओ आशुलेखन सिखि लेने रहथि जाहिसँ हुनका कर्मचारी चयन आयोगक माध्यमसँ ई नौकरी भए गेलनि ।

शुरुमे प्रकाशजीकेँ नौकरी करबामे दिक्कति होनि । हम कैकबेर तमासइतो छलिअनि । कैकबेर रुसि कए ओ घर बैसि जाथि । तखन हुनकर पिता संगे आबि कए हुनकर मनोवल बढ़ाबथि । एहि तरहें हुनकर काज आगू बढ़ल । क्रमश: ओ काजसभ सिखैत गेलाह ।बादमे तँ ओ ततेक पारंगत भए गेलाह जे एकबेर जे टंकित करथि तकरा दोबारा देखबाक काज नहि रहैत छल । साइते कहिओ कोनो गलती भेटैत । सरकारी काजक अतिरिक्त हमर कैकटा व्यक्तिगत काजसभ सेहो ओ बहुत मनोयोगपूर्वक करथि । हम किछुदिन ट्युशन करैत छलहुँ ।

प्रकाशजी विद्यार्थीक हेतु नोटसभ टाइप कए देथि । आओरो कैक तरहें ओ मदति करथि । मधुबनीक मकानकेँ खाली करेबाक हेतु ककरा-ककरा ने चिठ्ठी लिखल गेल । ताहूमे ओएह हमरा मदति करथि । एकबेर कहबाक काज-जे फलानक नामे चिठ्ठी बनाउ । तकर आधाघंटाक बाद सजल-धजल चिठ्ठी भेटि जाइत ।

कैकदिन एहन होइत छल जे हम आ प्रकाश काज करैत रहैत छलहुँ आ सौंसे कोठरी खाली भए गेल रहैत । संसद सत्रक समयमे एहन होइत रहैत छल । हमरा लोकनिक पासमे बहुत काज रहैत छल । कतबो प्रयास कएलाक बादो राति भइए जाइत चल । कारण जखन दिल्ली सरकारसँ जानकारी अबैत तकरबादे संसदीय प्रश्नक जबाब बनाओल जाइत । सभटा काज करैत-करैत कैकबेर दूपहर राति भए जाइत । घर वापस हेबाक कोनो साधन नहि रहैत छल । ओना बेसी राति भेलाक बाद कार देबाक व्यवस्था रहैक मुदा ओ बेसीकाल कारगर नहि भए पाबैत छल । जँ कहिओ काल कार भेटिए गेल तँ ओ जिलेबी जकाँ घुमैत कैकगोटेकेँ पहुँचबैत चलैत । ओहिमे तँ आओर देरी भए जाइत छल । एकबेर रातुक बारहसँ बेसी भए गेल छल । हम आ प्रकाशजी नार्थ ब्लाकक सामनेमे दिल्ली पुलिसक जीपक बाट तकैत रही जे हमरासभकेँ घर पहुँचबैत। मुदा संवादप्रेषणमे कोनो गड़बड़ीक कारण जीप नहि आबि सकल आा हम दुनूगोटे बाटे तकैत रहि गेलहुँ । बहुत मोसकिलसँ राष्ट्रपति भवनबला द्वारिक आगूमे १०० नंबरबला एकटा जीप ठाढ़ रहैक । ओकरा सभटा बात कहलिऐक तखन थोड़ेक कालक बाद एकटा पुलिसक जीप आएल आ हमरा लोकनिकेँ अपन-अपन घर पहुँचओलक । एहि तरहेँ हम

प्रकाशजीक संगे लगभग ६ साल धरि सुख-दुखमे संगे रहि दिल्ली डेस्कमे काज केलहुँ ।

गृह मंत्रालयमे कतहु ककरोसँ जँ कोनो काज पड़ैत तँ प्रकाशजी ओकरा कए लितथि । प्रशासनसँ जँ कोनो काज पड़ैत तँ ओ ओकरा करबा दितथि । जँ कोनो फाइल नहि भेटि रहल अछि तँ ओ कतहुसँ ताकि अनितथि । कहबाक माने जे प्रकाशजी दिल्ली डेस्क आ हमर समस्यासभक समाधान करबामे माहिर छलाह । क्रमश: हुनकर दक्षताक ततेक प्रचार भए गेल जे कैकटा वरिष्ठ अधिकारीसभ हुनकर माङ करए लगलाह । बहुत मोसकिलसँ हुनका अपना संगे राखि सकलहुँ । काज तँ ओ करबे करथि संगहि हुनकर स्वभाव सेहो बहुत मृदुल छल,व्यक्तित्वमे नम्रता भरल छल। सभसँ ऊपर हमरा प्रतिए व्यक्तिगतरूपसँ ओ निष्ठावान छलाह । हुनकापर हम आँखि मुनि कए विश्वास कए सकैत छलहुँ। एहन लोक आइ-काल्हि कतए पाबी ?

दिल्ली डेस्कमे सन् १९९३-९७क बीचमे लगभग चारि साल प्रकाशजी हमरा संगे काज केलथि । तकरबाद हम लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज दिल्लीमे प्रतिनियुक्तिपर चलि गेलहुँ । दू सालक बाद जखन हम गृह मंत्रालय लौटलहुँ तखन फेर हमर पोस्टींग दिल्ली डेस्कमे भए गेल आ एकबेर फेर प्रकाशजी हमर पी.ए. भए गेलाह । मुदा दूसालक अंतरालमे हुनकामे आ दिल्ली डेस्कमे बहुत परिवर्तन भए गेल छल । तथापि हुनका हमरा प्रति सिनेह ओहिना रहनि। हमर काज ओ ओहिना तत्परतासँ करैत छलाह । मुदा हमरा अपने आब दिल्ली डेस्कमे मोन नहि लगैत छल । तत्कालीन संयुक्त सचिव स्वर्गीय जलालीजीक व्यवहारसँ हम तंग भए गेल रही । तेँ बहुत प्रयाससँ हम ओतएसँ अपन बदली करा एन.इ.(नार्थ इस्ट)

डेस्क चलि गेलहुँ । एहि तरहे प्रकाशजीसँ सेहो हम फराक भए गेलहुँ । मुदा तकर बादो ओ हमरा समय-समयपर भेटैत रहैत छलाह । अखनो कखनो काल हुनकासँ गप्प-सप्प भए जाइत अछि। आब तँ ओ वित्त मंत्रालयमे आप्त सचिव(प्राइभेट सेक्रेटरी) भए गेल छथि । हुनकर पारिवारिक जीवन बहुत सुखी अछि । हुनकर पुत्र बहुत प्रतिभाशाली छथि आ युट्युबपर हुनकर कैकटा कार्यक्रमसभ देखबामे आबि जाइत अछि ।

श्री जीतेन्द्र प्रसाद गुप्ता

ओना हम बहुत बिआहमे बरिआती आ सरिआतीक रूपमे गेल छी,अहूँ गेले होएब मुदा एकटा बिआह बिसरने नहि बिसरा रहल अछि । ओ बिआह थिक हमर सहकर्मी आ मित्र श्री जीतेन्द्र प्रसाद गुप्ताजीक दिल्लीमे भेल बिआह । ओहि घटनाक कैकसाल बिति गेल । मुदा अखन धरि ओ मोन पड़ैत रहैत अछि । कहब जे ओहि बिआहमे एहन की भेलैक,कोन बात रहैक जे बिसरने नहि बिसरा रहल अछि । तँ कहिए दैत छी ।

बिआहक अवसरपर अपना भरि तँ सभ बढ़िआँ सँ बढ़िआँ इंतजाम करैत अछि मुदा जे व्यवस्था हम गुप्ताजीक ओहिठाम देखलहुँ से देखि चकबिदोर लागि गेल । भोजनक सामग्री आ प्रकारक तँ जेना पाँति लागल रहए । जएह वस्तु देखू तकर तरह-तरहक प्रकार राखल अछि । मधुरे अछि तँ अनेको प्रकारक ,फलेक रस तँ कतेक प्रकारक । कोनो एहन वस्तु नहि रहए जकर पाँच-दस प्रकार नहि रहए । खाइत-खाइत अघा गेलहुँ तइओ लागल जेना नब्बे प्रतिशत वस्तुसभ छुटिए गेल । तकर बहुत अफसोच रहए मुदा कएल की जाइत? पेटमे कनिको जगह नहि बाँचल । बर-कनिआक जयमालक हेतु सेहो एकटा विशेष प्रकारक मंडप रहए

जे आकाशमे उठैत गेल आ बहुत ऊपर जा कए बर-कनिआ एक-दोसरकेँ जयमाल पहिरओलथि । सामिआनासँ लए कए तरह-तरहक सजावट कएल गेल छल । वर आ कनिआ पक्षक लोक सुंदर परिधानमे सजल-धजल रहथि । वर-कनिआक तँ गप्पे जाए दिअ । सभसँ ऊपर गुप्ताजीक स्वागत आ मधुर व्यवहार छल । ओतेक व्यस्तताक बाबजूद ओ हमरापर व्यक्तिगत ध्यान दैत रहलाह । आइ कतेको साल बिति गेलाक बादो गुप्ताजीक बेटाक बिआहक उत्सव आ भोज नहि बिसरि सकलहुँ,ने बिसरि सकब ।

स्वभाविक थिक जे अपनेकेँ उत्सुकता होएत जे गुप्ताजी आखिर छथि के? जीतेन्द्र प्रसादजी गृह मंत्रालयमे हमर सहकर्मी,आ मित्र छलाह। ओ गृह मंत्रालय मे बहुतदिन धरि आइपीएस अधिकारीसभक मामिला देखैत छलाह । हुनकर प्रभाव ततेक छल जे देश भरिक आइपीएस हुनकर बात ध्यानसँ सुनैत छलाह । एक बेर हम सपरिवार किछु काजसँ चंडीगढ़ गेल रही । गुप्ताजी चंडीगढ़मे अपन परिचित आइपीएस अधिकारीकेँ हमरासभक ध्यान रखबाक हेतु कहलखिन । तकरबाद कहि नहि सकैत छी हमरसभक कतेक स्वागत भेल । पुलिस बैंड बजा कए हमरासभक आगमनपर स्वागत गान केलक । खान-पानक तँ कोनो हिसाबे नहि छल । रहबाक हेतु सरकारी अतिथि गृह छल । घुमबाक हेतु सरकारी कार छल । एकटा अधिकारी हमरासभक संगे रहि चंडीगढ़क प्रमुख स्थान सभ देखबैत रहलाह । माने जे किछु चाही से सुविधा ओतए हाजिर रहए ।

गुप्ताजीक स्वभाव बहुत विनम्र आ सहनशील अछि। जखन हम दोसर बेर सन् १९९९मे दिल्ली डेस्कमे गेलहुँ तँ गुप्ताजी दलीप कपुरक जगहपर काज करैत रहथि । ओहिठाम फाइलक टाल

लागल छल । बैसबाक जगह नहि रहए । हम आ गुप्ताजी मिलि कए किछुदिन धरि ओहिठाम फाइलसभकेँ हटओलहुँ । तखन तँ ओ बैसब जोगर भेल रहए । गुप्ताजीकेँ दिल्ली डेस्कमे मोन नहि लागनि आ किछुदिनक बाद ओ अपन बदली करबा कए कतहु दोसरठाम चलि गेलाह । तकर बादो हुनकासँ हमर संपर्क बनले रहल ।

सेवानिवृत्तिक बाद स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पदक हेतु आवेदन देबाक हेतु हम हुनका प्रेरित केलिअनि । हम ताधरि ओही पदपर काज कए रहल छलहुँ । ओहि पदपर हुनकर चुनाओ भए गेलनि आ ओ काजो शुरु केलनि। तकरबाद जखन कहिओ हमरा ओ भेटथि,एक पथिआ धन्यवाद दैत रहलाह । आइ-काल्हि एहन लोक बहुत कम होइत अछि । मुदा गुप्ताजी तँ अपवाद छथि। हुनकर व्यक्तित्वक महानता सदिखन मोन पड़ैत रहैत अछि । विद्या,धन आ पद सभकिछु अछैतो ओ अत्यंत विनम्र व्यक्ति छथि। घमंड तँ हुनका जेना छनिहे नहि । निश्चित रूपसँ गुप्ताजी सन लोकसभ एहि पृथ्वीक रत्न छथि । अखनो एहन नीक लोकसभ होइत छथि आ तेँ तँ ई दुनिआ चलिओ रहल अछि ।

एन.इ.डिबीजन

सितंबर २००१मे बहुत मोसकिलसँ दिल्ली डेस्कसँ बदली भेलाक बाद हमर पोस्टींग एन.इ.डिबीजनमे भेल । ओहि समयमे श्री सुरेन्द्र कुमार,आइ.ए.एस एन.इ.डिबीजनक संयुक्त सचिव रहथि । हुनकासँ भेंट भेलाक बाद लागल जेना एकटा नव जीवन भेटि गेल । व्यवहारमे एहन मृदुलता, मधुरभाषी आ विनम्र सुरेन्द्र कुमारजी सँ पहिलेदिनसँ हमर तालमेल भए गेल । एन.इ.डिबीजनक मिज़ोराम डेस्कमे हमर पोस्टींग भेल छल ।

ओहिठाम अपेक्षाकृत बहुत कम काज रहैक आ सुबिधा सभटा । हमरासँ पहिने ओहिठाम श्री जी.एस.मठारूजी काज करैत रहथि आ व्यक्तिगत प्रभावसँ ओहिठाम सभटा सुबिधा रखने रहथि। हमरा गेलाक बाद ओहि सीटपर नित्य काज बढ़ए लागल। मुदा काजसँ कोनो परेसानी थोड़े होइत छैक । काज लेबएबला आदमी नीक हेबाक चाही जाहिसँ अनावश्यक तनाव नहि होअए । एन.इ.डिबीजनमे सएह हाल रहए । संयुक्त सचिव तँ नीक रहबे करथि , निदेशक लोकनि सेहो बहुत नीक रहथि । श्री इन्दीवर पाण्डेय,आइ.ए.एस हमर अधिकारी रहथि । थोड़ेदिनक बाद श्री जतीन्द्रवीर सिंहजी हमर निदेशक भए गेलाह । लगबे नहि करए जे गृह मंत्रालयेमे काज कए रहल छी । एहिठाम कैकटा बहुत जिम्मेबारीक काजसभ हमरा देल गेल । मुदा कोनो परेसानी नहि भेल । मुदा हम बेसी दिन एन.इ.डिबीजनमे नहि रहि सकलहुँ । संघ लोक सेवा आयोग द्वारा हमर चयन प्रशासनिक अधिकारीक रूपमे एमआरटीपी कमीशनमे भए गेल छल आ एक मार्च २००२क हम शाहजहाँ रोड स्थित ओहि कार्यालयमे प्रशासनिक अधिकारीक रूपमे कार्यभार ग्रहण केलहुँ ।

एमआरटीपी कमीशन

एक समयमे एमआरटीपीसी कमीशन बहुत शक्तिसंपन्न कार्यालय रहए । ओतए जेबाक हेतु कतेको गोटे बहुत जोगार करैत छलाह । मुदा हम जखन ओतए गेलहुँ ताधरि ओ कार्यालय बंद हेबाक क्रममे रहए । किछु काज नहि रहि गेल रहैक । कर्मचारी अधिकारी सभ दिनभरि गप्प मारैत रहैत छलाह । पैघ- पैघ अधिकारीसभ कैंटीनमे सिंघारा,कचौरी, रसगुल्ला बनेबाक ओरिआनमे लागल रहैत छलाह। दिनभरिमे एकटा फाइल अबैत

मुदा एकदम सड़ल । तेहन-तेहन प्रस्ताव रहैत जे सोचिओ नहि सकैत छी । हम सोचने रही जे ओहिठाम गेलाक बाद कम सँ कम बैसबाक नीक ओरिआन भए जाएत । गृह मंत्रालयमे तँ सेहो नहि होइत छल । एकहि बेर ततेक रास अवर सचिवक प्रोन्नति भेल छल जे लोक जेना -तेना यत्र-तत्र बैसाओल जाइत छल । मुदा एमआरटीपीसी कमीशनमे सेहो कोनो नीक हाल नहि छल ।१ मार्च २००२क प्रशासनिक अधिकारीक पदभार ग्रहण केलाक बाद हमराजेना-तेना हमरा एकटा संयुक्त निदेशक चौधरीजीक कोठरीमे कुर्सी लगा देल गेल। ओ जखन वापस अएलाह तँ हमरा ओना बैसल देखि बहुत उठापटक केलनि । किछु महिना ओतए ओहिना बैसलाक बाद हमरा एकटा छोटसन कोठरी भेटल । ओतए कम सँ कम चैनसँ बैसलहुँ ।

एमआरटीपी कमीशनक अध्यक्ष छलाह दिल्ली उच्च न्यायालयक न्यायाधीश न्यायविद् सी.एम.नायर । हम ओतए प्रशासनिक अधिकारीक रूपमे काज करए गेल रही । हमरा ऊपर उप सचिव आ सचिव एमआरटीपी कमीशन रहथि । मुदा हुनका लोकनिक इच्छा रहनि जे हमरा अध्यक्षजीक संगे लगा देल जाए । ई बात अध्यक्षजीकेँ पता लगलनि । ओ हमरा पुछलनि। हम हुनकासभ बात कहलिअनि । ओ आदेश देलखिन जे हम प्रशासनिक अधिकारीक पद हेतु चयनित भेल छी आ ओही पदपर काज करब ।

सचिव आ हुनका सह पर आनो अधिकारी सभ अध्यक्षकेँ सही जानकारी नहि देथि । ई बात देखार तखन भेल जखन कि अध्यक्ष महोदय अपन मेडिकल बिलक भूगतानक स्थिति पता लगबए हमरा कंपनी काज मंत्रालय पठओलथि । ओहिठामसँ

वापस आबि हम हुनका सही बात बता देलिअनि ,जखन कि सचिव आ अन्य अधिकारी हुनका गलत सूचना देथि । हुनकर पुत्र कैंसरसँ पिड़ित छलाह । तकर इलाजक क्रममे बहुत खर्च होइत छलनि । सीजीएचएसक बिल भूगतानक स्वीकृतिक हेतु फाइल मंत्रालय गेल रहैक । जखन हम सही बात अध्यक्षजीकेँ कहलिअनि तँ ओ अपनो स्तरसँ तकर पुष्टि केलनि आ हमर बात सही बूझेलनि। तकर बाद तँ हमरा ऊपर हुनका अटूट विश्वास भए गेलनि । कोनो बातमे हमर विचारकेँ प्रमुखता देथि । ई बात सचिव आ अन्य अधिकारी लोकनिकेँ कतहु नीक लागनि? सचिव महोदया हमरा तंग करए लगलथि । हम जा कए सभटा बात अध्यक्षजीकेँ कहलिअनि आ आग्रह केलिअनि जे हमरा गृह मंत्रालय वापस पठा देथि कारण सचिवसँ लड़ि कए ओतए हम कतेक दिन रहि सकब? अध्यक्षजी तुरंत सचिवकेँ बजओलथि आ हमरा सामनेमे हुनका स्पष्टतासँ कहलखिन –"आपलोग मिश्राजी को तंग मत करिए । वे बहुत सही आदमी हैं और ठीक काम कर रहे हैं ।" तकरबाद तँ सचिव महोदयाक सीटीपीटी गुम पड़ि गेलनि आ फेर कहिओ हमरा ओ तंग नहि केलथि । मुदा बादमे हमर बदली भेलाक बाद वार्षिक गोपनीय पंजिका लिखबे नहि करथि । किछु-ने-किछु बहाना बना देथि । मुदा हमर कैकबेर आग्रह केलाक बाद ओ सेहो केलनि आ हमर उत्तम एसीआर लिखलनि ।

दिसंबर २००२मे संघ लोक सेवा आयोग नई दिल्ली द्वारा हमर चयन फेरसँ लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्लीमे उपनिदेशक(प्रशासन)क पदपर भए गेल रहए । जखन अध्यक्षजीकेँ हमर जेबाक बात पता लगलनि तँ पहिने ओ मना केलनि । मुदा हमर वारंबार आग्रह केलापर बहुत अनिच्छापूर्वक

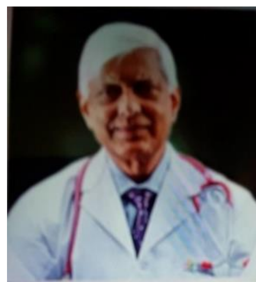
हमरा जेबाक अनुमति प्रदान कए देलनि । एहि तरहेँ दू साल धरि हम ओहि कार्यालयमे समय बिता कए ३ दिसंबर २००२क लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज चलि गेलहुँ ।

सर्वे सन्तु निरामया:

सरोजिनीनगर मकानमे रहिते सन् १९९७ मे संघ लोक सेवा आयोग द्वारा हमर चुनाओ लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजक मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक पद हेतु भेल । तखने हमर चुनाओ एमआरटीपी कमीशनमे प्रशासनिक अधिकारीक पद हेतु सेहो भेल। हम दुविधामे रही जे कतए जाइ । हमर ससुर ओहि समयमे अपन इलाजक क्रममे हमरे डेरापर रहथि । हम हुनका पुछलिअनि जे की कएल जाए? कतए गेल जाए? ओ तुरंत कहलथि-“लेडी हार्डिंग चलि जाउ ।”अफसोचक बात जे जाबे से समय आएल तकर किछुए दिन पहिने हुनकर देहावसान भए गेलनि । ओ अगस्त १९९७मे स्वर्गवासी भेलाह आ हम तकर बाद सितम्बर १९९७मे लेडी हार्डिंगमे मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक पद भार ग्रहण केलहुँ ।

पहिने हम ओहि संस्थानमे कहिओ नहि गेल रही । जखन हमर ओहि पद हेतु चुनाओ भेल आ लोकसभकेँ पता लागि गेलैक तँ लेडी हार्डिंगसँ कैकटा वरिष्ठ डाक्टर आबि कए हमरासँ गृह मंत्रालयमे भेंट केलनि आ हमरा उत्साहित केलनि जे हम ओहिठाम अवश्य चली । हम आश्चर्यमे रही जे ई कोन पद छैक जाहि हेतु एतेक वरिष्ठ डाक्टरसभ पहिनेसँ आबि कए हमरासँ भेंट कए रहल छथि । ओ सभ तत्कालीन प्रशासनसँ कोनो-ने-कोनो वजहसँ तंग रहथि आ सोचथि जे हमरा गेलासँ हुनकासभकेँ उसास हेतनि । आओर किछु भेलनि की नहि भेलनि मुदा एतबा तँ भेबे कएल जे किछुगोटेक प्रति ओ सभ हमरा पूर्वाग्रहित कए देलनि आ से बहुत

दिन धरि बनल रहल आ कुलमिला कए ओ गलत छल । तैं ई जरूरी अछि जे ककरो प्रति पूर्वाग्रहित नहि हेबाक चाही । ककरो बात सुनि कोनो धारणा नहि बना लेबाक चाही । अपितु,दोसरो पक्षक बात सुनबाक चाही तखने कोनो निर्णय लेबाक चाही । न्याय हेतु ई बहुत जरूरी थिक ।



डाक्टर ए.के.दत्ता

लोक कहैत अछि जे मनुक्खेमे भगवान बसैत अछि ।“ क्या जाने किस भेषमे बाबा मिल जाए भगवान रे !”से बात सत्य दर्शन भेल जखन हम लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजमे प्रशासन विभागक प्रमुख(मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भए ओतए गेलहुँ । ओ संस्थान एक हिसाबसँ अपना-आपमे समुद्र अछि । एकसँ एक उदाहरण ओतए भेटि जाएत । नीक सँ नीक,खरापसँ खराप लोकसँ संपर्क ओतए भेल । किछु डाक्टर तँ भगवानक साक्षात स्वरूप छलाह - दैवीय गुणसँ भरल ,नित्य प्रातः स्मरणीय सतत हँसैत आ परोपकारमे लागल । ओहने व्यक्तिमेसँ एकटा छलाह डाक्टर ए.के.दत्ता । दत्ता साहेब वालरोग विभागक अध्यक्ष आ मेडिकल कालेजक उप-प्राचार्य छलाह ।

डाक्टर दत्ता मूलतः आसामक रहनिहार छलाह । समस्तीपुरमे हुनकर काका रहथिन । ओएह हुनका मेडिकल कालेजमे पढ़ाइ हेतु मदति केलखिन । बादमे तँ हुनका स्वयं छात्रवृत्ति भेटए लगलनि । लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्लीसँ संबद्ध कलावती शरण वाल चिकित्सालयक ओ वालरोग विभागक अध्यक्ष छलाह । बीचमे ओ नेपालक धराम स्थित मेडिकए कालेजमे प्रतिनियुक्तिक आधारपर गेल रहथि । ओतएसँ वापस भेलापर ओ फेरसँ लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,नई दिल्लीमे काज शुरु केलनि ।

डाक्टर दत्ता जेहने सिद्धहस्त डाक्टर छथि ,तेहने उमदा व्यक्तित्व । लगबे नहि करत जे एतेक पैघ डाक्टरसँ गप्प कए रहल छी । डाक्टरी मे तँ के-के ने हुनकर लोहा मानैत छथि । हम जखन लेडी हार्डींगमे काज करैत रही तँ एकबेर हमर छोट बालक दुखित पड़ि गेलाह । हुनका बहुत उच्च ज्वर भए जाइत छलनि । आखिर, स्थानीय डाक्टर स्वयं कहलक जे हिनका कोनो वाल विशेषज्ञसँ देखाउ । हम क्षितिज(हमर छोट बालक)केँ लेडी हार्डींग अनलहुँ आ डाक्टर दत्तासँ देखओलिअनि । डाक्टर साहेब हुनका देखि कहलखिन जे दू दिनक बाद एकदम ठीक भए जेताह, कोनो जाँच करेबाक काज नहि अछि । क्षितिज तकर बाद हमरे कोठरीमे रहथि। हमसभ संगे वापस अपन डेरा जइतहुँ। ताधरि एकटा दोसर डाक्टर अएलाह । ओहो हुनका देखलखिन आ तुरंत कैकटा जाँच हेतु लिखि देलखिन । हुनकर बात मानैत जाँच हेतु खूनक नमूना देल गेल । जाँचक रिपोर्टमे कोनो खरापी नहि निकलल आ ठीक दू दिनक बाद क्षितिजक बोखार उतरि गेलनि आ ओ ठीक भए

गेलाह। कहबाक माने जे जँ डाक्टर दत्ताक बात मानि लितहुँ तँ व्यर्थक जाँचसँ बँचि जइतहुँ , से छल हुनकर कमाल ।

पछिला तीन दसकमे साइते केओ वालरोग चिकित्सक होएत जे डाक्टर दत्तासँ प्रभावित नहि भेल हो । ओ मात्र डाक्टरीक ज्ञानक कारणसँ नहि अपितु व्यक्तित्वक विशेषतासँ ककरो प्रभावित कए लैत छथि । सरल,सहज स्वभाव,निरंतर हँसैत ,कोनो प्रकारक दबाबमे नहि आएब,ई सभ हुनकर स्वभाविक गुण छल । एहिसभक अछैत ओ उच्चकोटिक प्रशासक छथि । जखन कखनो ओ कालेजक कार्यकारी निदेशक आ प्राचार्यक पदक काज देखैत छलाह तँ लगबे नहि करैत जे ओ कतहु,कखनो दुविधामे छथि । तुरंत आ सटीक निर्णय करबाक क्षमता हुनकामे भरल छल । निर्णय लेबामे ओ डरैत नहि छलाह । जँ काज सही होइक तँ ओ केहनो कठिन सँ कठिन विषयपर सटीक आदेश करैत छलाह ।

एकदिन हम कनाट प्लेसमे जाइत रही । हमरा आगू-आगू किछु डाक्टरसभ गप्प करैत जा रहल छलाह । ओ सभ डाक्टर दत्ताक बारेमे कहैत रहथि-" डाक्टर दत्ता तो भगवान हैं । हम ने आज तक ऐसा महान व्यक्ति कम से कम डाक्टरों के बीच में नहीं देखा है ।"

हमरा भेल जे ओसभ हमरे मोनक बात बाजि रहल छलाह ।

लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजक काज छोड़ला हमरा बारह वर्ष भए गेल । मुदा अखनो हुनकासँ ओहिना संबंध बनल अछि । जखन कखनो हुनकर मदतिक काज होएत तँ ओ जरूरसँ ओहि काजमे मदति कए दैत छथि । किछुदिन पहिने हमर पोताक जन्म हेबाक छलैक । कोरोना विमारीक बजहसँ अस्पताल जाएब बहुत

चिंताक बात बुझाइत छलैक । हम डाक्टर दत्तासँ संपर्क केलहुँ । ओएह हमरा रस्ता देखओलनि। लगपासमे कार्यरत एकटा प्रसूति विशेषज्ञ महिला चिकित्सक जानकारी देलनि आ मोबाइल नंबर सेहो । तकर बाद हमरा लोकनि ओहि महिला चिकित्सकसँ संपर्क केलहुँ आ सभटा काज सफलतापूर्वक ओएह संपन्न केलीह ।

डाक्टर कुसुम सहगल

लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्लीमे हम दू बेर प्रतिनियुक्तिपर गेल छी । दुनू बेर हमर चुनाओ संघ लोक सेवा आयोगक माध्यमसँ भेल रहए । पहिल बेर सन्१९९७-९९मे आ दोसर बेर सन् २००३-२००८मे । पहिल बेर ओहि पदक नाम छल मुख्य प्रशासनिक अधिकारी जे बदलि कए उप निदेशक(प्रशासन) कए देल गेल । हम जखन पहिल बेर ओतए गेलहुँ तँ डाक्टर कुसुम सहगल ओहिठाम प्राचार्य सह मेडिकल सुपरीन्टेंनडेंट रहथि । ओ महिला चिकित्सकक एकटा समूहसँ घेरल रहैत छलि आ हुनकेसभसँ सलाह कए अस्पताल प्रशासन चलबैत छलीह । हमरो काजमे हुनके सभक बात चलैत छल । हम निश्चय नव रही मुदा बात बुझिऐक । हमरा अधीन प्रशासनिक अधिकारी छलाह श्री शार्दूल । ओहो केन्द्रीय सचिवालय सेवाक रहथि आ हमरासँ बहुत कनिष्ठ रहथि । मुदा हम हुनकर अधिकारी बनि गेल रहिअनि से हुनका पसिंद नहि पड़नि । ओ हमरासँ पहिनेसँ ओहिठाम काज कए रहल छलाह आ डाक्टर कुसुम सहगलक विश्वासपात्र छलाह। मैडम हमरा कैकबेर कहथि जे शार्दूल बहुत नीक अछि,ओकरासँ मिलि कए रहू । से सभ तँ ठीक मुदा जखन शार्दूल हुनका कहए लगलनि जे हमरा आ हुनकामे काज बाँटि देल जाए तँ हम ओकर बहुत विरोध केलहुँ । हम मैडमकेँ कहलिअनि जे ई तँ ओहिना भेल

जेना अहाँ आ उप प्राचार्यमे काज बाँटि देल जाए आ दुनूगोटे सोझे मंत्रालयकेँ रिपोर्ट करी । की संस्थानक प्रशासन एहनमे चलि सकत? दिन-राति झंझटि होइत रहत । अधीनस्थकेँ अपन अधिकारीक बात मानए पड़ैत छैक । ताहिसँ बँचबाक हेतु दुनूगोटेक काज नहि बाँटल जा सकैत अछि । जे-से । हमर विरोधक बाद ई प्रस्ताव लागू नहि भेल । क्रमशः शार्दूल सेहो परिस्थितिसँ सामंजस्य बैसबाक प्रयास केलथि । डाक्टर कुसुम सहगल प्रशासकीय काजमे चुस्त-दुरुस्त नहि रहथि । तकर परिणाम होइत छल जे कनीकोटा समस्या भेलापर सभ विभागाध्यक्षकेँ प्राचार्यक कार्यालयमे बजा लितथि । एहन दृश्य ओतए होइतहि रहैत छल । यूनियनबलासभ नारा बुलंद करैत रहैत छल आ रहि-रहि कए प्राचार्यक कार्यालयक समक्ष धरना दए दैत छल । जहाँ किछु भेल कि प्राचार्या हमरा बजा लितथि आ भरिसक प्रयास करितथि जे बात हमरापर टारि देल जाए ।



प्रोफेसर(डा०) जी.के.शर्मा

हम जखन दिसंबर २००३मे दोसर बेर लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज गेलहुँ तखन प्रोफेसर(डा०) जी.के.शर्मा जी प्राचार्य सह मेडिकल अधीक्षकक पदपर काबिज रहथि । हम जखन पहिल बेर

ओतए गेल रही तँ ओहि समयमे ओ फोरेनसिक विभागक अध्यक्ष रहथि । तखन हमरा हुनका संगे बहुत घनिष्टता नहि भेल रहए । मुदा एहि बेर लगभग पाँचसाल हम हुनकर अंदरमे काज केलहुँ । हमरा जीवनमे एहन नीक आ मदति करएबला अधिकारी नहि भेटलाह । ओ निरंतर शांत रहएबला व्यक्ति छलाह । सभपर सहज रूपसँ विश्वास करथि । ओ कहथि जे तकर प्रेरणा हुनका अपन माएसँ भेटलनि । हुनका माए कहने रहथिन – "जाबे केओ स्वतः अन्यथा प्रमाणित नहि भए जाए ओकरापर विश्वास करबाक चाही ।" ताहि बातक ओ अक्षरशः पालन करथि । कतबो किछु भए जाइत ओ अगुताथि नहि,ककरो किछु कहथि नहि । कार्यालयमे लोकक असल पहिचान तखन होइत अछि जखन ओ अपन अधीनस्थक संगे नीक व्यवहार करैत छथि । सामान्य परिस्थितिमे वा अनुकूल काज भेलापर तँ केओ नीक बनल रहि सकैत अछि । मुदा ओ एहन व्यक्ति छथि जे प्रतिकूलताक मध्यो अपन सहजता,सरलता आ मृदुल व्यवहार बनओने रहैत छथि । हुनकर एही स्वभावक कारण लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज सन जगहपर ओ कतेको साल सर्वोच्च पद पर बनल रहलाह ।

युनियनक नेतासभ जखन हमरासँ गलत काज नहि करबा सकए तँ ओसभ डाक्टर शर्मा लग हमर सिकाइत करए पहुँचि जाइत छल । मुदा ओ ओकरासभकेँ बहुत द्दढ़तासँ स्पष्ट बात कहैत छलखिन – "इस मामला में मिश्राजी से ही बात करिए । यह नियम कानून की बात है और वे ही इसे नियमानुसार निपटाएंगे ।"

हुनकर एहि स्पष्ट रुखिक परिणाम होइत छल जे युनियनबलासभ कहिओ हमरापर दबाब नहि बना सकल आ ने कोनो गलत काज करबा सकल । कर्मचारी युनियनक नेतासभकेँ

कर्मचारीसभक कोनो परबाह नहि रहैक । कर्मचारीक हित तँ मात्र बहाना रहैत छलैक । असल मकसद तँ अपन स्वार्थ साधब रहैत छलैक । जे कर्मचारी ओकरसभक स्वार्थमे वाधक बनए तकर बनितो काजकेँ ओ सभ लागि कए खराप करबा दैत छल । एक हिसाबे युनियनक नेतासभ एकटा समानांतर प्रशासन चलबैत छल। जे केओ अधिकारी ओकरसभक कब्जामे नहि आबथि तिनका खिलाफ मंत्रालयसँ लए कए ककरा-ककरा ने सिकाइत कए दैत छल । एहि बातसँ अधिकारीसभ सेहो ओकरासभसँ डराइत छलाह,बँचिए कए रहैत छलाह । कारण जँ एकबेर ककरो लिखित सिकाइत भए गेल तँ सालो ओकर फाइल चलैत रहैत छल । केओ देखनाहर नहि जे ओहि सिकाइतक पाछा असल मकसद की अछि?चूँकि डाक्टर शर्मा बहुत सहनशील आ शांत स्वभावक छलाह,तेँ सामान्यतः बात आगा नहि बढ़ैक । मुदा समस्या तखन होइत जखन युनियनक विभिन्न गुट आपसेमे अलग-अलग रुखि बना लेथि । तखन प्रशासन की करितए? ककर बात मानैत? जकरे बात नहि मानल जाइत सएह हंगामा शुरु कए दैत । युनियनक नेता कोन बातपर तमसा जेताह आ की मांग कए बैसताह तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल । कतहु-ने-कतहु तँ डरीर देबे पड़ैत छलैक । बस ओकरासभक हंगामा करबाक ओ एकटा कारण भए जाइत छल । मुदा तमाम दुविधा आ संघर्षक अछैत डाक्टर शर्माजीक वरदहस्त रहलासँ हमरा कोनो विशेष परेसानी नहि भेल आ दुनू खेप मिला कए कुल सातसाल हम लेडी हार्डी मेडिकल कालेजक मुख्य प्रशासनिक अधिकारी /उपनिदेशक(प्रशासन) बनल रहलहुँ । बादमे हम ओतएसँ अपन मूल कैडर मंत्रालय वापस चलि जाए

चाहैत छलहुँ मुदा डाक्टर शर्माजीक अनुरोधपर हमरा रहि जाए पड़ैत छल ।

डाक्टर शर्मा फोरेनसिक विभागमे विभागाध्यक्ष रहथि आ वरिष्ठतामे आन डाक्टरसभसँ बहुत आगू रहबाक कारण कमे बएसमे लेडी हार्डीग मेडिकल कालेज,दिल्लीक प्राचार्य सह मेडिकल सुपरीनटेंडेंट बनल रहथि । हुनकर नायकत्वमे ओहि संस्थानक काज बहुत सुचारु ढ़ंगसँ चलल । सभसाल होबएबला दीक्षांत समारोहक दृश्य अखनहुँ हमरा आँखिक आगू नाचि रहल अछि । विभिन्न प्रकारक सजल-धजल समस्त संकायक उपस्थिति दर्शनीय रहैत छल । ऊपर मंचपर सभविभागक अध्यक्ष,प्राचार्य,मुख्य अतिथि रहैत छलाह । परीक्षासभमे श्रेष्ठता प्राप्त केनिहार विद्यार्थीसभकेँ इनाम देल जाइत छलनि । संस्थानक उपप्राचार्य डाक्टर ए.के.दत्ता उत्कृष्टताप्राप्त केनिहार विद्यार्थी लोकनिक नामक घोषणा करैत छलाह । तकर बाद ओ विद्यार्थी मंचपर अबैत छलाह आ मुख्य अतिथि हुनका मेडल,प्रमाणपत्र दैत छलाह । एहि तरहे ओ कार्यक्रम बहुत सुचारु रूपसँ संपन्न होइत छल ।

लेडी हार्डीग मेडिकल कालेज,दिल्लीमे सालभरि किछु-ने-किछु कार्यक्रम होइते रहैत छल । कैकबेर झंझटो भए जाइत छल। मुदा डाक्टर शर्मा विवादसभकेँ शांतिपूर्ण ढगसँ सपटा दैत छलाह। लगभग पाँचसाल धरि डाक्टर जी.के.शर्माजीक संगे उप निदेशक(प्रशासन)क पदपर काज केलाक बाद हुनका सामनेमे हमर बदली शास्त्री भवन स्थित नवनिर्मित फार्मासिटिकल विभागमे भए गेल । ओहिठामसँ अएलाक बाद बारह वर्ष बिति

गेलाक बादो डाक्टर जी.के.शर्माजीक अद्भुत व्यक्तित्व आ हुनका संग बिताओल समय अखनहुँ मोन पड़ैत रहैत अछि ।

डाक्टर पामेला डिसुजा

लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज दिल्लीक ओहि समयक अविस्मरणीय व्यक्तित्वमे सँ एकटा छलीह डाक्टर पामेला डिसुजा। ओ नेत्र विभागक अध्यक्ष रहथि जे बादमे डाक्टर ए.के.दत्ताकेँ धराम,नेपाल मेडिकल कालेजमे प्रतिनियुक्तिपर चलि गेलाक बाद संस्थानक उपप्राचार्या भेल रहथि । ओहिसँ पूर्व हमरा हुनकासँ बेसी संपर्क नहि रहए । मुदा उपप्राचार्या बनि गेलाक बाद हुनकासँ नित्यप्रति संपर्क होइत रहैत छल ।

डाक्टर डिसुजा केरलक रहनिहार छथि । ओ एम्स दिल्लीक तत्कालीन हृदयरोग विशेषज्ञ डाक्टर संपतसँ प्रेम विवाह केने रहथि। डाक्टर संपत केरलक ब्राहम्ण आ डाक्टर डिसुजा क्रिश्चन । मुदा एहन जोड़ा डिबिआ लए कए ताकब तँ नहि भेटत । दुनूगोटेमे जबरदस्त तालमेल अछि । दुनूगोटे एक-दोसरक धार्मिक स्थानपर संगे जाइत छथि आ एक-दोसरक भगवानमे श्रद्धा रखैत छथि । हमरा एकबेर परेसानीमे देखि डाक्टर डिसुजा हनुमान मंदिर,कनाटप्लेस लग नवग्रह मंदिरमे पूजा करबाक परामर्शे नहि देलथि,अपितु एकटा ज्योतिषीक सेहो पता बतओलनि जे ग्रह आदिक सही जानकारी दैत,आवश्यक पूजा-पाठ करा दैत ।

अपन कर्तव्यक प्रति तँ डाक्टर डिसुजा एहन सचेष्ट छलीह जकर उदारण मोसकिलसँ भेटत । हुनका लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेजमे नित्य आगमनक समय ततेक सही रहैत छल जे हुनका देखि कए घड़ीक समय मिला सकैत छलहुँ । प्रशासनक काजमे ओ

शत-प्रतिशत इमानदारीक व्यवहार रखैत छलि । हमर सौभाग्य जे हमरा प्रति हुनका बहुत नीक भावना रहलनि । ओ एहि बातक बहुत प्रयास केलनि जे हम लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजमे बनल रही । ताहि हेतु ओ कैकबेर बहुत उच्च स्तर धरि प्रयासो केलनि । विभागक छोट-छोट काजक प्रति ओ बहुत संवेदनशील रहैत छलीह । एहि बातक पूरा प्रयास करथि जे कोनो व्यक्तिक काज हरमाद नहि होइक । ताहि लेल हुनका जतेक प्रयास करए पड़ितनि से ओ करितथि ।

सरकारी नौकरीसँ सेवानवृत्तिक बादो हुनकासँ संपर्क होइत रहैत अछि । अखनहुँ ओ ओहिना छथि जेना रहथि -सतत सचेष्ट,मदति हेतु तत्पर आ अनका प्रतिए संवेदनशील । सरिपहु एहन लोकसभ एहि पृथ्वीक रत्न छथि आ दुनिआ चलिते अछि हिनके सन-सन नीक लोकक सहृदयतासँ ।



डाक्टर एस.के जैन

लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्ली गेलासँ हमरा स्वास्थ्यक प्रति जागरुकता बढ़ल । डाक्टरसभसँ गप्प-सप्पकक क्रममे कतेको तरहक बात बूझबामे आएल । हम नियमित मेडिकल जाँच करबए लगलहुँ । समय-समयपर कतेको तरहक त्रुटिसभ भेटल

जकर उचित इलाज कए स्वास्थ्यमे सुधार भेल । ओना संयमित जीवनक अभ्यस्त हम शुरुएसँ छलहुँ । मुदा चिंता करबाक अभ्यास रहबाक कारण स्वास्थपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत छल । निन्नक समस्या से छल । एहीक्रममे हमरा डाक्टर एस.के.जैन आ डाक्टर आर.के धमीजासँ संपर्क बढ़ल । दुनूगोटे समय-समयपर हमरा बहुत मदति केलनि जाहिसँ हम अखन धरि लाभान्वित भए रहल छी ।

लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्ली अएबासँ पहिने हमरा डाक्टरसभसँ कोनो परिचय नहि छल । हमर सादूजी(स्वर्गीय इन्द्रानंद मिश्रजी) कैंसरक इलाजक हेतु दिल्ली आएल रहथि । ओहिसँ पहिने टाटा हास्पिटल मुम्बईमे हुनकर इलाज कैकसाल धरि चुकल छल । तकरबाद संभवतः ओ हुनका टरका देलकनि । ओहीक्रममे सादूजी दिल्ली आएल रहथि । हुनकर किछु मदति हम नहि कए सकलहुँ । कोनो एहन जोगार नहि लागि सकल जाहिसँ एम्सक कैंसर विभागमे हुनका भर्ती कएल जा सकैत । ओ दर्दसँ छटपटाइथ तथापि ओपीडीमे देखलाक बाद डाक्टरसभ हुनका टरका दैत छलनि । अंततः ओ ओहिना फेर मुम्बई चलि गेलाह । मुम्बईसँ वापस अएलाक किछु महिनाक बाद लगभग पचाससालक बएसमे हुनकर पटनामे देहांत भए गेलनि । हमरा अखनो एहिबातक दुख रहैत अछि जे हुनका उचित डाक्टरी इलाज दिल्लीक एम्समे नहि भए सकलनि ।

हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्करकेँ माथमे चोट लागि गेल रहनि । तीन-चारिटा टाका लगलनि । टाका कटबासँ पूर्व न्युरोसर्जनसँ देखेबाक हेतु सफदरजंग अस्पताल गेल रही । संसदक सत्र चलि रहल छल । बहुत मोसकिलसँ आधादिनक छुट्टी लेने रही ।

घंटाभरिसँ सपदरजंग अस्पतालक ओहि डाक्टरक कोठरीक बाहर हमसभ बैसल रहलहुँ मुदा ओ एकटा महिलासंगे गप्प करबामे व्यस्त रहलाह आ तकर बाद हमरासभकेँ बिना देखने चलि गेलाह। कहि नहि सकैत छी जे हमरा तखन कतेक दुख भेल रहए ।

जखन हम लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्ली गेलहुँ तँ नित्य किछुगोटेक इलाजमे मदति करैत रहलहुँ । ओहिठाम काज केलासँ डाक्टर एतेक सुलभ हेताह से नहि सोचने रही । तखन सभ समाजमे सभ तरहक लोक होइत अछि । नीक-बेजाए कतए नहि होइत अछि । सएह हाल लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजक रहए । डाक्टर एस.के जैन,डाक्टर आर.के.धमीजा ,आओर किछु अन्य डाक्टर लोकनि ओही कोटिमे अबैत छथि जिनकापर अपन श्रेष्ठता हाबी नहि भए सकल अछि,जे अपन मनुष्यताकेँ बहुत नीकसँ बचओने छथि ,जिनकासँ ततेक उपकार भेल अछि जकर वर्णन करब मोसकिल । लेडी हार्डींग छोड़लाक बारह वर्ष बिति गेलाक बादो ओ सभ मदति करिते छथि । अखनो फोनेपर स्वास्थ्य संबंधी समस्याक समाधान कए दैत छथि ।

सन्२०१५मे जखन हमर माए दुखित रहथि आ दिल्ली हमरा संगे रहथि तँ डाक्टर एस.के.जैन हुनका अपना वार्डमे भर्ती करा कएक दिन धरि इलाज करैत रहलाह । अपना घरपर सेहो हुनका देखने रहथि । एहि तरहें हमर कतेको इष्ट-मित्रकेँ ओ मदति केलाह आ कइए रहल छथि । हमर सासुकेँ तँ कहि नहि कतेको बेर ओ मदति केलाह । हुनका हड्डीमे दर्द रहैत छलनि । हाथमे फोका भए जाइत छलनि । लगनि जेना हड्डी जरि रहल अछि । डाक्टर जैनक इलाजसँ ओ एकदम ठीक भए गेलीह । हमर श्रीमतीजीक माइग्रेनक परेसानी तेहन भयानक छल जकर वर्णन करब

मोसकिल। एकबेर जँ शुरु भए गेल तँ तीन-चारि दिन धरि दर्दसँ छटपटाइत रहैत छलीह । डाक्टर जैनक इलाजसँ ओहिमे नब्बे प्रतिशत सुधार भेल । आब ओ बहुत हदधरि ठीक छथि आ बिरलैके माइग्रेनक सिकाइत होइत छनि ।



डाक्टर आर.के.धमीजा

पहिने लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्लीमे न्युरोलोजी विभाग नहि छल । आब किछु साल पहिने स्वतंत्र रूपमे न्युरोलोजी विभाग बनल अछि जकर डाक्टर आर.के धमीजा विभागाध्यक्ष छथि ।डाक्टर धमीजा पहिने मेडीसीन विभागमे प्रोफेसर छलाह। हमरा जखन डाक्टरी सहयोगक काज रहए तँ बेसीकाल हुनकेसँ मदति ली । मुदा बादमे तीनसालक न्युरोलोजीसँ संबंधित कोनो पढ़ाइक हेतु ओ आस्ट्रेलिआ चलि गेलाह । कैकबेर तँ ओतहु सँ ओ हमरा डाक्टरी परामर्श कए देथि ।आस्ट्रेलिआसँ पढ़ाइ पूरा केलाक बाद ओ वापस लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्ली आबि गेलाह। तकर बादे ओ नव निर्मित न्युरोलोजी विभागक अध्यक्ष बनलथि । एक समयमे ओ अटल विहारी बाजपेयीजीक व्यक्तिगत चिकित्सक रहथि ।

डाक्टरीमे हुनकर हाथ बहुत माजल अछि । हमर कैकटा इष्ट-मित्रकेँ ओ समय-समयपर मदति करैत रहलाह । हमरा तँ

करिते रहलाह । दुखक बात अछि जे एहन सिद्धहस्त डाक्टरकेँ जे सहुलिअत भेटबाक चाही से हुनका नहि भेटनि । आस्ट्रेलिआ पढ़ाइ हेतु जेबाक लेल बहुत मोसकिलसँ हुनका अनुमति भेटल नि। ततबे नहि कैकगोटे तँ हुनका हतोत्साहित करबाक प्रयास करथि। कहथि जे ओ हरदम विदेशेमे रहैत छथि । तथापि अपन लगन,परिश्रम आ प्रतिभाक बलें ओ आइ जे चाहलथि से बनि गेलाह । एतेक समय बिति गेलाक बादो ओ हमर ध्यान रखैत छथि से हुनकर व्यक्तित्वक उदारता आ महानताक परिचायक थिक।

कर्मचारी युनियन

लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्लीक प्रशासनक एकटा मूल समस्या छल-बात-बातमे युनियनक हस्तक्षेप । जँ ककरो बदली कए देलहुँ तँ युनियन ठाढ़ भए जाएत,जँ ककरो खिलाफ कनीकोटा किछु कारवाइ भेल तँ युनियन ठाढ़ ,किछु-ने-किछु बहाना बना कए ओ सभ दिनभरि प्रशासनक चक्कर लगबैत रहैत छल । युनियनोमे कैकटा गुट छल । जे हारल गुट रहैत छल से प्रशासनक खरकाही करैत रहत जाहिसँ जितल युनियन कमजोर भए जाए । मुदा करवन के पलटी मारत आ ककरा संगे के मिलि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल। तेँ ककरोपर विश्वास नहि कएल जा सकैत छल । मुदा ओकरासभकेँ एकदमसँ अंठाओल नहि जा सकैत छल ।

युनियनक नेतासभ कर्मचारीक हितैषी छलाहसे बात नहि छल । ओकरासभक मूल काज अपन व्यक्तिगत फएदा उठओनाइ छल । कैकबेर कोनो कर्मचारीक संगे ओकरा सामनेमे पैरबी करैत आ संबंधित कर्मचारीकेँ हटिते बात पलटि दैत । हमरा कानमे फुसफुसबैत-“सर! इसका काम अभी मत करना । जब हम कहेंगे

तभी करना ,आदि,आदि ।” अधिकारी खास कए प्राचार्य सह मेडिकल अधीक्षकक खिलाफ नारा लागि जाएब कोनो भारी बात नहि छल । मुदा ओ सभ एहि बातक लेल साकांक्ष रहैत छल जे प्राचार्यसँ बात बेसी नहि बिगड़ए । कारण जँ प्राचार्यसँ संबंध बहुत खराप भए गेल तँ कोनो युनियन टिक नहि सकैत छल । तखन बीचमे हमरा ऊपर आक्रमण कए दबाब बनबैत रहैत छल । कैकबेर ओहि कारणसँ हमरा कष्टो होइत छल । मुदा तेँ की? हम ई नियम केने रही जे गलत काज नहि करब आ जँ गलत व्यबहार केलक तखन तँ किछु नहि करब । एहि नियमक बहुत फएदा भेल आ युनियनक कोनो नेता हमरापर हाबी नहि भए सकल ।

युनियन नेतासभ स्वार्थी आ अवसरवादी छलाह । जौँ हुनकर मोनक काज भेल तखन तँ अहाँ सन केओ नहि । मुदा जौँ से नहि भेल तखन ओ कालक रूप धए लैत छलाह । मुदा जँ धैर्य राखल जाए तँ हुनकर नाटक पकड़ा जाइत छल । जहाँ असगर होइतथि कि धर दए पलटि मारि दितथि। जे से । मुदा हमरा हुनकालोकनिक संगे काज केलासँ बहुत किछु सिखबाक मौका भेटल । ओहिठाम काज करैत हमरा ई अनुभव भेल जे प्राचार्यलोकनि युनियन नेताकेँ बेसिए महत्व दैत रहलाह जाहि कारणसँ ओ सभ किछु हदधरि हाबी भए गेल । मुदा समय सभकेँ ठीक करैत अछि। आब तँ सुनैत छी बात बहुत बदलि गेल अछि ।

फार्मासिटीकल विभाग

लेडी हार्डिंगसँ लौटलाक बाद हम अगस्त २००८ मे शास्त्रीभवन स्थित फार्मासिटिकल विभागमे अवर सचिव पदक कार्यभार ग्रहण केलहुँ । फार्मासिटिकल विभाग किछुदिन पहिनहि बनल छल । सुनबामे आएल छल जे तत्कालीन मंत्रीजीक

आग्रहपर केमिकल आ पेट्रोकेमिकल विभागसँ काटि कए एहि नव विभागक सृजन कएल गेल छल । विभाग बनि जेबाक तुरंत लाभ स्वर्गीय अशोक कुमारजी(आइ.ए.एस)केँ भेलनि जे ओ ओतहि सचिव भए गेलाह। मुदा विभाग बनाबएसँ पूर्व जे जरूरी संसाधन छल तकर किछु व्यवस्था नहि कएल गेल रहए । अधिकारी आ कर्मचारी लोकनिक बैसबाक कोनो इंतजाम नहि रहए । सचिव हेतु तँ पैघ कक्षक निर्माण भए गेल मुदा ताहि प्रकरणमे जेहो जगह छल सेहो चलि गेल । कर्मचारीसभ जेना-तेना टेबुल कुर्सीक जोगार कए कतहु-कतहु बैसि जाथि । ओहिमे जे पुरान छलाह से सभ तँ कहुना-ने-कहुना अपन जोगार कए लेलनि । मुदा हम तँ तुरंते गेले रही । हमरा मास-दू मासपर बैसबाक जगह बदलैत रहल । ई हाल तखन छल जखन कि नीचासँ ऊपर धरि ओहि विभागमे बिहारक अधिकारी छलाह । मंत्री पर्यंत बिहारेक छलाह(स्वर्गीय राम विलास पासवान)।

फार्मासिटिकल विभागमे बैसबाक व्यवस्थाक क्रममे हम किछुदिन हिन्दी विभागक संयुक्त निदेशक श्री सचदेवजीक संगे बैसलहुँ । हुनका ई बिल्कुल पसिंद नहि रहनि । एकटा कोनमे हमर कनीकटा टेबुल लगा देने रहए आ ओ बड़का टेबुलपर बैसथि । कोठरीक कुंजी हमरा नहि देथि । हम सामान्यतः हुनकासँ पहिने कार्यालयमे आबि जाइ मुदा कोठरीक कुंजी नहि रहबाक कारणे एमहर-ओमहर बौआइति रही । ई बात हमर तत्कालीन संयुक्त सचिव(श्री जी.एस.संधु)केँ बूझल रहनि । एकदिन सचदेवजी कोनो कारणसँ कार्यालय नहि आबि सकलाह । ककरो माध्यमसँ कुंजी पठा देने रहथिन । संयुक्त सचिवजीकेँ ई पता लगलनि । ओ हमरा बजा कए कहलाह-“आप तुरंत इसका डुप्लीकेट बना

लीजिए.... ।” से कहि ओ जोरसँ हँसि देलाह । हम सएह केलहुँ । जखन दोसरदिन सचदेवजी कार्यालय अएलाह तँ हमरा पहिनेसँ कुर्सीपर विराजमान देखि चकित भए गेलाह । मुदा हमरा किछु कहलाह नहि । दोसरो दिन सएह भेल । तेसरोदिन सएह भेल । हम नित्य हुनकासँ पहिने अपन कुर्सी दफानि ली । आब तँ हुनकर धैर्य जबाब दए देलकनि । आखिर ओ हमरासँ पुछलाह-“आपको चाभी कैसे मिली ।” हम हुनका सभ बात कहलिअनि । ओ की बजितथि? मुदा सुनलिऐक जे प्रशासन विभागमे जा कए अधिकारीसभसँ बहुत झगड़ा केलनि। जे से । थोड़ेदिनमे ई मामिला शांत भेल ।

एकदिन हम शास्त्री भवन स्थित बिकानोक दोकानसँ रसगुल्लाक दूटा पाकिट किनलहुँ आ ओकरा अपन बैगमे रखने रही जे छुट्टी भेलाक बाद घर लए जाएब । संयोगसँ ओकर रससभ नीचा बहि गेलैक । सौंसे कोठरी रसगुल्लाक रससँ लसफस करए लागल। आब तँ हुनकर तामस देखैत बनैत छल । हम नीचा तकलहुँ तँ हाल -बेहाल छल । सौंसे रसगुल्लाक रह पसरि गेल छल । हमर बैगमे राखल कागजसभ सेहो भिजि गेल छल । अपनाभरि रससभकेँ साफ करबाक प्रयास केलहुँ । मुदा ओ तँ बहुत मात्रामे छल । आखिर,दोसरदिन सफाइकर्मी ओकरा नीकसँ साफ केलक। हम सचदेवजीसँ घटी माङलहुँ । मामिला जेना-तेना समाप्त भेल।

किछु दिनक बाद शास्त्री भवनक तेसर तलपर बैसबाक जोगार भेल छल । मुदा थोड़बे दिनक बाद श्री अरुण झाजी संयुक्त सचिव बनि कए आएल रहथि आ हमर जगह ओ अपन आप्त सचिवकेँ दिआ देलखिन। एक बेर फेर हमरा लेल बैसबाक जगह ताकल गेल । पाँचम तलपर एकटा कोठरीमे जेना-तेनाक बैसाओल

गेलहुँ । सामनेमे संयुक्त सचिव श्री देवेन्द्र प्रसादक कोठरी छलनि। हुनका संगे डेढ़ साल काज करब एकटा दुखद अनुभव छल । कैकबेर तँ अनेरे कर्मचारी आ अधीनस्थ अधिकारी लोकनिकेँ रातिमे बैसेने रहैत छलाह । हमरा नहि मोन पड़ैत अछि जे हुनका रहैत एकहु दिन लोक चैनसँ समय बितओने होएत । आखिर हमर प्रोन्नति उप सचिवक पदपर भेल आ हम योजना आयोग चलि अएलहुँ ।

एही विभागमे काज करैत हमरा सरकारी प्रशिक्षणक कार्यक्रममे युरोप यात्राक मौका भेटल । विभागक किछु अधिकारी जी-जानसँ प्रयास केलाह जे हम नहि जा सकी । हमर युरोप प्रशिक्षणक प्रस्तावपर सचिव फार्मासिटिकल विभागक स्वीकृति भए गेल छल । तकर बाद आदेश निर्गत हेबाक हेतु जखन फाइल निदेशक(प्रशासन) जौहरीजीक लेल गेल तँ हुनकर अहंपर चोट पड़लनि जे हुनकासँ बिना पुछने मिश्राजीक विदेशयात्राक फाइल कोना स्वीकृत भए गेल ?ओ उल्टा-पुल्टा नोट लिखि हमर विदेश जेबाक प्रस्तावकेँ रद्द करबाक हेतु प्रस्ताव बनओलनि। जखन हुनकर नोट टंकित भए रहल छल तँ हमरा पता लागल । हम हुनका भेंट केलिअनि आ आग्रह केलिअनि जे ओ एहिमे अवरोध नहि करथि । मुदा ओ नहि सुनलाह । तकर बाद हम प्रशासनक काज देखैत तत्कालीन संयुक्त सचिव श्री अरुण झाजीसँ भेंट कए मदति करबाक आग्रह केलिअनि । मुदा ओ कहलाह –“हम तो अभी ही फाइलपर साइन करके सचिव को भेज दिया है ।” तकर बाद हम सचिव श्री अशोक कुमार लग गेलहुँ । श्री अरुण झाजी ओतहि बैसल रहथि । हम सचिवजीकेँ सभबात कहलिअनि । मुदा ओ हमरे बुझाबए लगलाह । ओ कहैत छथि-“इस बार आप मत

जाइए। कार्यालयमे बहुत कम अधिकारी हैं ,काम ज्यादा है । आगे हम आपको अमेरिका भेज देंगे।” हमरा हुनकर बातपर मोने-मोन बहुत हँसी लागल । जतए जेबाक संभावना बनि रहल अछि ताहिठाम तँ ओ अवरोध कए रहल छथि ,आगू के देखलक अछि? जखन हमरा लागल जे बात बिगड़िए जाएत तँ हम संयुक्त सचिव श्री देवेन्द्र चौधरीजीकेँ भेंट कए सभबात कहलिअनि । जे बात छैक,एहि मामिलामे ओ हमरा पक्षमे ठाढ़ भेलाह । ओ जौहरीजीकेँ फोन कए हमरा जेबाक अनुमति देबाक हेतु कहलखिन ,संभवतः सचिवकेँ सेहो कहलखिन । इएहटा एकटा प्रसंग छल जखन हमर संयुक्त सचिवक रूपमे चौधरीजी सकारात्मक रूखि लेलाह आ हुनके चलते हम युरोपक यात्रापर जा सकलहुँ । ई तँ कार्मिक विभागक प्रशिक्षण देबाक कार्यक्रम छल जाहिमे हमरा सन-सन ३६गोटेकेँ एकहि संगे प्रशिक्षण कार्यक्रममे भाग लेबाक छल,जाहिमे किछु दिन विदेशोमे जेबाक छल । एतबेटा बातकेँ बतंगर जौहरी साहेब कए देने रहथि । जेना-तेना बात हमरा पक्षमे सलटल। मुदा सचिवजी हमरासँ अप्रसन्न भए गेलाह । बादमे देखिअनि जे मुँह जेना फुलल छनि । मुदा हम तँ युरोप तीन सप्ताह घुमि आएल रही। केओ प्रसन्न रहओ कि अप्रसन्न । सेवानिवृत्तिक बाद अशोक कुमारजी केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरणमे सदस्य रहथि आ हम ओकील भए गेल रही । हमरा देखि कए कहैत छथि- आप यहाँ आ गए ।"

उप सचिवक पदपर प्रोन्नति भेलाक बाद जखन हम योजना आयोगक हेतु बिदा होइत रही तँ श्री अरुण झाजी संयुक्त सचिवसँ विभागसँ कार्य मुक्ति पत्र लेबए गेलहुँ । तखन पहिल बेर ओ गप्प करैत कहैत छथि-“अहाँ नीक कुल-शीलक लोक बुझाइत छी ।”

अफसोचक बात जे एतबा बूझबा आ कहबामे हुनका एक साल लागि गेलनि ।”

योजना आयोग

अप्रैल २०१०मे योजना आयोगमे उप सचिवक पदभार ग्रहण केलाक बाद बहुत आफियत बुझाएल । सभसँ फएदा तँ फार्मासिटिकल विभागक दमघोटू माहौलसँ मुक्ति छल । योजना आयोग अबितहि ओहिठामक प्रशासनक प्रमुख श्री तुहीन कान्त पाण्डेयजी,संयुक्त सचिवसँ भेंट भेल । ओ हमरा देखिते कहैत छथि-“हमलोग कई दिनो से आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे । किछुकाल हुनकासँ गप्प केलाक बाद लागल जेना ओ बहुत नीकलोक छथि । हुनकर विनम्रता आ मधुर भाषणसँ मोन आनंदित भए गेल । फार्मासिटिकल विभागक संयुक्त सचिवसँ हुनकर कोनो तुलने नहि छल । प्रथमदृष्टया ओ हमरा बहुत नीक लगलाह । हुनका कोठरीसँ निकलितहि हमरा श्री अरुण कुमार अनुभाग अधिकारी(आब उप सचिव)सँ भेंट भेल । ओ हमर पूर्व परिचित छलाह । आओर कैकटा कर्मचारीसभ भेंट लाह जेसभ हमरा संगे गृह मंत्रालयमे काज केने छलाह । श्री वर्माजी तँ हमरा संगे गृह मंत्रालयक दिल्ली डेस्कमे काजो केने रहथि । हुनका लोकनिक ओतए रहलासँ हमरा योजना आयोगमे व्यवस्थित हेबामे बहुत मदति भेटल । चारिम तलपर एकटा स्वतंत्र कोठरी भेटि गेल । ओहिमे कार्यालयक आवश्यकतानुसार सभटा सुबिधाक ओरिआन भए गेल । कहि नहि सकैत छी जे हम ओतए पहुँचि कतेक प्रसन्न रही ।

हम जखन योजना आयोग पहुँचल रही ताहि समयमे ओहिठामक प्रशासन विभागक स्थिति बहुत खराप छल । बहुत

रास जरूरी काजसभ सालोंसँ लंबित छल । कर्मचारीसभक प्रोन्नतिक फाइल जस-के तस पड़ल छल । सभसँ खराप स्थितिमे प्रशासन-३ अनुभाग छल जाहिमे अधीनस्थ कर्मचारीसभक मामिला देखल जाइत छल । हमरा ओहि काजक जिम्मा देल गेल। साल भरिक निरंतरक प्रयासक बाद ओहि काजमे आश्चर्यजनक सुधार भेल ।

हमर कार्यसँ प्रभावित भए संयुक्त सचिव पांडेयजी हमरा योजना आयोगक विभागाध्यक्ष बना देलाह जाहिसँ हमरा बहुत रास वित्तीय शक्ति प्राप्त छल । मुदा ई काज छलैक झंझटिआ । क्रय-विक्रयसँ जुड़ल काजकेँ सोझराएब बानरक नाङरि सोझ करब जकाँ छल । श्री अरुण कुमार बहुत सक्षम आ इमानदार अधिकारी छलाह मुदा ओहो की करितथि?अपनाभरि ओ बहुत प्रयास करथि। मुदा किछुदिनक बाद अवर सचिवमे प्रोन्नत भए ओहो योजना आयोगसँ बाहर चलि गेलाह । हुनका गेलाक बाद हमरा बहुत परेसानी भेल।

सचिवपदसँ श्रीमती पिल्लइ सेवानिवृत्त भए गेलीह । ओ तँ बहुत नीक छलीह। हमराप्रति बहुत आदर भाव छलनि । हुनका स्थानपर सचिव बनलीह श्रीमती सिंधुश्री खुल्लर । हुनकासँ हमर पटरी नहि बैसि सकल । ताधरि श्री पाण्डेयजी सेहो प्रशासनसँ हटि गेलाह । हुनका स्थानपर श्रीमती निधि खरे संयुक्त सचिव बनि कए अएलीह । एहन मजगूत आ दृढ़निश्चयी व्यक्ति हजारों अधिकारीमे एक होइत होएत। संयोग एहन भेल जे हुनका हमराप्रति बहुत नीक धारणा रहलनि । ओ एक समयमे मधुबनीक कलक्टर रहि चुकल रहथि । हमर काज आ व्यवहारसँ ओ बहुत संतुष्ट रहथि आ सदिखन हमरा उचित बचाव करैत रहलीह ।

प्रशासनिक काजमे पारदर्शिता आ इमानदारीक हेतु श्रीमती निधि खरे जानल जाइत छलीह । योजना आयोगक प्रशासनक काज देखैत सेहो ओ एहि बातक प्रयास करैत रहलीह । मुदा तकर किछु दिक्कति सेहो भेल । कैकटा जरूरी सामानसभक क्रय करबामे विलंब भए जाइत छल । योजान आयोगक अधिकारी आ कर्मचारीसभकेँ जरूरी सामान जेना कागज, प्रिंटरक कार्टेज भेटनाइ पराभव भए गेल । लोकसभ हमर खिलाफ भए गेल । मुदा श्रीमती निधि खरेकेँ सभबात नीकसँ बूझल रहनि । हमरा तरफसँ किछु गलती नहि होइत छल । हम कैकबेर लिखि कए देलिऐक जे हमरासँ सामानक क्रयबला काज हटा देल जाए मुदा वरिष्ठ अधिकारी से नहि मानथि । एहिसभ कारणसँ योजना आयोगक अंतिम छओ मास हमरा लेल कष्टकर भए गेल छल ।

यद्यपि परिस्थिति निश्चय प्रतिकूल भए गेल छल एहि दृष्टिए जे कार्यालयमे जरूरी सामानसभक आपूर्ति बाधित भए जेबाक कारण काजमे दिक्कति होइक । मुदा एहि हेतु ककरो दोष देब उचित नहि । कार्यालयमे कोनो सामानक क्रय करबाक हेतु तय प्रक्रियाक पालन बहुत जरूरी होइत अछि । पाण्डेयजीकेँ संयुक्त सचिव प्रशासन रहैत प्रशासनमे इमान्दारी अनबाक बहुत प्रयास भेल रहए। कैकटा अधिकारी आ कर्मचारीक खिलाफ विभागीय कारबाइ शुरु भए गेल रहए । बनिआसभक लंबित बिलसभक भूगतान नहि भए सकल रहए । एहिसभ बातक कुप्रभाव सेहो आगामी निविदासभपर पड़ल । केओ योजना आयोगक निविदामे भाग नहि लेबए चाहए । वारंबार निविदाक सूचना खाली चलि जाए। जखन समानक क्रयक निविदा हेबे नहि करए तँ सामानक क्रय होइत कोना? आपत्तिकालीन शक्तिक प्रयोग कए सचिवक

विशेष अनुमतिसँ किछु सामान किनल जाए मुदा ओ तँ उँटक मुँहमे जीरक फोरन होइत छल ।

योजना आयोगमे गेलाक बाद हमरा काजसँ लादि गेल रहए। तत्कालीन संयुक्त सचिव श्री तुहीन कांत पाण्डेयजीकेँ हमरा प्रति जतेक विश्वास बढ़ैत गेलनि तहिना काजो बढ़बैत गेलाह आ हम करितो रहलहुँ । मुदा ताहिसँ भेल की? उल्टे जखन सामानसभक आपूर्तिमे बाधा होबए लागल तँ चारूकातसँ लोकसभक सिकाइत सुनए पड़ए । मुदा धन्यवाद कही श्रीमती निधि खरेकेँ जे चट्टान जकाँ हमरा समर्थने नहि केलनि,अपितु हमर आग्रहकेँ अछैत हमरा प्रशासनक विभागाध्यक्षक कार्यभारसँ नहि हटेलीह । हुनका विश्वास रहनि जे हम पूरा इमान्दारीसँ काज कए रहल छी आ से बात ओ बजबो करथि ।

रेलमे डकैती

एकदिन हम अपन कोठरीमे बैसल रही कि अचानक एकटा मोट-सोट व्यक्ति बिना पुछने ओतए आबि गेल। हमर चपरासी कानमे कहलक-"सर यह डकैती करता था.... ।" ओ एतबे बाजि सकल छल कि ओ व्यक्ति हमर बहुत लग आबि गेल छल । तँ हमर चपरासी आओर किछु नहि बाजि सकल । हम सकपका गेलहुँ । आगंतुककेँ बैसबाक हेतु कहलिऐक आ चपरासीकेँ लगीचेमे रहबाक हेतु इसारा केलिऐक । ओ आदमी बेस नमगर-पोरगर छल। हम किछु पुछितिऐक ताहिसँ पहिने ओएह बाजए लागल- "सर! हमारे साथ बहुत अन्याय हुआ है । यहाँ का कर्मचारी अगर मेरे साथ गद्दारी नहीं करता तो मैं बच जाता । उसीके बजह से मुझे जेल जाना पड़ा । मेरा पेंशन भी रोक दिया गया । मैं समाज में मुँह देखाने लायक नहीं रह गया हूँ । आप ही मुझे मदत कर सकते हैं।"

ओ एकटा दर्खास्त बना कए अनने छल । हम ओ दर्खास्त राखि लेलहुँ आ ओकरा पनरह दिनक बाद पता करबाक हेतु कहलिऐक। ओ व्यक्ति दिनमे योजना आयोगमे चपरासीक काज करए आ राति कए अंशकालिक डकैती । एक बेर रेलमे डकैती करैत पकड़ा गेल। ओहि दिन ओ कार्यालयमे अनुपस्थित छल । ओकर हाजरी नहि लागल रहैक । न्यायलयमे हाजरी बही मंगाओल गेल आ ओकरा ई दाबी जे ओ ओहि दिन कार्यालयमे रहए ,गलत साबित भए गेलैक। ओकर अपराध सिद्ध भए गेल ।

ठीक पनरह दिनक बाद ओ फेर आएल । ताधरि हम ओकर फाइल पढ़ि लेने रही । फाइल पढ़लासँ पता लागल जे रेलमे डकैती करबाक अपराधमे ओकरा जहल भेल छलैक । तकरबादे ओकर पेनसन रोकल गेल रहैक । ओकरा नौकरीसँ बर्खास्त कए देल गेल छल । ओ कैकबेर ककरा-ककरा ने दर्खास्त पठओने रहए । मुदा किछु नहि भेलैक। फाइल बेस मोटगर भए गेल रहैक । हम ओकरा कहलिऐक-“आप अपना फाइल देख लीजिए । इस हालत में मैं क्या कर सकता हूँ? तथापि आपके दर्खास्त को एकबार फिर ऊपर भेज दूंगा । परंतु,ज्यादा उमीद मत रखिए ।” ओ संतुष्ट भए चलि गेल । बादमे ओकर दर्खास्त एकबेर फेर अस्वीकृत भए लौटि गेल रहैक । से बात ओकरा सूचितो कए देल गेलैक ।

श्री अरुण कुमार

हम जखन योजना आयोग गेलहुँ तँ हमर कैकटा पूर्वपरिचित लोकसभ भेटलाह जाहिमे श्री अरुण कुमार अनुभाग अधिकारी बहुत प्रभावशाली छलाह ।

अरुण कुमार बहुत मजगूत व्यक्ति छथि । योजना आयोगक प्रशासनकेँ पाण्डेयजीक सहयोगसँ दोबारा पटरीपर आनबामे हुनकर बहुत योगदान छल । आइ-काल्हि ओ केन्द्र सरकारक वरिष्ठ मंत्रीक ओएसडीक काज कए रहल छथि।

हुनका तत्कालीन संयुक्त सचिव(प्रशासन) श्री पान्डेयजीसँ बढ़िआँ तालमेल रहनि । पाण्डेयजीक ई गुण रहनि जे काज केनिहार कर्मचारी आ अधिकारीकेँ ओ सोझे बजा लैत छलाह । तहिना जे काज नहि करए तकरा पुछबो नहि करथि । अरुणजी ओहि समयमे बहुत रास अधिकारी आ कर्मचारी लोकनिक खिलाफ आरोपपत्र बनबएमे व्यस्त रहथि । संगहि सामान्य प्रशासन अनुभागक काज सेहो देखथि । हुनका रहलासँ हमरा नीक कोठरी तँ भेंटिए गेल संगहि आन-आन चीज-वस्तु जेना सोफा सेट,टेबुल,कंप्युटर ,लैपटाप सेहो जलदी भेटैत गेल । अरुणजी काजमे माहिर रहथि आ हुनका रहैत हमरा सामान्य प्रशासनक कोनो काज करबामे दिक्कति नहि भेल रहए । थोड़बे दिनक बाद हुनकर प्रोन्नति अवर सचिवक पद पर भए गेल आ ओ आन ठाम चलि गेलाह । हुनका गेलाक बाद सामान्य प्रशासनक काजमे बहुत परेसानी भेल जकर चर्चा पहिने कए चुकल छी ।

जन्म-जन्मक संबंध



स्वर्गीय चंद्रधर मिश्र

स्वर्गीय चंद्रधर मिश्र हमर पितिऔत काका छलाह । ओसभ पहिने हमरे आंगनमे उतरबारि कातमे रहथि । बादमे अगिलग्गीक बाद ओ सभ अपन घरारी बदलि कए पोखरिसँ पूब पाठशाला लग लए गेलथि । हुनकर पिता स्वर्गीय कुमर मिश्र (स्वर्गीय माना मिश्रक पुत्र)इलाकाक मानल संस्कृतिक विद्वान रहथि । ओ एकटा पाठशाला चलाबथि जतए इलाकाक बहुत रास विद्यार्थीसभकेँ संस्कृतमे निःशुल्क शिक्षा देल जाइत छल । ओ अपना दिससँ विद्यार्थी लोकनिक भोजन आ रहबाक व्यवस्था सेहो करैत छलाह। ओही पाठशाल लग काकासभ बादमे बसि गेलाह ।

काकाजी ओहि जमानामे सी.एम.कालेज दरभंगासँ बी.काँम.केने रहथि आ बेसिक मिडल इसकूलमे प्रधानाध्यापकक काज करथि। इसकूलसँ छुट्टी भेलाक बाद ओ गामे आबि जाइत छलाह । गाममे हुनका बहुत आदर कएल जाइत छलनि । ओहुना ओहि समयमे हमरा गाममे के कहए इलाकामे बहुत कम स्नातक रहल हेताह ।

काकाजी बहुत मिलनसार आ मधुरभाषी रहथि । जखन करवनो हुनका लग जाउ,ओ बहुत सिनेहसँ गप्प-सप्प करितथि । कैक बेर तँ बिना भोजनकेँ नहि जाए दितथि । हमरा जखन करवनो मोन परेसान होइत छल हम हुनका लग चलि जाइ । ओ ततेक नीक जकाँ बुझा दितथि जे मोन हल्लुक भए जाइत,उत्साहसँ भरि जाइत।

हमर दियादसभकेँ जखन करवनो कोनो झंझट होइतनि तँ चंद्रधर काका बजाओल जाइत छलाह । हुनकर बातपर सभकेँ अटूट विश्वास रहैक । ओ जे कहि देथि से सभ मानि लिअए आ झगड़ा शांत भए जाइत ।

हमरा लोकनिक परिवारसँ चंद्रधर काकाजीकेँ बहुत घनिष्टता रहनि । ओ जखन करवनो गाममे रहितथि तँ बेसीकाल बाबूक संगे रहितथि । हमरासभकेँ आगू पढ़बाक हेतु ओ निरंतर उत्साहित करैत रहैत छलाह । हुनकर बहुत इच्छा रहनि जे हम एम.एस-सी करी । कहथि जे बादमे पार नहि लगैत छैक । हमरो इच्छा रहए जे एम.एस-सी करी । मुदा बीचेमे हमरा दूरभाष निरीक्षकक नौकरी लागि गेल । तकर बाद तँ नौकरीक से चक्कर शुरु भेल जे लगभग चालीस साल धरि चलैत रहल ।

चंद्रधर काका लगभग पचासी साल धरि जिलाह । हुनका जीवन कालेमे हमर मित्र आ हुनकर ज्येष्ठ पुत्र लालबच्चा(स्वर्गीय विष्णु कान्त मिश्र)क देहांत भए गेलनि । एहि बातसँ ओ बहुत दुखी भेल रहथि । सितंबर २०१५मे काकाजीक देहांत भए गेलनि । एहि तरहें हमर गामक एकटा महान व्यक्तित्व आ हमर परम शुभचिंतक हमरासभकेँ छोड़िकए चलि गेलाह । मुदा हुनकर सहृदयता,उदार व्यक्तित्व,मधुर वाणी आ उत्कृष्ट विचार सदिखन मोन पड़ैत रहत।



मदन मोहन सिन्हाजी

कतहु गेला ,कोनो देशमे रहथि मुदा ओ अपन भेष नहि बदललनि । चाहे दिल्लीक केन्द्रीय सचिवालयमे काजपर होथि वा अमेरिकाक कोनो सहरमे धीया-पुताक संगे ओ सदिखन धोती-कुरता पहिरबे करताह । इएह हुनकर पहिचान अछि । केन्द्रीय सचिवालयमे ककरो कहिऔक जे धती-कुरताबाले सिन्हाजी,कि धर दए हुनका चिन्हि लेत। ई एकप्रकारसँ हुनकर वैचारिक दृढ़ताक परिचायक थिक । अन्यथा आइ-काल्हि तँ लोक गामोमे पैंट-सर्टे पहरैत अछि । जँ मधुबनी-दरभंगा जेबाक भेलैक तखन तँ कोनो बाते नहि । ओना हमसभ जखन सी.एम.कालेज दरभंगामे पढ़ैत रहीतँ धोती आ सर्टमे कालेज जाइ । ई ओतए आम बात रहैक । साइते केओ सर्ट-पैंट पहिरथि । मुदा केओ दिल्ली अएलाक

बादो,ओहो नार्थ ब्लाक सन कार्यालयमे धोती-कुरता पहिरने रहि जाए तँ ओ निश्चय एकटा उदाहरण होएत आ सएह छलाह श्री मदन मोहन सिन्हाजी ।

सिन्हाजी मुजफ्फरपुर लग अम्मा गामक छथि । हिनकर पिताक नाम स्वर्गीय विंदेश्वर सिंह आ माताक नाम स्वर्गीया चन्द्रकला देवी रहनि । सिन्हाजीक पिता चारिभाइ रहथि । हुनकर पिताजी सभसँ जेठ रहथि आ शुरुएसँ परिवारमे रहितहुँ साधु-संन्यासीके भेष धए लेलनि । हुनकर काका(स्वर्गीय अमीर सिंह) संयुक्त परिवारक मालिक भेलखिन आ परिवारक भार अपनापर लेलथि । ओएह सिन्हाजीक माता-पिता,दूटा बहिन आ हिनको पालन-पोषण केलनि । सिन्हाजीकेँ संयुक्त परिवारमे बहुत सिनेहसँ पालन-पोषण भेलनि । हिनका परिवारमे बौआ कहल जानि । सिन्हाजीक शिक्षाक व्यवस्था हुनकर पित्ती केलखिन । ओ अंग्रजीमे बी.ए.प्रतिष्ठा कए केन्द्रीय सचिवालय सेवामे सहायक ग्रेडमे संघलोक सेवा आयोग दिल्ली द्वारा संचालित प्रतियोगिता परीक्षा पास कए दिल्ली केन्द्रीय सचिवालयक गृह मंत्रालयमे काज करथि । बादमे जखन सिन्हाजीक पितिऔतसभक बिआह भेलनि तँ मालिक काकाक प्रयासक बादो परिवारमे ओ सामंजस्य नहि रहि गेल आ सिन्हाजीक माता-पिता आ बहिनलोकनिकेँ स्थिति कष्टप्रद भए गेलनि ।

एक हिसाबे सिन्हाजीक छोट काका(स्वर्गीय अमीर सिंह) बहुत त्याग केलनि आ संयुक्त परिवारक हेतु एकटा उदाहरण बनि गेलथि । पहिने एहिना हेबे करैक । एकटा परिवारमे कैकटा विधवा,अवोध नेनासभ रहैत छल आ तकरसभक नीकसँ पालन-पोषण होइक । बेटा आ भातिजमे कोनो भेद-भाव नहि होइक ।

मुदा आब तँ समय बदलि गेल । संयुक्त परिवारसभ टुटि गेल । भरल-पुरल परिवारकेँ अछैते वृद्ध माता-पिताक केओ देखनिहार नहि रहैत अछि । कैकबेर माता-पिताकेँ संतानसभमे अलग-अलग स्थानपर बटबारा भए जाइत अछि । एहिसँ पैघ क्रूड़ता की भए सकैत अछि जे बूढ़ माता-पिता जीवितो एक-दोसरसँ फराक रहैत होथि आ आपसमे गप्पो नहि कए पाबथि ?मुदा से आब भए रहल अछि ।

अगस्त १९७७मे गृह मंत्रालयमे काज शुरु केलाक बाद हमर सिन्हाजीसँ भेंट भेल छल । मुदा थोड़बे दिनक बाद हम इलाहाबाद चलि गेलहुँ । इलाहाबादसँ मार्च १९८७मे दिल्ली वापस भेलाक बाद फेर नार्थ ब्लाक स्थित न्याय विभागमे हुनकासँ भेंट भेल रहए । हमर पोस्टींग जेआइसीमे कए देल गेल रहए जे नीक नहि मानल जाइक । कैकगोटेकेँ तँ जेआइसी पोस्टींगक नामे सुनि कए हृदयाघात भए गेल रहैक । हम सिन्हाजीकेँ अपन पोस्टींग दए कहलिअनि । ओ कहलाह-"आँखि मुनि कए ओतए चलि जाउ । भगवान नीके करथिन।" हम सएह केबो केलहुँ । आओर कोनो विकल्पो नहि रहए । हुनकर अनुमान सही भेल । हमर समय ओहि विभागमे बहुत नीकसँ बितल । कोनो प्रकारक परेसानी नहि भेल। आश्चर्य लागए जे लोकसभ ओकरा एतेक भयावह किएक बना देने रहैक?

कार्यालयमे ओ अपन काजमे माहिर छलाह । न्याय विभागमे हुनकर काज बहुत कठिन छल । केओ ओहि सीटपर जेबाक साहस नहि कए पाबए । मुदा सिन्हाजी तँ ओतए बरि जीवन नीकसँ काज केलाह आ ओतहिसँ सेवानिवृत्त भए गेलाह । सेवानिवृत्तिक बादो हुनका ओहीठाम सलाहकारक काज भेटैत

रहनि । मुदा ओ मना कए देलथि । दिल्लीमे रहैत आ तकर बाद गामोमे सिन्हाजी योग प्रशिक्षकक काज करथि । एहि तरहें ओ अपना संगे आनो लोकनिकेँ स्वास्थ्य लाभ करबैत रहलाह । मुदा बादमे ई कार्यक्रम नहि चलि सकल ।

सिन्हाजीकेँ दूटा पुत्र आ एकटा कन्या छथिन । हिनकर ज्येष्ठ पुत्र आ पुतहु ,दुनूगोटे अमेरिकामे वैज्ञानिक छथिन । छोटपुत्र सेनामे कर्नलक पदपर छथिन । कन्या सेहो बहुत संपन्न परिवारमे विवाहित छथिन । एहि तरहें हुनकर धीया-पुतासभ जीवनमे बहुत बढ़िआँ स्थापित छथि । स्वयं पत्नी सहित करवनो मयुर विहार ,नई दिल्ली स्थित अपन फ्लैटमे तँ करवनहु गाममे अपन बनाओल घरमे रहैत छथि । हुनकर श्रीमतीजीकेँ गाम बहुत नीक लगैत छनि। तेँ सेवानिवृत्तिक बाद गाममे घर बनओलथि । गाममे समाज सेवाक दृष्टि सँ गरीब धीया-पुतासभक निःशुल्क शिक्षण सेहो करथि । मुदा किछुदिनक बाद ओहिमे तरह-तरहक व्यवहारिक समस्या स्थानीय लोकसभ ठाढ़ करए लगलाह। ककरो नेनाकेँ जँ कनीको किछु कहि देलथि तँ ओ झगड़ा करए पहुँचि जाए । आखिर,तंग भए ओहिसभसँ कात भए गेलाह । थोड़ेक दिन तँ अफसोच होनि जे गाममे घर किएक बनओलहुँ? मुदा आब ओ गाममे रमि गेल छथि। कोरोनाकालमे तँ सालभरिसँ गामेमे छथि । केओ किछु बाजओ,ओ चुप-चाप सुनैत रहि जाइत छथि । एहन सहनशीलतासँ तँ किछु असंभव नहि रहि सकैत अछि । सएह भेवो कएल । आब हुनकर दिआद-बादसभ हुनकासंगे रहबाक अभ्यस्त भए गेल छथि। एकदिन हुनकर अपने लोक कहलखिन् –“सोचैत रहलीं जे कभी-कभी अइहन-जइहन मुदा ई तँ एकरे हेडक्वार्टर बना

लेलथि।" से जकरा जे कहबाक होइक से कहओ मुदा सिन्हाजी तँ आब ओतए खंती गाड़ि देने छथि ।

गाममे घर बनेबाक एकटा इहो उद्येश्य रहनि जे गामक पैत्रिक संपत्तिक रक्षा होएत आ मौका भेटलापर ओकरा बेचि कए बेहतर उपयोग कएल जा सकत । मुदा से संभव नहि भेलनि। कारण हुनकर अपने लोकक बक्रदृष्टि । एकबेर तँ ओ जमीनक बिकरी हेतु किछुटाका अगाउ लए लेने रहथि । मुदा ओ सभ तेहन दृश्य उपस्थित कए देलखिन जे हुनका लेल टाका घुराबए पड़लनि। असलमे ओ सभ चाहैत छथि जे मंगनीएमे सभटा संपत्ति हुनका हाथ लागि जानि । एहन शुभचिंतक आइ-काल्हि सभठाम पसरि गेल छथि जाहिसँ प्रवासी लोकनिकेँ गाम-घरमे रहब मोसकिल भए गेल छनि । हुनकर जे केओ समांग गाममे रहि जाइत छथि से चाहैत छथि जे बाहर रहनिहार लोकसभक जमीन-जायदाद हथिआ ली । एमहर एकसालसँ कोरोनाक कारण दिल्लीमे भेल परेसानीकेँ देखैत गाम बेसी सुरक्षित लागि रहल छनि । ओहुना आब हुनकर मोन गाममे लागि गेल छनि । हुनकर श्रीमतीजीकेँ तँ पहिनेसँ गाम पसिंद रहबे करनि। हुनकासभकेँ लगैत छनि जे बदलैत परिस्थितिमे भविष्यमे गामक आ गामक जमीनक महत्व बढ़त । तेँ आब गामक जमीन बेचबाक विचार बदलि गेलनि। किछुदिन पहिने एकगोटे एहि विषयमे संपर्क केलखिन तँ ओकरा साफे मना कए देलखिन ।

सिन्हाजीक पिताक देहावसानक समाचार जखन दिल्लीमे भेटलनि तँ कनीको उमीद नहि रहनि जे हुनकर अंतिम संस्कारमे जा सकताह । गामपर सँ लोकसभ संस्कारक हेतु मोकामा बिदा भए गेल रहथि । मुदा एहन संयोग भेलैक जे हुनका हवाइ जहाजक टिकटक ओरिआन भए गेलनि आ ओ जेना-तेना मोकामाघाट

पहुँचि गेलाह । एहि तरहें हुनका पिताकेँ मुखाग्नि देबाक अवसर भेटि सकलनि ।

सिन्हाजी स्वभावसँ संयत आ बहुत सात्विक प्रवृत्तिक लोक छथि । सचिवालय सेवामे रहैत अपन सभ संतानकेँ सुयोग्य बना सकलाह आ जीवनमे सभ तरहें व्यवस्थित भए आब निश्चिंत भए सेवानिवृत्तिक आनंद उठा रहल छथि । ओ बहुत आध्यात्मिक आ ठोस विचारक लोक छथि । कोनो विषयपर ओ बहुत स्पष्ट सोच रखैत छथि। ओ निरंतर अपन शुभकामना आ सात्विक परामर्शसँ हमरा लाभान्वित करैत रहलाह आ कइए रहल छथि ।जखन कखनो हमरा कोनो विषयपर दुविधा होइत तँ हुनकर स्पष्ट विचार भेटैत । मुदा कैकबेर तकर अनुपालन हम नहि कए पाबी आ बादमे परेसानीमे पड़ि जाइ । ईश्वर हुनका दीर्घजीवी आ स्वस्थ राखथि जाहिसँ हमसभ बहुत दिनधरि एहिना हुनकर सद्विचारसँ लाभान्वित होइत रही।



श्री कमलाकान्त भंडारी

मिडिल इसकूल अड़ेर आ उच्च विद्यालय एकतारामे हमरासँ एकसाल वरिष्ठ रहथि कमलाकांत भंडारी । हमसभ जखन मिडिल इसकूलमे पढ़ैत रही तखन ओ किछु आओर विद्यार्थीसभक संगे सरकारी कार्यक्रममे भाग लैत दिल्ली दर्शनक हेतु गेल रहथि । ओहि

समय गामसँ दिल्ली जाएब बड़का बात रहैक । सबारीक तेहन सुबिधा नहि रहैक । दिल्लीमे ओ प्रमुख स्थानसभ देखने रहथि । ओतएसँ लौटि अपन अनुभवसँ हमरासभकेँ लाभान्वित केने रहथि। एकतारा उच्च विद्यालयक ओ नीक विद्यार्थीमे सँ मानल जाइत रहथि । तथापि ओ आर्ट्सक विषयसभ लेने रहथि। ओहि समयमे नीक विद्यार्थी सामान्यतः विज्ञानक विषय पढ़ैत छलाह आ डाक्टर,इंजिनीयर बनबाक स्वप्न देखैत छलाह । मैट्रिकक परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ सफल भेलाक बाद ओ पटना कालेजमे नाम लिखओने रहथि आ ओतहि विश्वविद्यालयक छात्रावासमे रहथि । हम प्रतियोगिता परीक्षासभ देबाक क्रममे कैकबेर हुनका संगे छात्रावासमे रहल रही । जे बात छैक,ओ बहुत आदरसँ हमरा रखैत छलाह । ओहीठामसँ हम परीक्षा देबए जाइत छलहुँ ।

कमलाकांतजीक पिता स्वर्गीय मारकंडेय भंडारी अड़ेर पंचायतक बहुत दिन धरि मुखिआ रहल रहथि । इलाकामे हुनकर बहुत प्रतिष्ठा छल । पारिवारिक स्थिति बहुत मजगूत छलनि । हुनकर परिवार आर्थिक रूपसँ बहुत संपन्न छल । तेँ लगपासक गामसभक प्रतिष्ठित परिवारसँ हुनका लोकनिक बहुत नीक संबंध छलनि । कमलाकांतजी कहने रहथि जे एकताराक कृष्णदेव बाबूक पुत्रक सासुरसँ बिदाइमे स्टोभ आएल छल । ओहिमे चाह बनितैक। ताहि जेतु केतली आ कप-प्लेट हुनके ओहिठामसँ पठाओल गेल रहैक । ओहि समयमे स्टोभ होएब आ ताहिपर चाह बनब कतेकटा बात रहैक से एहीसँ बूझल जा सकैत अछि । एहन संपन्न परिवारमे कमलाकांतजीक पालन-पोषण भेल रहनि । विद्यार्थी तँ ओ नीक मानले जाथि । सभकेँ उमीद रहैक जे ओ कोनो बड़का अधिकारी बनताह। मुदा संयोग एहन भेल जे

कमलाकान्तजी पटना विश्वविद्यालयसँ अर्थशास्त्रमे बी.ए.(प्रतिष्ठा) केलाक बाद एम.ए.अर्थशास्त्रक परीक्षा दैत रहथि कि अचानक बहुत जोर दुखित पड़ि गेलाह । परीक्षा छोड़ि कए गाम आबए पड़लनि । पढ़ाइ छुटि गेलनि । तकरबाद बहुत दिनधरि ओ ओहिना गामेमे रहि गेलाह ।

हम जखन इलाहाबादमे रही तखन सन् १९८५मे ओ मैथिलीसँ एमए केलाह । तकरबाद स्वर्गीय डाक्टर सुभद्र झाजी मार्गदर्शनमे कबीरदासपर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसँ पी-एच.डीक उपाधि प्राप्त केलनि । तकरबाद ओ पटना स्थित सरकारी इंटर कालेजमे शिक्षक भए गेलाह आ अंत धरि ओएह काज करैत सेवानिवृत्त भए गेलाह। ओ मैथिली एकेडमी पटनाक सदस्य सेहो रहलाह आ मैथिलीक विकास बहुत तरहक गतिविधिक संचालन करैत रहलाह ।

हम इलाहाबादमे रही कि दिल्लीमे कमलाकांतजी निरंतर संपर्कमे रहलाह । दिल्ली ओ जखन करखनो अबैत छथि तँ अवश्य संपर्क करैत छथि । हम गाम जाइत छी तखन तँ भेंट होइते छथि। हम मैथिलीमे लिखी ताहि हेतु ओ लगातार हमरा प्रेरित करैत रहैत छलाह । दिल्लीमे कैकबेर स्वर्गीय मोहन भारद्वाजजीक संगे ओ अबैत छलाह । हुनके माध्यमसँ हमरा मोहन भारद्वाजजीसँ संपर्क भेल जे क्रमशः घनिष्टतामे बदलैत गेल । ओ कैकबेर हमरा ओहिठाम अएबो केलाह । हमर छोट बालकक पटनामे बिआहक अवसरपर बरिआतीमे कमलाकांतजी आ मोहन भारद्वाजजी दुनूगोटे गेल रहथि ।

सेवानिवृत्तिक बाद ओ गामेपर रहैत छथि । तथापि साहित्यिक गतिविधिमे रुचि बनओने रहैत छथि । हमरा निरंतर

उत्साहित करैत रहैत छथि ।जखन कखनो हमरासँ गप्प होइत छनि तँ हमर पुस्तकसभक चर्च अवश्य करैत छथि।

किछुदिन पूर्व ओ दिल्ली आएल रहथि । मुदा कोरोनाक माहौलक कारण भेंट नहि भए सकल,फोनेसँ गप्प भेल ।

सभसँ प्रसन्नताक बात थिक जे ग्रामीण वातावरणमे रहितहुँ ओ साहित्यिक गतिविधिमे लागल रहैत छथि । मुदा उचित सहयोगक कारण कैकबेर उदासो भए जाइत छथि। आशा करैत छी जे ओ स्वस्थ रहि आगामी अनेको साल धरि साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय रहताह ।



मिसरजी(रबीन्द्र नारायण मिश्र)

हमरा दुनूगोटेक नामे एकहि अछि सएह बात नहि,हमसभ एकहि कार्यालय(गृह मंत्रालय)मे बहुत दिनधरि काज करैत रहल छी । परिणामतः होइ ई जे कैकबेर हुनकर दरमाहाक बदला हमर दरमाहामेसँ कटौती भए जाए। बहुत दिन धरि एहिठाम लोकसभकेँ ई दुविधा बनल रहैक जे दू गोटे एकहि नामक छथि ।बादमे तँ हम गृह मंत्रालयसँ दोसर-दोसर ठाम चलि गेलहुँ । जखन हम गृह मंत्रालय ,भारत सरकारमे पहिल बेर अगस्त १९७७मे काज शुरु केने रही तखनेसँ हमरा मिसरजीसँ परिचय भेल । तकर आब ४३ वर्ष

भए गेल । आइ धरि हमरा लोकनिक पारस्परिक संवंध ओहिना मधुर बनल अछि । ई एकटा अपना-आपमे चमत्कारसँ कम नहि अछि । नहि तँ आइ-काल्हि तँ अपन परिवारक लोक एक-दोसरसँ कटैत रहैत अछि ।

सन् १९७८ सँ मार्च १९८७ धरि हम इलाहाबाद चलि गेल रही । हमरा नीकसँ मोन पड़ि रहल अछि जे मिसरजी हमरा मना केने रहथि । कहने रहथि जे इलाहाबाद गेने कोनो फएदा नहि होएत। मुदा हम इलाहाबाद चलि गेलहुँ,ओतए नओ वर्ष धरि धक्कमधुक्का करैत रहलहुँ आ अंततः फेर दिल्ली वापस आबहि पड़ल। मुदा आब तकर कोन हिसाब । दिल्ली वापस आबि गेलाक बाद हम फेर कतहु नहि गेलहुँ । एतहि रहि गेलहुँ,बेसक कार्यालय बदलैत रहल। सरकारी आवासो ठामहि रहि जाइत छल । जखन-जखन पैघ आवास भेटए तखनहि स्वेच्छासँ आवास बदलैत छल ।

शुरुमे मिसरजी किदवइ नगरमे रहैत छलाह आ हम सरोजिनी नगरमे । कोनो सप्ताह एहन नहि होइत छल जे हमरा लोकनिक सपरिवार भेंट-घांट नहि भेल । कखनो ओसभ चलि अवितथि वा हमहीसभ हुनकर किदवइ नगर डेरापर चलि जइतहुँ। बादमे हमरा लोकनिक सरकारी आवास बदलैत रहल । मुदा हमरसभक आपसी भेंट-घांट ओहिना अनवरत चलैत रहल । मिसरजीसभ बहुत सामाजिक लोगक रहल छथि । जखन कखनो हुनकर डेरापर जइतहुँ,केओ ने केओ हुनकर कुटुंव वा गामक लोक रहबे करितथि । परिवारक लोकतँ रहबे करथि,हुनकर सार,पितिऔत भाइ आ कहि ने के-के कोनो-ने-कोनो काजे अबिते रहैत छलाह ।

मिसरजी लहेरिआसराय लग पतोर गामक छथि । मिसरजीक पिताक नाम स्वर्गीय सियाराम मिश्र आ माताक नाम स्वर्गीया उर्मिला मिश्र छलनि । हुनकर पिता स्वतंत्रता सेनानी रहथि। प्रसिद्ध स्वतंत्रतासेनानी स्वर्गीय राम नंदन मिश्रजी हिनकर परिवारेक रहथिन । मिसरजी गामेक लगीचक ललितेश्वर मधुसूदन उच्च विद्यालय, आनंदपूरसँ सन् १९६८-६९मे प्रतम श्रेणीमे मैट्रीक पास केलथि । तकर बाद सी.एम.कालेज दरभंगासँ सन् १९६९-७३मे बी.एस-सी केलनि । ओही समयमे हुनका केन्द्रीय सचिवालयमे नौकरी भए गेलनि । मिसरजीक माए बहुतदिन धरि हुनका संगे हुनकर किदवइनगर स्थित सरकारी आवासपर संगे रहथिन । बहुत बादमे ओ अपन ज्येष्ठ पुत्रक ओहिठाम बोकारो चलि गेलीह । मुदा बोकारो गेलाक बाद ओ बहुत अस्वस्थ भए गेलीह आ थोड़बे दिनक बाद हुनकर देहावसान भए गेलनि ।

मिसरजीक श्रीमतीजी सेहो हिनके जकाँ बहुत सरल,सामाजिक आ मिलनसार स्वभावक छथि। हिनका दूटा पुत्र छथिन । दुनूगोटे उच्च शिक्षाप्राप्त कए जीवनमे नीकसँ सुव्यवस्थित छथि । मिसरजीक घरक वातावरण बहुत सात्विक छल। हुनका ओहिठाम पूजा-पाठ होइते रहैत छल। मासमे एकबेर सत्यनारायण भगवानक पूजा होइते छल । हुनकर एकटा पितिऔत भाइ(स्वर्गीय रामजन्म मिश्र जे खादी भंडारमे काज करैत छलाह) से तँ बहुत धार्मिक प्रवृतिक लोक छलाह । बहुत बादमे ओ करावल नगर स्थित अपन घरमे रहए लगलाह । सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बाद आब ओ फरीदाबाद स्थित अपन घरमे रहैत छथि । हुनका संगे हुनकर ज्येष्ठ पुत्रक परिवार सेहो रहैत छनि । एहि तरहें

सेवानिवृत्तिक बाद ओ बहुत आनंदसँ अपन समय बिता रहल छथि।

दिल्लीमे रहैत हमरा ओहिठाम जे कोनो कार्यक्रम जहिआ कहिओ भेल,सभमे मिसरजी सामिल होथि,सामिले नहि होथि,अपितु ओहि कार्यक्रमकेँ सफल करबाक हेतु घरबैआ जकाँ लागल रहथि । हमरा नीकसँ मोन अछि जे जखन हमरा ओहिठाम फोन(लैंड लाइन) १९९६ मे लागल रहए तँ पहिल फोन हम मिसरेजीकेँ केने रहिअनि । जखन लेडी हार्डिंग कालेजक मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक पदपर हमर चयन भेल रहए तँ पहिल बेर मिसरेजी संगे हम ओतए हाल-चाल लेबए गेल रही । सन् १९८२-८३मे विभागीय प्रोन्नतिक परीक्षा देबाक हेतु इलाहाबादसँ दिल्ली हम आएल रही तँ मिसरेजीक किदबइनगर स्थित डेरापर रहल रही। जखन करवनो नीक-बेजाए कोनो बात होइत मिसरेजीसँ विचार-विमर्ष करितहुँ । तकर एकटा प्रमुख कारण छल जे मिसरजीकेँ हमरासभक बारेमे बहुत रास जानकारी छलनि । तेँ ओ समस्याकेँ नीकसँ बूझि जाइत छलाह आ समाधानो निकालि दैत छलाह । राति-बिराति जखन करवनहु कोनो समस्या होइत तँ मिसरजी हमरा संगे ठाढ़ रहैत छलाह । जखन कोन चिंता होअए,परिवारमे कोनो समस्या होअए वा कार्यालयमे कोनो फसाद होइक तँ सभसँ पहिने मिसरजीसँ संपर्क करी । कैकबेर तँ बहुत जरूरी काज छोड़ि कए ओ आबि जैतथि । एहन उपकारी आ सहृदय व्यक्ति आइ-काल्हिक समयमे बहुत दुर्लभ थिक । निश्चय हम एहि बात हेतु अपनाकेँ बहुत भाग्यवान बूझैत छी ।



डाक्टर विनय कुमार चौधरी

डीइटी दरभंगाक कार्यालयसँ बेसक हम अगस्त १९७७मे नौकरी छोड़ि कए दिल्ली चलि गेलहुँ ,मुदा ओहि कार्यालयमे कार्यरत एक आदमी सौंसे जिनगी हमर मोनमे अँटकि गेलाह । ई कोनो मामुली घटना नहि थिक जे ४६ वर्षक बादो हुनकासँ हमर संबंध ओहिना टटका बनल अछि,बनले नहि अछि,निरंतर बेसी मधुर होइत चलि गेल । ओ के छथि? ओ छथि- पिण्डारुछ ग्रामबासी डाक्टर विनय कुमार चौधरी ,आब सेवानिवृत्त प्रोफेसर आर.एम.कालेज सहरसा ।

सन् १९७५मे हम दुनूगोटे डीइटी दरभंगाक कार्यालयमे काज करैत रही । हम दूरभाष निरीक्षक रही आ ओ ओही कार्यालयमे पहिनेसँ कार्यरत किरानी । ओहि समयमे ओ मात्र आइ.एससी पास रहथि । आर्थिक परिस्थितिसँ ओ पढ़ाइ बीचेमे छोड़ि कए नौकरी करए लागल रहथि ।विनयजीक संगे ओहि कोठरीमे कैकगोटे एहन बैसथि जे ओहिना तेजस्वी विद्यार्थीसभ रहथि आ कोनो-ने-कोनो कारणसँ पढ़ाइ छोड़ि कए नौकरी करए लागल रहथि ।ओहि समय डाक-तार विभागक अराजपत्रित पदसभमे नंबरक आधारपर नौकरी भए जाइत छल ।तहिना हमरो नौकरी भेल छल,तहिना विनयजीक सेहो नौकरी भेल रहनि ।मोटामोटी ओतए कार्यरत

जतेक युवकसभ रहथि सभकेँ मैट्रिकक परीक्षामे बहुत नीक नंबर आएल रहनि जाहि आधारपर हुनका नौकरी लागि गेल रहनि ।

मुदा विनयजी मानएबला लोक नहि छलाह । अपने तँ आगू पढ़बे केलाह,अपन कैकटा छोटभाइसभकेँ सेहो उच्चशिक्षा लेबएमे मदति केलथि । ओ निरंतर बहुत नीक नंबरसँ परीक्षासभ पास करैत रहलाह । बीए केलाह,एमए केलाह,एलएलबी केलाह आ तकर बाद पीएचडी सेहो केलाह । तखन डीइटी दरभंगाक कार्यालयक नौकरी छोड़ि कए आर.एम.कालेजमे समाजशास्त्रक प्राध्यापक भए गेलाह। ओतहु ओ चैनसँ नहि बैसलाह । कैकटा पुस्तकसभ लिखलनि,कैकगोटेकेँ अपना पर्यवेक्षणमे पीएचडी करओलथि,समाज सेवामे सेहो बहुत रुचि रखलनि आ कोशी प्रमंडलमे बहुत तरहक काज केलनि । ततबे नहि रामजन्मभूमि आंदोलनमे सेहो बहुत योगदान केलनि । एहन प्रतिभाशाली व्यक्तिसँ संपर्क होइते हमरा जे अपनत्व भेल से बनले अछि । अखनो आ तखनो । एकरा की कहबैक? एहन संबंध प्रकृतिक अनमोल उपहार होइत अछि जाहिसँ जीवन पुष्प सुगंधित रहैत अछि,महमहाइत रहैत अछि ।



श्री संजीव सिन्हा

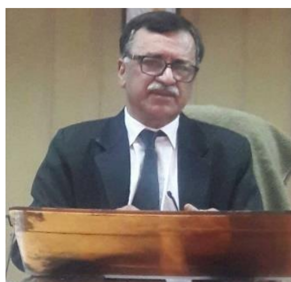
कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबाद एकटा अजूबा लोकसभक विचित्र संगम भए गेल छल । ओहिठाम अधिकांश कर्मचारी आ अधिकारी स्थानीय होइत छलाह जे कोनो-ने-कोनो कारणसँ अपन गाम-घर लग रहए चाहैत छलाह । ओहिमे हम एकटा अपवाद रही । कारण मधुबनी जिलासँ निकलि दिल्ली गेलाक बाद इलाहाबाद जेबाक कोनो औचित्य नहि बुझाइत छलैक,ओहो तखन जखन कि दिल्लीमे पूरा जिनगी नौकरी करक छल । जँ स्वयं उठापटक नहि कए ली तँ दिल्लीमे केन्द्रीय सचिवालय छोड़ि कतहु जेबाक काज नहि पड़ैत । बेसी सँ बेसी मंत्रालय बदलि सकैत छल । ओहिसँ की फर्क पड़ैत छलैक? एहिमे नहि तँ ओहिमे ,मुदा रहत तँ लगे-पासमे ,घर ओएह रहत । मुदा हम तँ बहुत प्रयास कए इलाहाबाद चलि गेल रही । चलि तँ गेलहुँ मुदा ओहिठाम एहन किछु नहि छल जाहिसँ जीवनमे उसास होअए ।

मुदा एकटा घटना घटल जे सौंसे जिनगीक लेल बड़का संपत्ति भए गेल । कहब जे की भेल? से कहैत छी । सन् मे

कर्मचारी चयन आयोग,इलाहाबादमे श्री संजीव सिंहा आ श्री जी.के.सक्सेनाजी सहायकक रूपमे पदभार ग्रहण केलथि । सक्सेनाजी आ सिन्हा साहेब दुनूगोटे ओहि कार्यालयमे हमरा पक्षमे माहौल बना देलथि,बेर-कुबेर हमरा मदति करए लगलथि । एहि बातसँ किछुगोटे बहुत दुखी आ अप्रसन्न रहथि । मुदा ओ सभ अपन स्वतंत्र विचार बनओने रहलथि आ न्यायोचित विचारक पोषण करैत रहलथि । सक्सेनाजी तँ साल भरिक बाद ओहि नौकरीकेँ छोड़ि कए बैंकमे अधिकारी बनि कए चलि गेलाह । मुदा श्री संजीव सिन्हाजी ओतहि बनल रहलाह ।

श्री संजीव सिन्हाजी बहुत उच्चकुलक लोक छथि आ हुनकर व्यक्तित्वमे महानता ओ उदारता भरल छनि। हुनका परिवारमे एक सँ एक पदधारी सभ भेल छथि । हुनकर पिता स्वर्गीय एच.एन. सिन्हाजी ओहि जमानामे आयकर विभागमे सहायक आयुक्त रहथि आ अपन इमान्दारीक हेतु सौंसे विभागमे जानल जाथि । जहिआ कहिओ हम संजीवजीसँ भेंटक हेतु २१, जवाहारलाल नेहरु रोड स्थित हुनकर घरपर जाइ,हुनकर पिता बहुत आदर करितथि । बहुत प्रेमसँ गप्प करितथि । हुनकर बहिनोइ श्री अरविंद वर्माजी आइएएसक वरिष्ठ अधिकारी छलाह आ सचिव पदसँ सेवानिवृत्त भेल छथि । हुनकर ज्येष्ठ भाइ श्री रामजी सिंहा,आइआरएसक बहुत वरिष्ठ अधिकारी रहथि। एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे हुनकर पारिवारिक परिवेश आ शिक्षा बहुत उत्तम छल । हुनकर व्यक्तिगत संस्कार तँ की कहल जाए? एहन सात्विक लोक भेटनाइ मोसकिल। तेँ हुनकर संगति आ सहयोगसँ हमरा बहुत मदति भेटल । जखन कखनो कोनो समस्या ढाढ़ भेल,हुनकासँ निधोख विचार-विमर्श कएल जा सकैत छल ।

आइ लगभग चालीस वर्षक बादो हमर आ श्री संजीव सिन्हाजीक संवंध ओहिना मधुर अछि । एकरा की कहबैक? जीवनमे बहुत रास एहन संबंध बनि जाइत अछि जकर व्यारव्या हेतु लोक पूर्वजन्म दिस घुमैक हेतु विवश भए जाइत अछि। भए सकैत अछि जे ओहो पूर्वजन्ममे हमर बहुत लगीचमे रहल हेताह । जे से ,मुदा हुनकर उत्तम व्यक्तित्वक हमहीटा नहि,अनेको लोक प्रशंसक छथि आ होइत रहताह । ओ अपना आपमे इश्वरीय गुणसँ भरल छथि ।



श्री ओमप्रकाश सपरा

सरकारी सेवासँ सेवानिवृत्तिक बाद हम वकालतमे दिल्लीक बार कौंसिलमे निबंधन हेतु ओकर हौजखास स्थित कार्यालय गेल रही । निवंधनक आवेदन पत्र आ शुल्क जमा कए हम आ बहुत रास एहने लोकसभ ओतए प्रतीक्षा करैत रही । ओहीक्रममे हमरा श्री ओमप्रकाश सपराजीसँ भेंट भेल छल । ओहिठामक काज संपन्न केलाक बाद हमरा लोकनिक दोबारा कार पार्किंग लग भेंट भेल । ओ हमरा पुछैत छथि-

"आपको कहाँ जाना है?"

"लोधी कालोनी।"

"हम आपको घर छोड़ देंगे । हम भी उधर से ही जाएंगे।"

ओहि समयमे पहिले बेर हुनकासँ भेंट भेल छल । ओ हमरा लेल एकदम अपरिचित व्यक्ति छलाह । तखनो एतेक ध्यान रखलथि । ओ हमरा घर धरि अएलाह आ किछुकाल हमरासभक संगे बैसबो केलाह । चाह-पान पिलाह । तकरबादे अपन घर वापस भेलाह । हमरा तखने लागल जे ई व्यक्ति अद्भुत छथि ।

किछु दिनक बाद हमरा लोकनिक वकालतमे निवंधन विधिज्ञ परिषद दिल्ली(Bar Council of Delhi)मे भए गेल । हम केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण (Central Administrative Tribunal)मे वकालत शुरु केलहुँ। सपराजी सेहो ओतहि वकालत करथि । हुनकर मिलनसार स्वभाव आ उदारताक कारण हमरा लोकनिक घनिष्टता बढ़िते गेल। प्रायः नित्य हुनकासँ केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरणमे भेंट होइत छल । हमसभ संगे रहैत छलहुँ । संगे न्यायालयमे वकीलसभक बहस सुनैत छलहुँ आ संगे ओहिठामसँ चारिबजे साँझक आसपास केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरणसँ निकलि जाइत छलहुँ । ओ नित्य हमरा मेट्रो टीसन धरि छोड़ैत छलाह।

सपराजी असाधारण व्यक्तित्वक लोक छथि । दिल्ली आ आसपास हुनकर परिचयक अंत नहि अछि । हम कैकबेर विश्व पुस्तक मेलामे हुनका संगे गेल छी । एकडेग आगू बढ़ी कि केओ हुनकर परिचित भेट जानि । आगू बढ़ब मोसकिल रहैत छल । साहित्यकार,प्रकाशक आ सामाजिक कार्यकर्तामे हुनकर जबरदस्त पैठ अछि । ओ अपनहु बहुत नीक लेखक छथि आ सामाजिक,राष्ट्रीय विषयपर अनेको निवंध लेखने छथि आ लिखैत

रहैत छथि । कतेको पुस्तकक ओ संपादन केने छथि । प्रतिमास मित्र संगम पत्रिका निकालैत छथि सेहो उनचास वर्षसँ ।

सपराजीक पिता भारतक विभाजनक समयमे मुल्तनासँ मोसकिलसँ जान बँचा कए दिल्ली आएल रहथि । शुरुमे ओ सभ सोनीपतमे रहलाह । कालांतरमे दिल्लीक मुखर्जीनगरमे बसि गेलाह आ आब सपरिवार ओतहि रहैत छथि।

हमर प्रथम पुस्तक भोरसँ साँझ धरिक विमोचन श्री ओम प्रकाश सपराजीक मार्गदर्शनमे हुनकर सभक संस्था “मित्र संगम पत्रिका” द्वारा नबंबर २०१७मे प्रवासी भवन दिल्लीमे आयोजित कएल गेल छल । किछुए दिन पूर्व हम माएक बरखीक हेतु गाम गेल रही । हमरा अनुपस्तिथिएमे सपराजी पुस्तक विमोचनक सभटा तैयारी केलनि । कार्यक्रम बहुत नीकसँ संपन्न भेल । कार्यक्रम सफलताक संपूर्ण श्रेय हुनके छलनि ।

सन् २०१४क जून महिनामे दिल्ली उच्च न्यायालयसँ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक नियुक्तिक रिक्तिक विज्ञापन बाहर भेल रहैक । सपराजीसँ ओकर बारेमे पता चलल । हमहु ओहि पद हेतु आवेदन दए देने रहिऐक । सितंबर २०१५मे हमरा दुनूगोटेकेँ ओहि पदपर नियुक्ति भेल । तकरबाद हमसभ संगे प्रशिक्षण केलहुँ । प्रशिक्षणक बाद हमरा लोकनिकेँ विभिन्न स्थानपर पोस्टींग कए देल गेल । तथापि हुनकासँ संपर्क पूर्वबते बनल रहल ।

६५ वर्षक आयु भेलापर स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पदसँ हमरा लोकनिकेँ मुक्त कए देल गेल । तकर बादो हमरा लोकनिक फोनसँ संपर्क होइत रहैत अछि । कहिओ-काल भेट-घांट सेहो भए जाइत अछि। निश्चित रूपसँ सपराजी सन लोक

आइ-काल्हिक दुनिआमे बहुत कम होइत अछि । आशा करैत छी जे आगामी समयमे सेहो हुनकासँ निरंतर संपर्क बनल रहत आ हमरा लोकनि हुनकर विभिन्न क्षेत्रमे ज्ञानक फएदा उठबैत रहब।



स्वर्गीय विष्णुकान्त मिश्र(लालबच्चा)

ओहि समयमे हम रामकृष्णपुरमक सेक्टर तीनक सरकारी आवासमे रहैत रही । ओतहि लालबच्चा(स्वर्गीय विष्णुकान्त मिश्र) गामसँ अपन इलाजक प्रसंगमे आएल रहथि । हमही हुनका दिल्ली अएबाक हेतु प्रेरित केने रहिअनि । कारण ओहि समयमे हम लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज,दिल्लीमे उप निदेशक(प्रशासन)क पदपर काज करैत रही । हुनका मधुमेह तबाह केने रनि । किछुदिन पूर्व ओ बेहोश भए गेल रहथि । दरभंगाक डाक्टरसँ देखेने रहथि । ओ सत्तरहटा दबाइ लिखि देने रहनि । दबाइ खाइत-खाइत रद्द भए जानि । हमरा पता लागल । हम हुनकर हाल-चाल लेबाक हेतु फोन केलिअनि । तखने ई कार्यक्रम बनल ।

लालबच्चा दिल्ली अएलाह तँ हम बहुत प्रसन्न भेल रही । एक समय छल जे हम आ लालबच्चा दिनमे कतेको बेर एक-दोसर ओहिठाम अबैत-जाइत रहैत छलहुँ,घंटो संगे रहैत छलहुँ । मुदा

जखन नौकरीक क्रममे हम दिल्ली चलि अएलहुँ तकर बाद स्वभाविक रूपसँ संपर्क कम होइत गेल । ओ बेनीपट्टी कालेजमे रसायन शास्त्रक व्याख्याता रहथि । गामेसँ जाथि-आबथि । ओ रसगुल्लाक बहुत प्रेमी रहथि आ नित्य साँझमे गाम लौटति काल बेनीपट्टीक प्रसिद्ध मधुरक दोकानसँ भरि पेट रसगुल्ला खाथि। माछ खेबाक सेहो ओ बहुत सौकीन रहथि । कीलोक-कीलो माछ दबा देथि । कोनो प्रकारक शारिरिक गतिबिधि नहि रहनि । बादमे हुनकर आँखि बहुत कमजोर होइत गेलनि । पहिनोसँ हुनका आँखिक समस्या रहबे करनि । बड़मोट चश्मा लागनि । आँखिक इलाजक हेतु ओ अजमेरक कोनो प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक लग जाथि। तथापि बहुत कम सुझनि । कालेजमे तँ सुनैत छी ओ कहुना कए ठाढ़ भए जाथि आ रटल बस्तुकेँ बकि देथि । यद्यपि हुनकर स्थिति खरापे भेल जानि,मुदा ओ डाक्टरसँ नहि देखाबथि । डर होनि जे भात छोड़बा देत । जखन भाते नहि खाएब तँ जीबिए कए की करब?

एकदिन मधुबनीमे डेरासँ कतहु जाइत रहथि कि बेहोश भए बीच सड़कपर खसि पड़लाह । संयोग रहैक जे केओ हुनका उठा-पुठा कए सड़कसँ कात केलक । जेना-तेना डेरा पहुँचलाह । तखन डाक्टर देखलक । मधुमेह आसमान लागल छल । एहि तरहे तँ हुनकर इलाज शुरु भेल रहए जे कैकसाल धरि चलैत रहलनि । मुदा बिमारी ठीक हेबाक बदलामे बढ़िते गेल । जखन दिल्ली अएलाह आ लेडी हार्डींग मेडिकल कालेजमे डाक्टर आर.के.धमीजा हुनका देखलखिन तँ हुनकर इलाज पटरीपर आबि गेल । ओ मात्र दू वा तीनटा दबाइ लिखलकिन । सोचिऔक-कहाँ सत्तरहटा दबाइ आ कहाँ दू-तीनटा ।

दिल्लीमे डाक्टर धमीजासँ देखेलाक बाद बहुत आफियत भेलनि । डाक्टर कहलकनि जे छ मासपर अबैत रहब जाहिसँ इलाज सुचारु ढ़गसँ चलैत रहत । हमरा बादमे डाक्टर कहलक जे तीन-चारि वर्ष चलताह । बेटीसभक बिआह-दान जे करबाक होनि से केने जाथि । हम डाक्टरक कहब बूझि गेलिऐक ।

किछुदिनक बाद लालबच्चा गाम चलि गेलाह । फेर दोबारा दिल्ली डाक्टर धमीजासँ नहि देखेलाह । हुनकर स्थिति बिगड़िते गेलनि । तकरबाद जे अएलाह तँ हम हुनका राम मनोहर लोहिआ अस्पताल,दिल्ली आ एम्समे देखेलिअनि । बात ओएह । ताधरि दुनू किडनी खराप भए गेल रहनि । हुनका आब डायलिसिस करा कए जिबाक रहनि । गाम-घरमे से सुबिधा नहि रहैक । तखन सीओपीडी सहायता लेल गेल । एहिमे डायलिसिसक हेतु एकप्रकारक द्रव्य पेटमे ढारल जाइत अछि । पेटमे लागल टोंटी बाटे खराप तत्वसभ देहसँ बाहर भए जाइत अछि । मुदा ई व्यवस्था बहुत दुष्कर आ महग होइत छल । एहि कारणसँ पेटमे बेर-बेर संक्रमण होइत रहलनि । अंतिम बेरमे ओ फरीदाबादक एस्कोर्ट अस्पतालमे भर्ती भेल रहथि । ह्वीलचेयरपर चलथि । हमरा फोन आएल । हम अस्पताल जा कए हुनकासँ भेंट केने रहिअनि ।

ओ अस्पतालक बेडपर पड़ल रहथि । भौजी आ हुनकर ज्येष्ट बेटी प्रिती लगमे रहथिन । ओहीदिन हुनका अस्पतालसँ छुट्टी देल गेल रहनि । हमरा सामनेमे ओ ह्वीलचेयरपर गुड़कि कए कारपर चढ़ल रहथि ,बेटीक ओहिठाम फरीदाबाद जेबाक हेतु । हम वापस अपन दिल्ली डेरा पर चलि आएल रही । दू-तीन दिनका बाद ओ ट्रेनसँ अपन गाम वापस जाइत रहथि । हम हुनका फोन केने रहिअनि । ओ किछु चिंतित बुझाइत रहथि । आबाजमे जान नहि

लागैत छल। ट्रेन समस्तीपुरक आसपास पहुँचैत रहए । मुदा हम चिंतित भए गेल रही । गाम गेलाक किछुए दिनक बाद फोन आएल छल । दिसंबर २००९क अंतिम सप्ताहक बात हेतैक । भयानक ठंढ पड़ि रहल छल । लालबच्चा एहने समयमे हमरा लोकनिकेँ छोड़ि देने रहथि । हमरा ई सोचि दुख होइत रहैत अछि जे हम हुनकर अंतिम संस्कारमे नहि जा सकल रही ।

एहि तरहें लगभग अठावन सालक बएसमे हुनकर निधन भए गेल रहनि । सोचल जा सकैत अछि जे काकाजीकेँ एहि घटनासँ कतेक दुख भेल हेतनि ? मुदा ओ बहुत आध्यात्मिक लोक छलाह । अपन आस्थाक बलें एहू कष्टकेँ काटि लेलाह । मुदा हुनकर व्यक्तिगत परिवारक हेतु ई जबरदस्त चोट छल । एकटा बेटी अविवाहित रहि गेल रहथिन । मुदा तीनटा बेटीक विआह ओ स्वयं कए गेल रहथि ।

समय बीतैत गेल । भौजीक पेनसनक कागजसभ सरिआ गेलनि । मासे-मास पेनसन भेटए लगलनि । सेवानिवृत्तिक बाद एकमुस्त टाकासभ सेहो भेटलनि । आर्थिक दृष्टिए हुनकर परिवार फेरसँ पटरीपर आबि गेलनि । मुदा लालबच्चा लौटि कए नहि अएलाह । कहाँसँ अवितथि? आइ धरि जे केओ गेल से घुरि कए नहि आएल । जे गेल से गेल । हमरा ओ अखनो ओहिना मोन पड़ैत रहैत छथि । मोन पड़ैत रहैत अछि हुनकर संग बिताओल गेल ओ आनंदमय युवावस्थाक क्षण । कैकबेर तँ हमदुनूगोटे भरि-भरि राति बतिआइत रहि जाइत छलहुँ । कैकबेर नवका पोखरिपर गाछसभपर लटकल गप्प करैत रहैत छलहुँ । गामपर तँ आबाजाही लागले रहैत छल । कैकदिन तँ हम हुनका संगे गप्प करैत-करैत

हुनकर घर धरि जाइ । फेर दुनूगोटे वापस हमरा घर धरि आबी । एहि तरहें पेंडुलम जकाँ हमसभ कतेको बेर अबैत जाइत रही ।

लालबच्चा ,हम आ शल्लु(श्री शैलेन्द्र झा)तीनूगोटे एकहि एकहि संगे सन् १९६७मे मैट्रिक प्रथमश्रेणीमे पास केने रही । हम आ ओ सी.एम.कालेजमे डिग्री एक भाग(डिग्री पार्ट वन)मे संगे रही। दरभंगाक नटराज सीनेमा लग हमरासभक डेरा रहए। बी.एस-सीमे मिश्रटोलाक स्वर्गीय राम नंदन मिश्रक डेरा हमरा ओएह दिआ देने रहथि । बी.एस-सी प्रतिष्ठाक परीक्षा देबए बेरमे हम हुनके संगे हराही पोखरि दरभंगाक पछबारि भीरपर एकटा छात्रावासमे रहैत रही ।

लालबच्चा रसायन शास्त्रसँ पीएचडी केने रहथि आ उच्चैठ स्थित कालीदास विद्यापति कालेजमे रसायन शास्त्रक प्राध्यापक रहथि । हमरा गाममे पीएचडी केनिहार ओ प्रथम व्यक्ति छलाह । हुनकामे सभसँ विशेषता छल हुनकर निश्छल स्वभाव ,मोनमे कोनो छ-पाँच नहि रहैत छलनि । कोनो बातपर भभा कए हँसि दैत छलाह । ओ बहुत सकारात्मक सोचक लोक छलाह आ कहिओ ककरो बारेमे अनट बात नहि करितथि ।

एक बेर लालबच्चाकेँ सासुर जेबाक रहनि । थोड़बे दिन पहिने आह भेल रहनि । ओही साल किछु पहिने हमरो बिआह भेल रहए । लालबच्चा हमर पनही पहिरि कए सासुर गेलथि । कहने रहथि जे पाँच-सात दिनमे वापस आबि जेताह । मुदा ओ गेलाह,से गेलाह । दस दिन बितल,पनरह दिन बितल । आब की कएल जाए? हमरो सासुर जेबाक छल । ताहि लेल पनही जरूरी छल । आखिर ककरो माध्यमसँ हुनका चिठ्ठी पठेलहुँ । तकरबाद तँ ओ तुरंत वापस आबि गेलाह । हम ओ पनही पहिरि अपन सासुर बिदा भए गेल

रही । ओहि समय धरि गामसभमे ओहिना काज चलैत छलैक । कतेक गोटे तँ पहुनाइ करए बिदा होथि तखने देहपर कुरता धरथि,सेहो ककरोसँ पैंच लए कए ।

लालबच्चा बहुत आध्यात्मिक प्रवृत्तिक लोक छलाह । निरंतर ध्यान,प्राणयाम,सभमे लागल रहितथि । गीताप्रेसक पोथीसभ पढ़ल करथि । हुनकर ई संस्कार शुरुएसँ छल । बादमे ओ ओशोक शिष्य भए गेलाह आ ओहीमे नीकसँ रमि गेलाह । मधुबनीक रजनीशपुरम(बाल्मिकी कालोनी)मे डेरा रहनि । ओहिठाम हमर मित्र श्रीनारायणजीसँ सेहो हुनका घनिष्टता भए गेल रहनि । बादमे ओ मधुबनी छोड़ि गामे रहए लागल रहथि ।

युवावस्थामे ओ बहुत स्वस्थ रहथि । गेनखेली,फूटबाल,कैरमबोर्ड खेलसभमे बहुत रूचि रहनि । कहिओ काल ओ कुश्ती सेहो खेलाथि । एहन निस्सन देह केना एतेक बिमार भए गेल से सोचि आश्चर्यमे पड़ि जाइत छी । एहीसँ लगैत अछि जे ई संसार क्षणभंगुर अछि । एहिठाम किछु असालतन नहि अछि ।

हमर माथामे सभटा बात ओहिना घुमैत रहैत अछि जेना अखने घटल होइक । मुदा ई समय थिक । ई ककरो नहि भेल अछि,ने होएत । हम आब एहि बातकेँ मानि चुकल छी जे आब ओ नहि छथि । एहि जन्ममे हमरा-हुनकर भेंट नहि भए सकत । अगिला जन्मक के देखलक अछि ? जे से । मुदा हुनकर स्मृति आ हुनका संग बिताओल गेल सुखद क्षण सतति हमरा मोन पड़ैत रहत।



श्री शेलेन्द्र झा

नेनाक बहुत रास बातसभ बिसरा जाइत छैक । कैकबेर किछु प्रसंग आधा-छिधा मोन रहि जाइत छैक । सएह बात भेल ओहि दिन जखन शल्लुजीसँ गप्प करैत काल नेनामे चारिगोटे द्वारा टांगि कए ब्रह्मस्थानक इसकूल जेबाक हम चर्च केलहुँ । हम इसकूल नहि गेलहुँ तँ बच्चू मास्टर साहेब(स्वर्गीय अदिष्ट नारायण झा) हमरा पकड़ि कए इसकूल अनबाक हेतु चारिटा विद्यार्थीकेँ पठओने रहथि । हमरा अखनो मोन पड़ैत अछि जे हुनकासभकेँ देखि कए हम केराबारीमे नुका गेल रही । तथापि ओ सभ मानलथि नहि, हमरा टांगि कए इसकूल लइए गेलाह । रस्तामे केओ-केओ हमरा बिठुआ सेहो कटैत रहल । शल्लुजी ओहिदिन कहलाह जे ओहो ओहि चारिगोटेमे सामिल छलाह । यद्यपि ई घटना हमरा मोने अछि मुदा चारूगोटे के सभ रहथि से बिसरा गेल ।

गाममे हमर घरसँ हुनकर घर कनीके फटकी छल । नेनामे खेल-धूप करैत हमसभ अबैत-जाइत रहलहुँ । नेनामे ओ बहुत नीक गबैत छलाह । हमरा अखनो मोन पड़ैत अछि जे कैकबेर लोकसभ हुनका गीत गेबाक हेतु दुराग्रह करथि। “आला -आला दिल ले गया...” ई गीत ओ कैकबेर गबैत रहैत छलाह । शल्लुजी मिडिल इसकूलमे पाँचमासँ सातमा धरि हमरा संगे रहथि ।

तकरबाद ओ रहिका उच्च विद्यालयमे चलि गेलाह आ हम एकतारा चलि गेलहुँ । मुदा प्री- युनीभर्सीटीमे फेर एकसाल हमसभ आर.के.कालेज,मधुबनीमे संग भए गेल रही । तकरबाद हम सी.एम.कालेज दरभंगा चलि गेलहुँ ।

शल्लुजीक दूटा बिआह भेलनि । प्रथम बिआह भच्छी गाममे भेल रहनि । ओहिमे एकटा पुत्र छनि । संयोग एहन भेल जे ओहि पुत्रक जन्मक समयमे हुनकर पत्नीक देहावसान गामेमे भए गेलनि । कहि नहि उचित चिकित्सा ओतए उपलव्ध भए सकलनि कि नहि? हम आ लालबच्चा भच्छी बरिआती गेल रही । ओहि समयमे दू-दिना बरिआती होइत छलैक । भोरमे टहलैत-टहलैत बरिआतीसभ बाधमे बहुत आगू धरि चलि गेल रहथि । बरिआतीक स्वागत बहुत नीकसँ कएल गेल रहए । अखनो ओ दृश्यसभ हमर मोनमे अबैत रहैत अछि ।

पहिल पत्नीक देहावसानक बाद हुनकर दोसर बिआह नवकरही भेल रहए । हम ओतहु बरिआतीमे गेल रही । बरिआतीमे हम जबरदस्त हँसीठठ्ठा करैत रही जे देखि खट्टर मास्टर साहेब बहुत आश्चर्यमे रहथि । माहौल बहुत आनंदमयी छल । ध्वनिविस्तारकमे राति भरि गीत बजैत रहल “सिमटी हुई ये घरिया फिर से न बिखर जाए................ ।” ओ गीत अखनहुँ कहिओ काल हमर कानमे गुंजित होइत रहैत अछि ।

दोसर बिआहसँ हुनका एकटा पुत्र आ दूटा कन्या भेलनि । सभसँ नीक बात ई भेल जे हुनकर पहिल संतानक सेहो बहुत नीकसँ पालन-पोषण कएल गेल । ओ उच्च शिक्षा प्राप्त कए जीवनमे नीकसँ स्थापित भेल छथि । हुनकर आन संतनासभ तँ सुशिक्षित आ जीवनमे नीकसँ व्यवस्थित छथिहे ।

व्यक्तिगत रूपसँ शल्लु(शैलेन्द्रजी)जी बहुत आध्यात्मिक स्वभावक छथि। जीवनमे सादगी आ इमानदारीक पालन करैत सफल गृहस्थ रहल छथि । मुम्बईमे अपन फ्लैट छनि । गाममे सेहो घर बनओने छथि। मुदा गामसँ आबाजाही आब कम भेल जा रहल छनि । पहिने तँ ओ लगपासक ककरो बिआह-दान होइ तँ गाम अवश्य जाइत छलाह ।

नौकरी करबाकक क्रममे ओ मुंबइ चलि गेलाह । मुम्बईमे ओ सरकारी कंपनीमे बहुतदिन धरि विधि अधिकारी छलाह । सेवानिवृत्तिक बादो ओ कैकसाल धरि कानूनी सलाहकारक रूपमे ओही कंपनीमे काज करैत रहलाह । मुम्बई गेलाक बाद ओ अपन परिवारमे भाइ लोकनिक शिक्षामे बहुत मदति केलनि । कतेकोगोटेकेँ मुम्बईमे नौकरी धरओलनि । मुंबइक मैथिल समाजसँ सभदिन जुड़ल रहलाह ।

४७ सालसँ ओ मुम्बईमे छथि । हमहु गामसँ बाहरे-बाहरे छी। ओ मुंबईमे बसि गेल छथि आ हम ग्रेटर नोएडामे । मुदा हमरा लोकनिक संपर्क बनले अछि । फरीदाबादमे ३१ जनबरी २०१४क हुनकर कन्याक बिआह भेल रहनि । हमहु कन्यागत दिससँ ओहिमे भाग लेने रही । ओहि समयमे हुनकासँ भेंट भेल छल । ताहिसँ पहिनो आ बादोमे एकाध बेर हुनकासँ दिल्लीमे भेंट भेल । एकाध बेर गामोमे संगे पहुँचल रही । मुदा बहुत दिनसँ हुनकासँ भेंट नहि भेल अछि । तथापि फोन आइ-काल्हि संपर्कक बड़का साधन भए गेल छैक । तैं हमसभ निरंतर संपर्कमे छी । एहन उपकारी आ सहृदय व्यक्तिक मित्रतापर ककरो गौरव भए सकैत छैक । ताहि हिसाबे हम जरूर भाग्यवान छी ।



श्री राज किशोर मिश्र(नूनूजी)

श्री राज किशोर मिश्र(नूनूजी)क जन्म २७.१.१९६०क अड़ेर डीह ग्राममे भेलनि । हुनकर पिताक नाम श्री शशि भूषण मिश्र आ माताक नाम श्रीमती जीवेश्वरी देवी छनि । ओ शुरुएसँ बहुत प्रतिभाशाली विद्यार्थी छलाह । सन् १९७६मे अड़ेर उच्च विद्यालयसँ मैट्रिकमे विहार भरिमे दसम स्थान प्राप्त केने रहथि । तकर बाद साइंस कालेज पटनासँ प्री-युनीभर्सीटी कए बीएचयू वाराणसी(वर्तमानमे आइआइटी)सँ बीटेक (विद्युत)केलाह । तकर बाद सन् १९८२मे भारतीय इंजीनियरींग सेवा परीक्षामे सफल भए बीएसएनएलमे सीजेएम(मुख्य महाप्रवंधक) दिल्लीक पदसँ सन्२०२०मे सेवानिवृत्त भेलाह । एहि प्रकारे देखल जा सकैत अछि जे विद्यार्थी अवस्थासँ लए सेवानिवृत्ति काल धरि निरंतर विकास करैत ओ सभदिन उत्कृष्टता प्राप्त करैत रहलाह ।

नूनूजी किछुदिन गाममे बहुत रास सामाजिक काजमे सामिल रहलाह जाहिमे गामक बीचोबीच सड़कक निर्माण आ अड़ेर चौकसँ सटले ग्रामद्वारक निर्माण प्रमुख छल । ग्रामद्वारपर हिनकर नाम प्रमुखतासँ लिखल अछि । अड़ेर चौकपर दूरभाष केन्द्रक स्थापनामे सेहो हिनकर बहुत योगदान अछि । तकर बादे गाममे

लोकसभ टेलीफोन लगओने रहथि । गाममे कालीपूजा शुरु करबामे हुनकर बहुत योगदान छलनि। तकर बाद कैकसाल धरि हुनके नेतृत्वमे कालीपूजाक आयोजन बहुत सफलतापूर्वक होइत रहल ।

इलाहाबाबदसँ बदलीक बाद जखन हम दिल्ली आएल रही तँ ओहो दिल्लीमे संचार विभागमे इंजिनीयर रहथि । किछुदिन हम हुनका संगे हुनकर कटबरिआसराय स्थित डेरापर रहलो रही । दिल्लीसँ बदलीक बाद ओ पटना चलि गेलथि । समय-समयपर हुनकर बदली देशक विभिन्न भागमे होइत रहलनि । पटना आ हैदराबादमे हुनकर डेरापर हम गेल रही । व्यस्तताक अछैत ओ निरंतर हमरासँ टेलीफोन द्वारा संपर्कमे रहैत रहलाह । हुनकर सकारात्मक सोच आ आत्मीय व्यवहार निश्चय ऊर्जादायी रहैत अछि। दोसरक मोनकेँ बूझबाक आ दोसरकेँ सुखी देखबाक हिनकर स्वभाव छनि । एहन-एहन लोक एहि पृथ्वीक रत्न छथि ।

हमरासभक लेल ई गौरवक बात थिक जे ओ अपने परिवारक अंग छथि । हुनकर प्रपितामह(स्वर्गीय राम शरण मिश्र) आ हमर पितामह (स्वर्गीय श्रीशरण मिश्र) सहोदर भाइ रहथि । हुनकर पिता श्री शशिभूषणमिश्र बहुत यशस्वी आ पुरुषार्थी व्यक्ति तँ छथिए संगहि ओ बहुत भाग्यवानो छथि जे एहन-एहन संतान सभक पिता हेबाक गौरव हुनका भेलनि । हुनकर चारू पुत्र सुयोग्य आ जीवनमे बहुत नीकसँ स्थापित छथि । सरस्वती आ लक्ष्मीक एहन संगम कमेठाम देखबामे अबैत अछि ।

शुरुएसँ हुनकामे साहित्यक प्रति सिनेह छल । ओ जखन नेने रहथि तखनेसँ हिन्दी आ मैथिलीमे छोट-छोट कवितासभ लिखल करथि । कैकबेर हुनकर कवितासभ विभागीय

पत्रिकासभमे छपैत रहल । प्रकृतिकेँ बुझबाक प्रयास हुनकर स्वभावमे समाहित छनि । ई बात हुनकर कवितोसभमे बेरि-बेरि स्पष्ट भेल अछि । हुनकर कवितासभमे मानव स्वभाव,प्रकृति प्रेम आ देश भक्तिक चित्रण बहुत नीकसँ कएल गेल अछि । पेशासँ इंजिनीयर रहितो साहित्यकारक रूपमे राजकिशोर(नूनूजी)क महत्वपूर्ण योगदान अछि । हुनकर अखन धरि मैथिलीमे मेघपुष्प आ हिन्दीमे प्रवाहिनी,ऊर्जा वर्णन,प्रदूषण,संवेग कविता संग्रहसभ प्रकाशित भए चुकल अछि । किछु आओर पुस्तकसभ शीघ्रे प्रकाशित होबए बला अछि ।

दिल्लीमे आयोजित ऊर्जा वर्णन पुस्तकक विमोचनक अवसरपर भव्य आयोजनक द्दष्य अखनहु मोन पड़ैत रहैत अछि । हुनकर विभागक बड़का-बड़का इंजिनीयरसभक पाँति लागि गेल छल । ओहि आयोजन केँ गरिमामय बनेबाक हेतु शताधिक विद्वानसभ उपस्थित रहथि । कतेकोगोटे हुनकर साहित्यिक प्रतिभासँ चकित रहथि । ओ जखन अपन ओजस्वी स्वरमे कविता पाठ करए लगलाह तँ संपूर्ण दर्शकमंडली थपड़ी पिटि रहल छलाह,सभ अतिशय आनंदित छलाह ।

नूनूजी निरंतर उच्चकोटिक कवितासभ लिखि रहल छथि। “एकटा छलि नदी ”शीर्षक कवितामे कवि राजकिशोर लिखैत छथि-

नदीक मृत्यु संकेत ठीक नहि
सभ जनैत जल जीवन अछि
ई महा-प्रश्न मानव समक्ष
ई विषय सघन चिंतन अछि ।

प्रकृतिक प्रति हुनकर अनन्य प्रेम उपरोक्त कवितासँ प्रस्फुटित होइत अछि । प्रदूषण नामसँ हिन्दीमे प्रकाशित कविता संग्रहमे प्रदूषणक कारण भए रहल क्षतिक प्रति अपन चिंता व्यक्त करैत कवि कहैत छथि-

जब पड़ता उसका दुष्प्रभाव
मानव ही नहीं अकुलाता है
रोती वनस्पतियाँ भी हैं,
निर्जीव भी दुख को पाता है ।

एहि तरहेँ हुनकर समस्त साहित्यिक कृतिसभमे जीवन आ ताहिसँ जुड़ल तत्वसभक गहन चिंतन कएल गेल अछि। निश्चित रूपसँ ई पोथीसभ समस्त मानवताक भविष्यक हेतु मार्गदर्शक बनत आ मनुक्खमे जीवन तत्व आ ओहिसँ जुड़ल भावनाकेँ प्रेरित करबामे सफल होएत । । यद्यपि ककरो रचनाक मुल्यांकन करब आसान बात नहि होइत अछि,मुदा एतबा तँ स्पष्ट अछि जे हुनकामे गजबकेँ सृजनशीलता अछि । ओ निरंतर सुंदर-सुंदर कवितासभक रचना कए रहल छथि । आशा करैत छी जे समस्त साहित्यिक जगत हुनकर साहित्यिक कृतित्वसँ लाभान्वित होएत ।

विद्यार्थी अवस्थासँ लए कए आइ धरि ओ अपन काज आ व्यवहारसँ एकटा तेहन डरीर खिचि देलनि अछि जकर पार पाएब असंभव नहि तँ आसानो नहि होएत । अपन सदव्यवहार आ सकारात्मक सोच हेतु ओ सदिखन मोन पड़ैत रहताह ।

आब की कएल जाए?

मकानक खोज

सरकारी सेवासँ लगभग साढ़े उनचालीस सालक बाद सेवानिवृत्तिक बाद जखन खाली भेलहुँ तँ सभसँ पहिने मकानक समस्यासँ मुखातिब भेलहुँ । सरकारी मकान भेटि जेबाक कारण हमरा दिल्लीमे कहिओ मकानक कष्ट नहि भेल । तँ जे मकान बनेबो केलहुँ से मधुबनी जा कए । आब तँ अपन एहि निर्णयपर बहुत हँसी लगैत अछि । इएहटा नहि ,कैकटा एहन निर्णयसभ भेल जाहि पर आब सोचलासँ दुख होइत अछि । मुदा जे समय बिति गेल,जे घटना घटित भए गेल तकरा वापस तँ नहि आनि सकैत छी। मुदा जे नीक वा बेजाए होइत छैक ताहिपर ध्यान तँ चलिए जाइत छैक । ई मनुक्खक स्वभाव थिक ।

एतेकटा जीवन संघर्ष,प्रयास,सफलता-असफलताक बीचमे बिति गेल । हमसभ जखन विद्यार्थी रही,देहातक इसकूलमे पढ़ैत रही,पैरे नित्य भिजैत-तितैत इसकूल जाइत रही, तैओ कतेक मगन रही,कतेक प्रसन्न रही? कहिओ सोचेबो नहि करए जे दिल्लीओ देखब,रहबाक बात तँ छोड़ू। मुदा भेलैक की? भरि जिनगी दिल्लीमे नौकरी केलहुँ आ तकर बाद दिल्ली लगमे ग्रेटर नोएडामे बसि गेलहुँ। ओना हम मधुबनीमे सन्१९९०मे मकान बनओने रही । संभवतः ओहि समयमे इएह सोचने रही जे सेवानिवृत्तिक बाद अपन जन्मस्थानक लगपासमे रहब,अपन मिथिलामे रहब । मुदा तकर बाद जतेक प्रवुद्धलोकसभसँ गप्प होअए से एहि योजनाक खिलाफे बुझाथि । बादमे अपनो आ परिवारमे सभकेँ निर्णय भेलैक

जे हमसभ दिल्ली वा लगपासमे कतहु घर ली । ताहि प्रयासमे कैकसाल बिति गेल । जून २०१४मे ज्येष्ठपुत्र भास्करक इन्दिरापुरम स्थित फ्लैटमे चलि गेलहुँ । दूसाल ओतए बितल ।

सोचने रही जे मधुबनीक मकान जाबे पार लगैत अछि ताधरि बचओने रहब। मुदा दिल्लीमे रहि कए ओहि मकानक देख-रेख करब बहुत मोसकिल काज छल । सभदिन किराया लागल रहल वा खाली रहल । जखन किराया लागल रहैत छल तखनहु एकटा कोठरी खाली अपना कब्जामे राखी जाहिसँ कहिओ जा कए रहि सकी । मुदा ई व्यवस्था कारगर नहि भए सकल । कारण मधुबनीक मकानमे एक्केटा शौचालय छल जे किरायेदारक रहने हुनके लेल रहैत छल ।

दूसाल इन्दिरापुरममे रहलाक बाद हमसभ नोएडा सेक्टर चालीसक किरायाक मकानमे चलि गेलहुँ । कारण इन्दिरापुरमकेँ फ्लैट बेचि भास्कर द्वारकामे चारि कोठरीक पैघ फ्लैट लेलाह जाहिमे ओ सभ रहि सकितथि आ आब रहितो छथि । नोएडाक घर बहुत नीक स्थानपर अवस्थित छल । ओकर मालिक उच्चतम न्यायलयक सेवानिवृत्त न्यायाधीश छलाह आ निरंतर अपन मकान आ ओकर स्थानक प्रशंसामे लागल रहैत छलाह । ओ जखन भेटितथि तँ एतबे अखिआसति रहितथि जे हमसभ हुनका किराया दए सकबनि कि नहि । हम कतेक कमाइत छी,हमर कतेक पेनसन अछि,क्षितिजक दरमाहा कतेक छनि ,एहने-एहने सबालसभ ओ करैत रहतथि ।

लगभग साल भरि हमसभ नोएडाक जज साहेबक मकानमे रहलहुँ । एहि बीच मकान किनबाक प्रयास चलैत रहल । ग्रेटर नोएडाक एन.एस.जी सोसाइटीमे श्री मनीष झाजी रहैत रहथि ।

ओ हमर पुरान मित्र छथि । हुनकर एहि सोसाइटीमे घर छनि आ ओ ओहि समयमे सोसाइटीक सचिव सेहो रहथि । ओएह ओही सोसाइटीक बिकाउ मकानसभक जानकारी देलनि । हमसभ कैकटा मकान देखलहुँ । ओहिमे सभगोटेकेँ सी-४२ नंबरक मकान पसिंद पड़लैक । मकान मालिक बीएसएफमे डीआइजी छलाह आ अपना लेल ई मकान बनओने रहथि । मुदा पारिवारिक कारणसँ आब ओकरा बेचए चाहैत छलाह । पहिने तँ ओ मकानक बेसी दाम कहथि मुदा बादमे बहुत उचित दाम लगओलाह । संयोग एहन भेल जे हमर मधुबनीक मकान झटपटमे बिका गेल । ओहिसँ प्राप्त पैसामे किछु आओर मिला कए काज चलि गेल आ हमसभ मार्च २०१७ मे एहि मकानके रजिस्ट्री करा लेलहुँ । एहि तरहेँ हमरा लोकनिकेँ दिल्लीमे तँ नहि,मुदा दिल्लीसँ पैंतीस किलोमीटर फटकी ग्रेटर नोएडामे आवास भेटि गेल ।

ओना दिलशादगार्डेन दिल्लीमे हमरा दू कोठरीक मकान अछि मुदा ओ तेसर तल पर अछि आ छोटो अछि । तेँ ओहिमे केओ रहबाक हेतु तैयार नहि छल । हमसभ ओएह फ्लैट बेचए चाहैत छलहुँ । मधुबनीक मकान फिलहाल बेचबाक योजना नहि छल । तेँ मार्च २०१४मे हम ओहि मकानमे डेढ़ लाख टाका खर्च कए किछु अतिरिक्त काजो करओने रही । मुदा जे चाहलहुँ,भेल तकर उल्टा । दिल्लीक फ्लैट नहि बिकाएल आ मधुबनीक मकान बिना कोनो प्रयत्नकेँ बिका गेल ।

एतेक आसानीसँ मधुबनीक मकान बिकाएत से सपनोमे नहि सोचाइत छल । मधुबनीक मकान गामक लगमे छल आ लगभग पचीस वर्ष ओहि मकानमे हमसभ लागल रहलहुँ,खर्चा करैत रहलहुँ,मेहनत करैत रहलहुँ । मुदा ओहिमे कुलमिला कए

बेसी सँ बेसी तीस दिन रहि सकलहुँ कि नहि । तथापि मोहवश ओकरा बेचए नहि चाही । अंततोगत्वा,जे भावी छल से भेल । मुदा जाइत-जाइत ओ मकान अपन कर्ज सधा गेल । हमरा उचित मूल्य भेटि गेल,ओहो एक्के बेर आ एक नंबर । कुलमिला कए ठीके रहल । आखिर हमसभ दिल्ली वा आसपास रहए चाही । मधुबनी तँ केओ जाइत नहि । ताहि हिसाबे जे व्यवस्था बनल से ठीके भेल ।

माएक चिंता

सेवानिवृत्तिक बाद लगभग डेढ़साल धरि वकालत करबाक हेतु केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण जाइत रही । मुदा बेसी काल खाली रही । ताहि समयसभमे माएक चिंता करैत रही । जखन गामपर ओकरा फोन करू ओ तरह-तरहक परेसानीक चर्चा करैत जकर समाधान किछु नहि होइक । एतेकदिन तँ ओ अपन काज स्वयं कए लैत छलि । मुदा किछुदिनसँ हुनका से सभ नहि पार लागनि । लगमे रहैत पुतहु संगे पटरी नहि बैसनि । बाहर रहए बला बेटासभ लग जाए चाहथि नहि । परिणामस्वरुप,ओ नित्य कष्टमे समय बिताबैत रहलीह आ हमरो माथमे तनाव बनल रहल । जाबे काजमे रही ताधरि तँ शनि,रविक मात्र समय रहैत छल । बकिए दिन तँ भोरसँ साँझ धरि कार्यालयमे बिति जाइत छल ।

गामपर पानिक टंकी

हमर माएकेँ पानि गिजबाक आदति रहैक । उपरसँ सौच-असौचक बहुत विचार करथि। परिणामतः ओ कैकबेर हाथ धोथि आ कैकबेर नहाथि तकर अंत नहि । घरक आगूमे पानिक चापाकल रहैक । बादमे जखन ओ कमजोर होइत गेलीह तँ हुनका चापाकल नहि चलाएल होनि आ ओ ककरो-ककरो पानि चला देबाक हेतु

कहितथि। लोकसभ चलाओ दनि । मुदा एक-दू बेरक तँ बात रहैक नहि । दिन भरि हुनका पानि छुबाक प्रयोजन होइत रहनि । तेँ लगपासमे रहनिहार समांगसभ दिक्क भए जाथि । तखन ओ अपने जेना-तेना नहु- नहु चापाकल चलबितथि। ओ चापाकल कनीक सक्कत से भए गेल रहैक । माए कहथि जे नव चापाकल गरा दएह। मुदा एहि बातक कोन गारंटी रहैक जे नव चापाकल हल्लुके होएत? तेँ बहुत सोच-विचार कए पानिक पंप आ टंकी लगेबाक विचार भेल। हम सभटा खर्चा कए जुलाइ २०१४मे पानिक पंप आ टंकी लगबेलहुँ । कहि नहि सकैत छी जे माए एहि बात सँ कतेक प्रसन्न भेल रहथि । पानिक टंकी लगओलाक बादो ओ सिकाइत करथि जे हुनका लेल पानि नहि बचैत छनि,पानिक पंपकेँ बंद कए देल जाइत छनि । जे से । मुदा पानिक एकटा समाधान तँ भेबे कएल। अफसोचक बाद जे तकर बाद ओ बहुत कम दिन धरि गामपर रहलीह आ अक्टूबर २०१४मे दरभंगा चलि गेलीह आ ओहिठाम किछुए दिनक बाद खसि पड़लीह जाहिमे हुनकर दहिना जांघक हड्डी टुटि गेलनि । तकर बाद पानि गिजबाक आनंद ओ कहिओ नहि लए सकलीह ।

माएक एकादशीक यज्ञ

जहिआसँ हमरा ज्ञान अछि माएकेँ एकादशी,चतुर्दशी,रवि, आ कहि ने कोन-कोन उपास करैत देखिअनि । ओहुना ओ दू बजेक बादे किछु खाथि । ताधरि हमसभ कैकबेर खा चुकल रही। उपास दिन कए तँ भने निश्चिंत रहैत छलीह । एकरसभक धार्मिक महत्व जे रहल होइक ,मुदा हुनकर स्वास्थपर एकर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़लनि । हुनकर देह बहुत हल्लुक आ फुर्तीला छलनि । भोरसँ राति सुतबा काल धरि ओ किछु-ने-किछु काजमे लागल

रहितथि । पहिने तँ गैस चल्हा नहि रहैक,स्टोभो नहि रहैक । जारनिसँ भानस होइक । सोचल जा सकैत अछि जे कोनो गृहणी कतेक परिश्रमसँ भानस करैत रहल होएतीह । आ ताहिपर सँ परिवारक लोकक तरह-तरहक कबाइत । ककरो किछु चाही तँ ककरो किछु । माए सभकिछु सहैत सालक-साल बहुत पैघ परिवारक पालन-पोषण करैत रहलीह । बादमे उपास करबामे हुनका कष्ट होनि । आयुक प्रभावसँ शरीर कमजोर होइत गेलनि । तथापि अपन काज स्वयं करथि,अपने चाह बनाबथि,अपने अपन भानस करथि । एहि बातक पूरा प्रयास करितथि जे ककरो पर आश्रित नहि होइ । तकर निर्वाहो ओ केलथि । नब्बे वर्षक बएस धरि ककरोसँ किछु काज नहि लेलथि । एकादशी करबामे तँ बहुत कष्ट होनि । मुदा ओकरा सोपबाक हेतु यज्ञ करबाक परंपरा छैक,से भेल नहि रहैक । एकदिन भोरे हम लोधीरोड स्थित अपन सरकारी आवासमे चाह पीबैत रही । श्रीमतीजी सेहो संगे रहथि । हम हुनका कहलिअनि-कातिकमे दिन तका कए माएक एकादशी यज्ञ कराएब। ओहो समर्थन केलनि । राघवेन्द्रजीसँ दिन तकाओल गेल आ तदनुसार नबंबर २०११कए एकादशी यज्ञक निर्णय कएल गेल। गाममे हमर भातिज चंदन एहि काजमे जी-जानसँ मेहनत केलथि। हुनकर अग्रज रोशन सेहो व्यवस्थामे लागि गेलाह । माएक प्रसन्नताकतँ अंते नहि छल । दू दिन पहिने हम गाम पहुँचलहुँ । हमर भाइसभ सेहो अबैत गेलाह । आङन ,बारी आ दरबाजा सभठाम सामिआना लगाओल गेल । पर्याप्त संरव्यामे कुर्सी रहलासँ आगंतुक अतिथिलोकनिकेँ बैसबामे बहुत सुबिधा भेलनि । माए बहुत प्रसन्नतापूर्वक यज्ञक विधि-विधानमे लागि गेलथि । एकादशी यज्ञ रातिमे होइत अछि ।

ताहि हेतु तरह-तरहक चीज-वस्तुसभ मधुबनी गेलेसन बजारसँ किनल गेल । यज्ञमे दान देबाक हेतु बाछी नहि लेल गेल छल । ताहि हेतु माए परेसान रहथि । हुनका हिसाबे बाछी दान केलासँ स्वर्ग जेबामे सहुलियत होइतनि । आखिर हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्कर बाछी किनबाक व्योंत केलनि । माएक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल । "आब हमरा स्वर्ग भेटबामे कोनो दिक्कति नहि होऐत ।"- माए बजलीह ।

एकादशी यज्ञसँ एकदिन पहिने माएकेँ साँझमे पोखरिमे स्नान कराओल गेलनि । हुनका संगे घरक बहुत रास स्त्रीगन सभ रहथि । स्नानक बाद नव वस्त्र पहिरलथि । तकरबाद भिजलाहा नुआ चंपत भए गेलैक । लोकसभ कहैक जे ओ नुआ राखब बहुत सगुन होइत छैक । तेँ ओकरा केओ चोरा कए राखि लेने होएत । कतबो प्रयास कएल गेल ओहि नुआक कोनो थाह नहि भेटल ।

रातिभरि यज्ञक विधानसभ होइत रहल । हमर दूटा बहिन सेहो आएल रहथि(राधे बहिन आ रोहिनी बहिन) । दिनमे हम,सत्येन्द्र आ आओर कैकगोटे माएसँ मंत्र लेलहुँ । माएसँ कहि नहि कतेकगोटे मंत्र लेने छथि । से तँ तखन बुझाएल जखन श्राद्धक समयमे हिनकर चेलासभक पाँति लागि गेल । सभ अपन-अपन योगदान करबाक हेतु आतुर रहथि । भोर होइत-होइत यज्ञ पूर्ण भेल। तखन हमसभ माएकेँ प्रणाम केलिअनि आ ओ हमरासभकेँ आशीर्वाद देलथि । दोसर दिन सौंसे गाम सबजाना ब्रह्मण भोजन कराओल गेल । तकरबादे जा कए एकादशी यज्ञ पूर्ण भेल । बहुत दिनक बाद गाममे कोनो भोज देखैत रही । पाँतिसभमे बच्चासभ भरल छल । जँ पचीस आदमीक पाँति अछि तँ ओहिमे कम सँ कम बीस आदमी जरूर बच्चा रहए । मोसकिलसँ केओ जबान

देखाइत। बच्चा आ बूढ़सँ पाँतिसभ भरल छल । कहाँ गेल गामक युवकसभ? सभ पेटक जोगारमे गामसँ पलायन कए गेल । किछुगोटे पढ़बाक हेतु बाहर चलि गेल । तखन बाँचल के ? ओएह बूढ़ आ बच्चा जे समय-समयपर सबजाना भोजमे पाँतिकेँ भरि दैत छथि ।

एहि तरहेँ माएक एकादशी यज्ञ पूरा भेल । आब माएकेँ एकादशीक उपास नहि करबाक रहैत छलनि । मुदा अखनो बहुत रास उपास सभ ओ करिते छलि । चतुर्दशीक उपास सोपबाक हेतु अगिला साल ओरिआन भेल आ हमरा अनुपस्थितिमे सुरेन्द्रजी आ हुनकर परिवार एहि काजकेँ पूरा करओलथि ।

सेवानिवृत्ति

लगभग साढ़े उनचालीस साल नौकरी केलाक बाद हम योजना आयोगसँ उप सचिवक पदसँ सेवानिवृत्त भए गेलहुँ । जौँ हमरा चारि-पाँचमास आओर नौकरी वाँचल रहैत तँ हम संभवतः निदेशकक पदसँ सेवानिवृत्त होइतहुँ। उप सचिवसभकेँ निदेशकक पदपर एकमुस्त प्रोन्नति देबाक विचार बहुत दिनसँ सरकारक विचाराधीन रहैक । मुदा ओकर कार्यान्वयनमे देरी भेलैक । परिणामस्वरुप, हमरा सन कैकगोटे एहि अवसरसँ बंचित रहि गेलहुँ। आब तकर कोन हिसाब ? जीवनमे कथी-कथीसँ बंचित रहलहुँ आ की भेटि गेल तकर लेखा-जोखा करबामे दुख छोड़ि आओर किछु नहि भेटि सकैत अछि । जएह भेटि गेल,जे प्राप्त कए सकलहुँ सएह कोन कम? हमसभ बज्र देहातमे सभदिन रहलहुँ । दिल्ली देखब सेहो नहि सोचि सकी आ भरि जिनगी दिल्लीमे रहलहुँ,एतहि नौकरी केलहुँ । सभदिन अंग्रेजीमे लिखलहुँ,पढ़लहुँ,बजलहुँ । एकमानेमे जीविका अंग्रेजीक बदौलत

चलल ।बी.एस-सी भौतिक शास्त्रक पढ़ाइसँ एतबे फएदा भेल जे किछु दिन बारहमा किलासक विद्यार्थीकेँ ओहि विषयमे ट्युशन देलहुँ । असलमे विषयक चुनाओमे विद्यार्थीसभक व्यवहारिक दृष्टिकोण कम सँ कम हमरासभक समयमे नहि रहैत छलैक ।आब से बात नहि छैक । लोकसभ बहुत बुझनुक भए गेल अछि । परिस्थिति सेहो बदललैक अछि । विद्यार्थीसभक सामनेमे बहुत रास विकल्प रहैत छैक । हमरासभक समयमे जौँ नीक विद्यार्थी अछि तँ तकर सपना रहैत छलैक इंजीनियर वा डाक्टर बनब । तकर बाद जे बाँचि गेल से एमहर-ओमहरक विषय रखैत छल ।

नौकरी करैत सभसँ मोसकिल बात ई छलैक जे हमरा लगमे टाका बहुत सीमित रहैत छल । इमानदारीक सीमित आमदनीमे जिअब आसान नहि छल । एकहिसाबे हमसभ जीवन भरि तरुआरिक धारपर चलैत रही ।जँ कनीको एमहर-ओमहर पैर पड़ल तँ गेल घर छी ।जँ पिछरि कए खसलहुँ तँ केओ सम्हारनाहर नहि? मुदा आब ई सोचि कए आश्चर्य होइत अछि जे कुल मिला कए हम सभ ठीक-ठाक समय काटि लेलहुँ । अपना जीवनभरिमे ककरोसँ एकपैसा नहि लेलहुँ आ ने कोनो अपेक्षा कहिओ रहल । जे पार लागल से लोककेँ मदतिए केलिऐक। सन्१९८४सँ नबंबर २०१६मे मायक मृत्यु पाँचमास पूर्वधरि लगातार माएकेँ गाम मनीआर्डर पठबैत रहलहुँ ,से तरवन जखन की हमर अपन आर्थिक स्थिति बहुत संघर्षपूर्ण रहैत छल ।

सेवानिवृत्तिक बाद जखन गाम गेलहुँ आ आपसी बटबाराक गप्प उठलैक तँ हमर तेसर भाइ कहि नहि की-की बजैत रहलाह । परिणाम ई भेल जे हम गाममे घर नहि बना सकलहुँ । इच्छा रहए जे सेवानिवृत्तिक बाद गाम आएब-जाएब । नौकरीक दौरान अपन

समाजसभसँ फटकी रहए पड़ल,से आब भेंट-घाट होइत रहत । मुदा ओ ततेक विरोध केलाह जे मोनक सेहेंता मोनेमे रहि गेल । नौकरीक दौरान जेहो गाम अबैत जाइत छलहुँ सेहो आब नहि भए पबैत अछि । कारण की कहू? फेर करवनो ओहिपर विस्तारसँ चर्च करब।

सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बाद एकटा शून्यता तँ आबिए गेल । ओना साढ़ेआठ बजैत-बजैत कार्यालय बिदा भए जाइत छलहुँ । तकरबाद घरक लोकसभ अपन दिनचर्यामे निश्चिंत भए लागि जाइत छल । मुदा सेवानिवृत्तिक बाद किछुदिन तँ हुनको सभकेँ एहि परिवर्तनसँ असोकर्ज होबए लगलनि । थोड़बे दिनक बाद हम वकालतक काज शुरु कए देलहुँ । कारी कोट पहिरबाक आदति नहि रहबाक कारण शुरुमे कोनादनि लगैत छल । तेँ कोटकेँ झोरामे राखि ली आ बादमे पहिरी । लगभग डेढ़साल हम वकालत करबाक उद्येश्यसँ केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण जाइत रहलहुँ ।

तकर बाद सरकारक विभिन्न विभागमे सलाहकारक काज करबाक हेतु हमरा तीन बेर मौका भेटल । हम एकठाम तँ अत्यधिक अव्यवस्थाक कारण एक दिन काज केलाक बाद हटि गेलहुँ । एकठाम तँ गेबे नहि केलहुँ । तेसर ठाम लगभग तीन मास काज केलहुँ । काज की केलहुँ सोफापर बैसल रहलहुँ । ओ विभाग छल निलीट । केन्द्र सरकारक एलेक्ट्रोनिक विभागक अधीन काज करैत एकटा संगठन। ओहिठाम एकटा उड़िआ रजिष्ट्रारक पदपर काज करैत छलाह । तीन मास धरि बैसबाक कोनो जोगार नहि भेल । कोनो काज नहि देल गेल। दरमाहा जरूर समयपर भेटि जाए । हम दिनभरि एकटा अधिकारीक सोफापर बैसल अखबार पढ़ैत रहैत छलहुँ । ओहिसँ जँ मोन उबिआइत तँ विभागक भवनमे भीतरे-

भीतर कतेको चक्कर लगबैत रहैत छलहुँ । ताहूसँ जँ समय नहि कटल तँ बाहर निकलि गेलहुँ । भोजनावकाशक समयमे तीनगोटे मिलि कए टहलैत चलहुँ । कार्यालयक समय बीतैत देरी बाहर भए जाइत छलहुँ । जखन कखनो रजिष्ट्रार जीकेँ कहिअनि तँ ओ कहए लगितथि-“हो जाएंगा। बढ़िआँ होंगा । थोड़ा वेट करिए ।” हम जाहि सोफापर बैसी से एकहाथ धसि गेल मुदा हमर कोनो नियमित व्यवस्था नहि भेल-ने बैसबाक ने काजक । कखनो काल अकट-विकट काज दए देल जाए जाहिसँ हम बेसी फसाद नहि करी । हारि कए तीनमासक बाद हम ओहि काजसँ त्यागपत्र दए देलहुँ ।

ताधरि हमर चयन दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पद हेतु भए गेल छल । हमर अनुमान छल जे पनरह दिनमे ओहि पदपर नियुक्ति भए जेतैक। मुदा से नहि भेलैक । दिल्ली सरकारमे फाइल मासक-मास पड़ल रहल । लगभग चारि मासक बाद जा कए अधिसूचना जारी भेल। तखन हमसभ तीस हजारी न्यायालयमे जिला जजक समक्ष शपथ ग्रहणक हेतु उपस्थित भेलहुँ ।

शपथग्रहणक कार्यक्रम अचानक बनल रहए । ताहि हेतु कारी कोट,उज्जर सर्ट जरूरी छल । कारी टाइ जरूरी छल । टाइ आ सर्ट तँ तीस हजारीमे किनि लेलहुँ । सपराजीक सहयोगसँ एकटा ओकीलक कारीकोट कनी कालक हेतु पैंच लेलहुँ । संयोग एहन भेलैक जे शपथग्रहण जे दू बजे होएबाक रहैक से चारि बजेक बाद शुरु भेल । ताधरि तँ ओकील साहेब कोटक वापसीक हेतु छटपटा रहल छलाह । कतेको बेर सपराजीकेँ फोन केलखिन । सपराजी हमरा कहैत रहलाह । मुदा कएल की जाइत? हम तँ कोट पहिरने शपथग्रहणक बाट तकैत रही । ओकील साहेबक धैर्य चुकि

रहल छलनि । ओ द्वारिपर आगू-पाछू करए लगलाह । खैर! थोड़बे कालमे शपथग्रहण शुरु भेल । दस मिनटक बाद हम ओकीलसाहेबक कोट हुनका वापस केलहुँ । ओ किछु-किछु बड़बड़ाइत चलि गेलाह । हमरा बहुत अफसोच होइत छल जे हुनकर कोट किएक लेलहुँ । किछुगोटे तँ बिना कोटेक शपथ लए लेलाह ।

शपथग्रहणक बाद नेशनल जुडिसिअल अकेडमी द्वारिका,नई दिल्ली आ विभिन्न न्यायालयसभमे प्रशिक्षण देल गेल। तकरबाद हमर नियुक्ति स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पदपर उच्च न्यायलय दिल्ली द्वारा भए गेल जे ६५ सालक बएस होएबा धरि चलैत रहल । एहि तरहेँ हमरा एकबेर फेर कुर्सी,टेबुल भेटि गेल। किछु नियमित काज भेटि गेल आ किछु कर्मचारी सभ सेहो भेटल जे माहौलकेँ रमनगर बनओने रहैत छलाह ।

हमर पहिल पोस्टींग यमुना विहारमे म्युनिसिपल न्यायालयमे भेल । ओहिठाम लगभग एकसाल काजकेलाक बाद हम लाजपतनगरमे स्थानांतरण हेतु आवेदन देलिऐक कारण हमर डेरा इन्दिरापुरमसँ बदलि सेक्टर चालीस नोएडा भए गेल छल । मास दिनक भीतरे हमर पोस्टींग लाजपतनगरक जलबोर्डक न्यायालयमे भए गेल । सालभरि ओतए काज केलाक बाद हम लाजपतनगर म्युनिसिपल न्यायालयमे चलि गेलहुँ ।

लाजपतनगर अएलाक बाद सुविधा बढ़िआँ भए गेल । किछुदिनक बाद हम ग्रेटर नोएडा स्थित अपन घरमे चलि गेलहुँ । मोनमे चिंता होअए जे एतेक दूरसँ काज कोना कए सकब । मुदा हमरा बैट्रीसँ संचालित एकदम नव सरकारी कार वाहन चालक सहित भेटि गेल । आब लाजपतनगर जाएब-आएब कोनो समस्या

नहि छल । हम अपन घरसँ पचास मिनटमे लाजपत नगर न्यायालय पहुँचि जाइत छलहुँ। तेँ कहल जाइत अछि जे पहिनेसँ चिंता नहि करी । समय अएलापर सभ समस्याक अपने समाधान भए जाइत अछि ।

हमरा जनैत सेवानिवृत्तिक बाद भेटल स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक काज एकटा वरदान छल । एहि नौकरीमे मान-सम्मानक तँ छलहे,संगहि काज करबाक पूर्ण स्वतंत्रता सेहो छल । केओ अहाँकेँ ई नहि कहि सकैत अछि जे एहि मामिलाकेँ एना-ओना कए दिऔक । अहाँ नियम,कानून आ मामिलाक तथ्यक आधारपर निर्णय लेबाक हेतु स्वतंत्र छी । सुविधा सेहो ठीक-ठाक छल । कार्यालय चलेबाक लेल कर्मचारी,बैसबाक लेल एसी लागल आफिसक स्वतंत्र कोठरी आ घरसँ कार्यालय धरि आ वापसी यात्राक हेतु स्वतंत्र कार सेहो छल ।आब की चाही?

ई बात अलग अछि जे एहि तरहक न्यायालयमे सुधारक बहुत गुंजाइस छैक । मुदा सरकार आ उच्च न्यायालयोक अपन सीमा छैक । सीमित साधनमे एतेक रास न्यायालयसभक देख-रेख करक होइत छैक । ताहि हिसाबे जे भए रहल अछि सएह बहुत । हम तीन वर्ष चारि महिना एहि पदपर रहलहुँ । ओहि दौरान तीन विभिन्न न्यायालयमे हमर पोस्टींग भेल । सभठाम हम नियमसँ काज करबाक प्रयास कएलहुँ । मुदा किछुगोटे नियमसँ हटि कए बेसी जुर्माना लगबैत छलाह । जखन करवनो अभियुक्त उच्चतर न्यायालयमे अपील केलक तँ ओकर जुर्मानाक वापसी तँ भेवे कएल,संगहि संवंधित मजिस्ट्रेट न्यायालयक खिलाफ प्रतिकूल टिप्पणी सेहो होइत छल। जे-से । सभ समाजमे सभ तरहक लोक होइत छथि । एहूठाम सभ तरहक लोक रहथि जे विभिन्न विभागमे

उच्च पदसभपर काजसँ सेवानिवृत्तिक बाद एतए काज करैत छलाह। मुदा कहबी छैक जे आदमीक स्वभाव संगे जाइत अछि ।

१ जनवरी २०१९क पैंसठि वर्षक आयु पूर्ण भेलाक बाद हमरा स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पदसँ मुक्त कए देल गेल । तकरो आब दू साल भए गेल । हम फेरसँ ओकालतक लाइसेंसकेँ जगओलहुँ । कहिओ काल कचहरी सेहो जाइत रहलहुँ । तकरबाद पछिला साल मार्चसँ कोरोनाक से प्रहार भेल जे सौंसे दुनिआ बंद भए गेल । हमहुसभ मोटा-मोटी घरेमे बंद रहि जान बँचा रहल छी।

समय-समयपर दिल्लीक विभिन्न इलाकामे पसरल न्यायालयसभमे काज करैत स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटसभक आपसी भेंट-घांटक हेतु सामुहिक बैसार क आयोजन हम आ श्री ओमप्रकाश सपराजी करैत छलहुँ । ई आयोजन बेसीकाल कनाटप्लेसमे होइत रहल । एकाध बेर आनो ठाम भेल । कुलमिला कए एहन आयोजनसँ मजिस्ट्रेट लोकनिक आपसी परिचय आ एकप्रकारक सकरात्मक सोचबला लोकसभक सशक्त समूह बनि गेल जे बहुत दिन धरि सकृय रहल । मुदा कोरोना कालमे तँ सभकिछु ठप्प भए गेल । तहिना इहो बैसार बंद भए गेल । आशा करैत छी जे एकबेर फेर नीक समय आओत,आ हमसभ फेर ओहिना एकठाम बैसारक आयोजन कए सकब ।

कैकटा गलत निर्णय भेल

ओना तँ जीवनमे नीक-बेजाए होइते रहैत अछि । कोनो निर्णय अपना-आपमे पूर्ण नहि होइत अछि । सभ किछु समय सापेक्ष होइत अछि । समय बदलेत रहैत अछि । लोक बदलैत रहैत अछि । परिस्थिति बदलि जाइत छैक । तैं जे काल्हि सही लागैत छलैक से जरूरी नहि अछि जे आइओ सही रहि जाइक । कमोबेस ई बात सभपर लागू होइत अछि । पैघ सँ पैघ व्यक्तिक निर्णयकेँ लोक बादमे निंदा करैत देखल जाइत अछि । जरूरी नहि अछि जे ओहि निर्णयक पाछू कोनो दुर्भावना रहल होएत । ओहुना सभक स्वभाव एकरंग नहि होइत अछि,सभक पसिंद एक रंग नहि होइत अछि । तथापि ई कहल जा सकैत अछि जे मोटा-मोटी जे अधिकांश लोककेँ नीक लागनि,हितकर होनि,से नीक कहल जा सकैत अछि । ओना तँ भावी प्रवल होइत अछि । केहनो आदमीक मति गड़बड़ा सकैत अछि । चाहिओ कए गलतीसँ नहि बँचल होइत छैक । भगवान रामकेँ राजगद्दी होएब तय भए गेल रहए । मुदा समय एहन पलटी मारलक जे हुनका राज के कहए वनमे साधुक बेसमे जाए पड़लनि ।

हम जखन कखनो बितल बातसभ पर सोचैत छी तँ कैकटा गलतीसभ देखाइत अछि । होइत रहैत अछि एना नहि ओना करबाक चाहैक छल । मुदा आब सोचलासँ की फएदा? कहल जाइत छैक जे गतं न सोचामि ,कृतम् न मन्येत । बातो सही छैक । बितलाहा बातसभ पर घमरथन केलासँ की होएत? किछु नहि,अपितु अनेरे मोन व्याकुल रहत । तथापि किछु एहन घटना भए जाइत अछि जकर दीर्घगामी परिणाम होइत अछि । हमरा

लगैत रहैत अछि जे कम सँ कम तीनटा एहन घटना जरूर भेल जकर प्रभाव हमरा पूरा परिवारपर बहुत दिन धरि रहल । ओ घटनासभ थिक-दिल्लीमे रहैत मधुबनीमे घर बनाएब,बीपीएससीक प्रतियोगिता परीक्षामे मैथिली पत्रक मिथिलाक्षरमे उत्तर लिखब आ दिल्ली छोड़ि कए ओही नौकरीमे इलाहाबाद चलि जाएब । ओना दरभंगा छोड़ि कए दिल्लीक नौकरी पकड़ब सेहो कोनो बहुत फएदा नहि केलक । मुदा ताहि समयमे ओतेक गहींर नहि सोचल जा सकैत छल आ तत्कालीन परिस्थिति सभ सेहो ओहि निर्णयक हेतु उतप्रेरक छल ।

मधुबनीक मकान

मधुबनीक मकान बनेबाक हेतु सरकारसँ एकलाख बीस हजार कर्ज भेटल छल । ओही टाकासँ जमीन किनलहुँ आ मकानकक काजो भेल । मुदा आधा काज भेल कि नहि भेल,टाका घटि गेल । तकरबाद दूबेर एचडीएफसीसँ कर्ज लेलहुँ । सभटा कर्ज मिलाकए मासिक किस्त करीब पनरह सए भए गेल । ओतेक टाका सभमास दरमाहामेसँ कटि गेलाक बाद घर चलाएब आ गामो माएकेँ पठाएब मोसकिल भए गेल । परिणामस्वरूप, एचडीएफसीक किछु टाका हमरापर बाँकी भए गेल कारण हम ओकर किछु किस्त समयपर जमा नहि कए सकलहुँ । एकदिन एचडीएफसीक आदमी(भल्लाजी) हमर सरोजिनीनगर क सरकारी डेरापर तगादा करबाक हेतु आबि गेल । ओहि समयमे हमर ससुर सेहो ओतहि रहथि । हमरा ओकर डेरापर आबि तगेदा करब,ओहो जखन हमर ससुर आएल छलाह,बहुत खराप लागल । हम ओकरा बहुत जोरसँ डाँटि देलिऐक । ओहो तमसा गेल आ हमरा धमकी देलक जे ओ हमरा खिलाफ मोकदमा कए देत । हम कहलिऐक –

“जे करबाक होअ से करिअह,अखन तँ एहिठामसँ बाहर निकलह।” ओ चलि तँ गेल मुदा जाइते हमर गारंटरसभकेँ नोटिस पठा देलकनि। स्वर्गीय एल.एन.अंचल आ श्री शेषनाथ सिंह हमर गारंटर छलाह । शेषनाथजी तँ परेसान नहि भेलाह मुदा आंचलजी दौड़ल हमरा लग पहुँचलाह । हम ओहि स्थितिक हेतु तैयारे रही । हुनकासभटा कागज देखए देलिअनि जाहिसँ ई स्पष्ट होइत छल जे मात्र किछु किस्त छोड़ि बाँकी हम समयपर भूगतान कए रहल छलिऐक । से सभ देखि ओ संतुष्ट भए गेलाह । थोड़बे दिनक बाद हमरा किछु टाकाक प्रवंध भए गेल आ हम सभटा बँकिऔताक भूगतान कए देलिऐक । मुदा से जाबे नहि भेल ,हम थोड़ेक दिन बहुत चिंतित रहल रही ।

मधुबनीमे मकान बनाएब हमर एकटा जिद छल जे कालांतरमे गलत साबित भेल । अंततोगत्वा, ओ मकान हमरा बेचए पड़ल । मुदा जाइत-जाइतो ओ बड़का उपकार कए गेल । ओहि मकानक बेचलासँ एकमुस्त टाका हमरा भेटल जाहिमे किछु आओर लगा कए हम ग्रेटर नोएडामे तीन महल मकान किनलहुँ जाहिमे आइ-काल्हि हमसभ निचैन भए रहैत छी । मुदा मधुबनीक मकान बनबएसँ लए कए ओकरा किराया लगाएब,किरायाक वसूली करब,ओकरा खाली कराएब आ बेचब एहिसभ प्रक्रियामे कहि नहि कतेक गोटे लागल रहलाह । हमर मित्र श्रीनारायणजी तँ एकर आदिसँ अंत धरि सामिल रहबे केलाह संगहि हमर सासुरक लोकसभ-हमर सासु,ससुर,सार,ममिआ ससुर आ कहि ने के-के एकर निर्माणक काजसँ जुड़ल रहलाह । हमर ससुर तँ हमर आग्रहपर एकर उत्थाने केलाह । ओएह एहि जमीनकेँ तकलनि । मुदा जखन मकान माप-तौल विभाग,बिहार सरकारकेँ किराया

लागल छल आ ओ ने किराया दिअए आ ने मकान खाली करए तखन तँ हम बहत मोसकिलमे पड़ि गेल रही। मकानक किराया निर्धारणमे श्री किशोर कुणालजीक बहुत योगदान अछि । ई बात हम पहिने लिखिए चुकल छी ।

मकान खाली करबएमे मधुबनीक कलक्टर रहल श्री बुर्जिआ साहेबक सेहो बहुत योगदान रहनि । ओ गृह मंत्रालयमे उप सचिव बनि कए आएल रहथि । क्रमशः हुनकासँ संपर्क बढ़ल । एकदिन हम मधुबनी मकानक समस्यासभ हुनका कहलिअनि । तत्कालीन मधुबनीक कलक्टर हुनका अधीन काज केने रहथि । बुर्जिआ साहेब हुनका फोन केलखिनआ हमरा हुनका नामे चिठ्ठी सेहो देलथि । हम हुनकर चिठ्ठी लए मधुबनीमे कलक्टर साहेबकेँ देलिअनि । ओहिसँ पूर्व हमर पत्रक आधारपर बिहारक तत्कालीन मुख्यसचिव बसाक साहेब बहुत सख्त आदेश देने रहथि जे मास दिनक भितरे हमर मकानकेँ खाली करबा देल जाए आ बाँकी किराया सेहो दए देल जाए । मुदा ओ सभ कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए मामिलाकेँ लटकओने रहल । जखन मधुबनीक कलक्टर साहेब स्वयं एहिमे पड़ि गेलाह तखन तँ माप-तौलक इन्सपेक्टरकेँ स्थिति खराप भए गेलैक आ कलक्टरक आदेशानुसार तीनदिनक भीतरे ओ मकान खाली कए भच्चीगाममे कोनो मकानमे चलि गेल। मकान खाली भेलाक बाद हमरा बहुत उसास बुझाएल। भेल जेना मोनपरसँ कतेक भार हटि गेल ।

दू-तीन सालक अथक प्रयासक बाद मधुबनीक मकान ठाढ़ भेल छल आ तुरंते बिहार सरकारक माप तौल विभागकेँ किरायापर दए देल गेल छल । मकान बनबैत-बनबैत हम कर्जसँ बहुत दबि गेल रही । तथापि मकानक काज अपूर्ण छल । मकानमे किरायेदार

तँ छल मुदा ओ किराया देबे नहि करए । कैकसाल धरि ओएह हाल रहल । तकरबाद बहुत प्रयाससँ ओहि मकानकेँ माप-तौल विभागसँ खाली कराओल गेल । बाँकी किराया सेहो दए देलक । तकर बाद दू तीन साल धरि मकान खाली पड़ल रहल । किछु काज कराएब जरूरी छल । अंततोगत्वा, सन्१९९८मे जा कए मकानक बाँकी काजसभ कराओल गेल आ तकर बादे मकान किरायापर देल जा सकल । ओहि मकानक पहिल किरायेदार तँ माप-तौल विभाग छल । मुदा ओ तँ सरकारी विभाग छल । तकर बाद श्री नंद लाल मिश्रजी ओहि मकानमे किरायापर अएलाह आ करीब तेरह साल धरि ओहिमे रहलाह ।

अंततोगत्वा, भेल की? हमसभ सपरिवार भरि जिनगी दिल्लीमे रहलहुँ । बीचमे नौ साल इलाहाबाद चलि गेल रही । सेवानिवृत्तिक बाद कतए रहब? एहि विषयपर सभगोटे परिवारमे मंथन केलहुँ । सभक इएह मत छल जे दिल्ली वा लगपासमे रहल जाए । मधुबनी जाएब उपयुक्त नहि होएत । हमरा दिलशादगार्डेनमे डीडीएक दू कोठरीक फ्लैट जरूर अछि मुदा ओ पर्याप्त नहि छल । तेँ विचार ई भेल जे ओकरा बेचि कए किछु आओर टाका मिला कए नोएडा वा इन्दिरापुरममे घर किनल जाए ।

हम दिलशादगार्डेनक फ्लैट बेचबाक बहुत प्रयत्न केलहुँ । जकरा-तकरा कहलिऐक । मुदा ओ फ्लैट हम नहि बेचि सकलहुँ । हमरा सेवानिवृत्त भेल तीनसाल भए गेल छल । हम ताधरि किरायाक मकानमे नोएडामे रहैत रही । एकदिन भोरे हनुमानजीकेँ गोहरेलहु-“हे हनुमान जी! आब अहीं किछु करू । हमरासँ तँ मकानक व्यवस्था नहि भेल ।” तकरबाद जे भेल से आश्चर्यचकित कए देलक । हमर मधुबनीक मकानक किराएदार मकान खाली कए

देने रहथि । हम हुनकासँ कुंजी लेबाक हेतु अगस्त २०१५मे मधुबनी गेल रही । ओहि समय वर्षा बहुत होइत रहैक । एकमोन करए जे किछु दिन नहि जाइ । मौसम ठीक हेतैक तखन जा कए कुंजी लए लेब आ कोनो नीक किराएदार भेटि जाएत तँ फेर मकानकेँ किराया लगा देबैक । संयोग एहन भेलैक जे हम मधुबनी गेलाक बाद एक-दूठाम मकान बेचबाक चर्च कए देलिऐक । ओहीदिन साँझमे एकटा ग्राहक पाँच-छ गोटेक संगे आबि गेलाह। लगैक जेना घटकैती होबए बला होइक । खैर! मधुबनीक अपन तरीका छैक। हमरासँ ओ दाम पुछलाह । हम अनुमानित दाम कहलिअनि । कनी-मनी गप्प केलाक बाद ओ सभ चलि गेलाह । दोसरदिन भोरे ओ हमर पूर्व किराएदार श्री नंदलाल मिश्रजीकेँ लेने चलि अएलाह। मोसकिलसँ घंटा भरिक चर्चक बाद मकान बिका गेल । एतेक आसानीसँ मधुबनीक मकान बिकाएत से हम नहि सोचि सकल रही। मुदा से भेल ।

दू-तीन दिनमे ओ हमरा सभटा टाका दए देलाह । मकानक रजिष्ट्री सेहो भए गेल । हम काज संपन्न कए दिल्ली अएलहुँ । तकरबाद दिल्लीक लगपासमे मकान किनबाक बात जोर पकड़लक । मास दिनक भीतरे एन.एस.जी सोसाइटी,ग्रेटर नोएडामे मकान किनबाक निर्णय भए गेल । जमीनपर तीन महल बनल मकान हमसभ किनि ओहि मकानमे आब साढ़े तीनसालसँ परिवार सहित रहि रहल छी । मुदा ई सभ एकटा चमत्कारसँ कम नहि भेल। हमरा लगैत रहैत अछि जे हनुमानजीक कृपासँ से सभ संभव भेल ।

मधुबनीक मकानमे हम सपरिवार सन्१९८८सँ २०१६ धरि ओझराएल रहलहुँ ।कर्ज ततेक भए गेल जे मासिक किस्त सधबैत-

सधबैत तबाह भए गेलहुँ । नेनासभक शिक्षा धरि पर ओकर प्रतिकूल प्रभाव पड़ल । घरमे आर्थिक कष्ट बढ़ि गेल । मुदा गलती तँ अपने छल । कैकगोटे हमरा मधुबनीमे मकान बनेबासँ मना करथि । मुदा हम हुनकासभक बातपर ध्यान नहि देलिऐक । अपन बातपर अड़ल रहि गेलहुँ । ताहिमे कष्ट छोड़ि किछु नहि प्राप्त भेल । मुदा एतबा भेल जे जाइत-जाइत ओ मकान हमरा एतबा टाका दए देलक जे हमर मकानक समस्याक सही समाधान भए गेल आ बिना कोनो ऋणकेँ हम ग्रेटर नोएडाक उपरोक्त मकान किनि सकलहुँ । मुदा दिलशादगार्डेनक फ्लैट ठामहि अछि ।

दिल्लीसँ इलाहाबाद

हम दरभंगाक नौकरी छोड़ि दिल्ली चलि गेल रही । सोचने रही जे दिल्लीमे बेसी बरक्कति होएत,बड़का हाकिम बनि जाएब। मुदा दिल्ली गेलाक बाद मोन बेचेन रहए लागल जे कखन एहिठामसँ निकलब। स्थान आ माहौलमे परिवर्तनक बाद फेरसँ स्थापित हेबामे किछु समय तँ लगबे करितैक । हमरा लगैत अछि जे हम से नहि कए एहि जोगारमे लागि गेलहुँ जे कहुना दिल्लीसँ कतहु दोसर सहरमे चलि जाइ ,जखन की हमर नौकरी(केन्द्रीय सचिवालय सेवा) एहन छल जे हम सौंसे जिनगी दिल्लीएमे काटि सकैत छलहुँ । बदलीक कोनो प्रयोजन नहि रहैक ।

मुदा हमरा मोनमे बैसि गेल रहए जे दिल्लीमे ओतेक आमदनीमे गुजर मोसकिल होएत । फेर गामक चिंता तँ रहबे करए। जखन से बातसभ छल तखन हमरा दरभंगा छोड़ि कए दिल्ली अएबेक नहि चाहैक छल । थोड़बे दिनक बाद इलाहाबादमे कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालय खुजबाक रहैत । ताहि हेतु किछु पदसभ प्रतिनियुक्तिक आधारपर भरबाक परिपत्र निकलल

रहैक । हम ओहि हेतु आवेदन कए देलिऐक । जेना-तेना हमर चयन सेहो भए गेल आ ९ जनवरी १९७८ कए हम इलाहाबादक स्टेनली रोड स्थित कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालय पहुँच गेल रही ।

जनवरी १९७८सँ फरबरी १९८७ धरि हम लगभग ९ वर्ष कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादमे काज केलहुँ । एहि दौरान कहि नहि सकैत छी जे ओहि कार्यालयमे की-की भेल । लगबे नहि करैक जे कोनो सरकारी कार्यालयमे काज कए रहल छी । मोसकिलसँ बारह-तेरह आदमीक ओहि कार्यालयमे किछु-ने-किछु लफड़ा लागले रहैत छल सेहो तखन जखन कि ओकर स्थानीय प्रमुख निदेशक स्तरक आइ.ए.एस अधिकारी छलाह । ओहिठाम एतेक तनावक प्रमुख कारण छल काजक अधिकता । दोसर कारण छल स्थानीय कर्मचारी सभक जमघट । तेसर कारण छल नौकरी भर्तीसँ संबंधित काज होएब । साइते कोनो एहन दिन बितल होएत जे कोनो-ने-कोनो कांड नहि भेल होअए । आइ समयोपरि भत्ता नहि भेंटबाक कारण हड़ताल तँ काल्हि परीक्षाक हेतु सहरे-सहरे घुमनाइ ,तेसर दिन भेने कर्मचारीसभक आपसी झंझटि । एतेकसभ किछु होइतो सभ ओहीठाम रहए चाहए । जहाँ ककरो बदलीक चर्चा होइत की ओ जान लगा दैत जाहिसँ बदली रूकि जाए । जँ कोनो कारणसँ ककरो बदली भइओ जाइ तँ थोड़बे दिनमे जोगार लगा कए कुदैत-फानैत वापस आबि जाइत । अधिकारी लोकनि सेहो बेबस रहथि । हुनका लगमे कोनो बेसी विकल्प नहि छल । घोड़ा जाइत छल तँ हाथी अबैत छल । सभ अपना-आपमे नमूना छल ।

एकटा आइएएस अधिकारी एकदिन कहलाह –“हम कलक्टर थे तब भी इतनी दिक्कत नहीं हुई जितनी मुझे इन तेरह लोगों को सम्हालने में हो रही है ।” सोचल जा सकैत अछि जे एहन माहौलमे केओ सुखी केना रहि सकैत अछि? हमरा तँ एकटा सहकर्मी शुरुसँ अंत धरि तंग करैत रहि गेलाह । ओ हमर समकक्ष पदपर छलाह तथापि एना करथि जेना हमर हाकिम होथि। हमर किछु क्षति भए जाए ताहि हेतु किछु करए हेतु तैयार रहैत छलाह । हमरासँ गड़बड़ ई होइत छल जे ओ जे किछु करथि हम तकर प्रतिकृया करए लागी । परिणामस्वरुप, हमर छवि खराप होइत रहल । दिन-राति गुटबंदीमे लागल रहू । कार्यालयमे काज करू आ तकरबादो कार्यालयक सड़लाही राजनीते करैत रहू । हम जे सोचने रही जे इलाहाबाद सस्त होएत,जिनाइ आसान होएत,गाम लग होएत ,से सभ किछु नहि भेल । दिल्लीमे १६० रुपया किरायामे दू कोठरीक फ्लैट लेने रही आ इलाहाबादमे १६५मे लगभग ओतबे कोठरीक मकान रहए । आनो खर्चामे कोनो अंतर नहि भेल । अपितु,बढ़िए गेल । कार्यालयमे ततेक काज रहैक जे गाम जेबाक सबाले नहि छल । एहिठाम तँ रविओ दिन कए कार्यालय खुझल रहैत छल । कारण सामान्यतः ओहीदिन प्रतियोगिता परीक्षासभक आयोजन होइत छल । हमरासभकेँ शुरुमे मासक-मास एकहुटा छुट्टी नहि भेटल ।

बादमे हालात एहन भेल जे तत्कालीन निदेशक हाथ धो कए हमर पाछू पड़ि गेलाह आ हमर इलाहाबादसँ बदली कराइए कए मानलाह । हम अपना भरि बदलि रोकबाक बहुत प्रयास केने रही। मुदा जे ओ चाहलथि सएह भेल । आखिर,हम वापस दिल्ली आबि गेलहुँ । कुलमिला कए देखल जाए तँ इलाहाबाद जेबाक प्रयोग

व्यर्थ साबित भेल । जँ हम ओतए नहि गेल रहितहुँ तँ दिल्लीमे ओही समयमे गरिआ गेल रहितहुँ । एहिठाम बेहतर अवसर छल । मुदा भावी कहल जाए,गलत निर्णय कहल जाए,जे कहल जाए से भेल। एकबेर हम दिल्ली वापस आबि गेलहुँ तकर बाद दोबारा इलाहाबादक पोस्टींगक प्रयास नहि केलहुँ । शेष लगभग छब्बीस साल दिल्लीएमे लगातार रहलहुँ ।

बदलि जाइत छैक समय

हम एकटा संपन्न परिवारमे जनमल रही । हमर पिता बाबाक एकमात्र संतान रहथि । हुनकर बिआह सिंघिआ ड्योढ़ीक बहुत संपन्न परिवारमे भेल रहनि । हमर पिताकेँ नओटा संतान भेलनि । पाँचटा बेटी आ चारिटा बेटा । हम हुनकर छठम संतान रही । तीनूभाइ हमरासँ छोट रहथि । बहिनसभक बिआह बाबू अपने कए देने रहथि । मुदा हम जखन बीएससीमे पढ़ैत रही तँ जेना परिवारक आर्थिक पराभवक विस्फोट भए गेल । ई सभ एकहि दिने नहि भेल मुदा हमरासभकेँ बाबू ई बातसभ नहि कहथि जाहिसँ हमसभ निश्चिंत भए पढ़ि सकी। हुनकर सोच ई रहनि जे जँ सभ बेटा नीकसँ पढ़ि लेत तँ फेर सभकिछु वापस भए जाएत ,मुदा से भेल नहि । हमर पढ़ाइ बीचेमे बाधित भए गेल । बीएससी केलाक बाद कोनो आओर विकल्प नहि रहि गेल । नौकरी करए पड़ल । दूरभाष निरीक्षकक नौकरीमे तीनसौ अस्सीटाका दरमाहा रहैक । बिआह से जलदी भए गेल रहए। तेहन स्थितिमे घरोकें मदति करब जरूरी रहैक । बहुतदिन धरि यथासाध्य से हम केबो केलहुँ । मुदा दिल्ली चलि गेलाक बाद किछु बचबे नहि करैक । हमर दरमाहा बहुत सीमित छल। जाबे हम परिवार लए दिल्ली नहि चलि गेलहुं ताधरि ओकर अधिकांश भाग गामपर दैत रहलहुँ । मुदा ओ तँ उँटक मुँहमे जीरक फोरन जकाँ होइत छल ।

जखन पारिवारिक परिस्थिति एहन कठिन छल तखन हमरा किछु साल बिआह टारि देबाक चाहैत छल । बाबू आ माएक इच्छा रहनि जे हमर बिआह भए जाए आ हमहु तकर कोनो विरोध नहि

केलिअनि । मुदा हम एतए चुकि गेलहुँ । जँ हम से केने रहितहुँ तँ हमरो लेल ओ बढ़िआँ रहितए ,मुदा भावी प्रवल । हमर बिआह जरूर भेल मुदा हम कहिओ निश्चिंत नहि रहलहुँ । तकर बाद तँ हमरा चिंता करबाक आदति भए गेल । एहन परिस्थितिमे हम गाम-घरसँ हजारो माइल फटकी दिल्ली ,इलाहाबादमे नौकरी करैत रही। रही दिल्लीमे सोची गामक। सोचबेटा करी ,कहब कोनो बहुत टाका पठा दिऐक,जकर ओतए प्रयोजन रहैक,से नहि । थोड़ बहुत पठबिऐक मुदा ताहिसँ की होइतैक? बेसी टाका कतएसँ पठबितिऐक? बान्हल दरमाहा आ एतेक लोक।

हमरा सरकारी नौकरी रहए जरूर मुदा मुदा दिल्लीमे संगे रहैत अपन व्यक्तिगत परिवारक अतिरिक्त गाममे रहैत परिवारक बोझ लादल रहए । एतेक आदमीक गुजर नौकरीक बान्हल दरमाहासँ कोना होइत? तेँ निरंतर धक्कमधुक्का होइत रहल । हमर दूटा भाइकेँ कालक्रमे सरकारी नौकरी भए गेलनि आ ओ सभ परिवार सहित सहर चलि गेलाह । तेसर भाइ पढ़ए नहि चाहथि,काज करए चाहथि आ काज इलाहाबादमे भेटबे नहि करैक। ताहि लेल दिल्ली बेहतर स्थान छल । जयकान्त बाबूकेँ हुनका लेल कैकबेर कहलिअनि । ओ प्रयासो केलखिन । मुदा किछु नह भए सकलनि। एक बेर जयकान्त बाबू अपन छोट भाइ रमाकान्त बाबू (आइएएस)क नामे चिठ्ठी सेहो देने रहथिन । ओ हुनकर चिठ्ठी लए कए लखनउ रमाकान्त बाबूक डेरापर गेबो केलाह। ओ बहुत स्वागत केलखिन। तकरबाद एकटा सिफारसी चिठ्ठी लिखि कए देलखिन जाहिसँ हुनका इलाहाबादक मोतीलाल नेहरु इंजिनीयरिंग कालेजमे नौकरी होइतनि । मुदा ओहिसभसँ किछु नहि भेल । ओ काज करए कलकत्ता सेहो गेलाह, फेर गाम

वापस आबि उच्चैठ कालेजोमे किछु-किछु केलथि,गाममे एकटा भवन निर्माण सामग्रीक दोकानो खोललथि,बहुत तरहक प्रयाससभ केलथि मुदा कतहु सफल नहि भए सकलाह । तकर बादो जेना-तेना एकटा टेकर सेहो किनल गेल। मुदा थोड़बे दिनमे ओहो बैसि गेल ।

सन् १९८९क फरबरी मासमे पिताक चौहत्तरिम वर्षमे देहांत भए गेलनि । तकरबाद रहि गेलीह हमर माए । गामपर हुनकर अतिरिक्त हमर तेसर भाइक भाइक परिवार रहैत छल । माए आ हुनका लोकनिक भानस-बात फराक होनि । हमर माए सभदिन फराक रहए चाहथि । अपन घरसँ कतहु नहि जाथि आ डीहकेँ कटकटा कए पकड़ने रहलीह । हम लगातार चौतीस साल मनीआर्डर पठा कए हुनकर ओहि संकल्पकेँ मजगूत करैत रहलहुँ । मुदा नब्बे वर्षक आयु पार करैत-करैत ओ काज नहि कए सकथि आ तैओ फराक रहए चाहथि । तखनसँ हुनकर जीवन कष्टकर भए गेलनि । हमर मनीआर्डर कारगर नहि रहि गेल कारण अपन देहमे ताकति नहि रहलनि,काजमे सक नहि लागनि ।

दिल्ली अएलाक बाद जे सभसँ गलत निर्णय भेल से छल मधुबनीमे घर बनाएब । गाम-घरसँ लगाव जीवनक अनुभवक कमी आ जिद्दी स्वभावक कारण ई निर्णय भेल । ओहि समयमे हमर कैकटा शुभेच्छु मित्र आ अधिकारी बहुत बुझेलनि ,बहुत रोकलनि जे मधुबनीमे नहि अपितु दिल्लीमे घर बनाउ । ओहि समयक अवर सचिव प्रशासन(ओम प्रकाशजी) सेहो मना केलनि। ओ तँ अपन सोसाइटीमे फ्लैट दिआबक प्रस्ताव देलनि जाहिमे करीब सवादूलाख लगितैक । सरकारसँ एक लाख बीस हजार गृहनिर्माण अग्रिम भेटैत । तकर बादो बहुतबड़का कमी रहि जाइत

छलैक । हम अपन विचारपर अड़ल रहि गेलहुँ । मधुबनीमे घर बनेलहुँ । मकान बनेबाक लेल सरकारी ऋण कम पड़ि गेल । तकर बाद की होएत? किछु फुरेबे नहि करए? काज रुकि गेल । फेर जेना-तेना एहडीएफसी सँ दू बेरमे चौहत्तरि हजार ऋण लेलहुँ । कहि नहि कोन-कोन कागज देबए पड़ल । पहिलबेरक पचास हजार तँ मकानमे लागल ,मुदा दोसर बेरक चौबीस हजार आन-आन जरूरी काजमे लागि गेल । मकान अधुरा रहि गेल। बाहरसँ सीमेंट नहि लागल,ग्रील नहि लागल । केबार आ खिड़की लागि गेल छल । बिजली नहि लागल छल । एहने मकानकेँ हमर ससुर मकानकेँ बिहार सरकारक माप-तौल विभागकेँ किरायापर दए देलखिन जाहिसँ हमरा किछु आर्थिक फएदा होअए । ओ सभ बहुत दिन धरि ने किराया देलक ने मकान खाली करए । आखिर बहुत प्रयास कए किराया देलक आ लगभग साढ़े तीनसाल रहलाक बाद मकान खालिओ कए देलक ।

मकानक बाँकी किराया दू किस्तमे बैंक ड्राफ्ट बना दिल्ली पठा देलक । पहिल किस्त भेटलाक बाद घरमे सभक इच्छा रहैक जे फ्रिज लेल जाए । पानिक बहुत दिक्कति होइक । मुदा हम से नहि मानि भास्कर(हमर ज्येष्ठ पुत्र)क इच्छानुसार हुनका लेल ध्वनि तंत्र(साउंड सिस्टम) किनि देलिअनि । ओ संगीतप्रेमी रहथि आ हमरा भेल जे जँ गीत सुनताह तँ हुनकर व्यक्तित्व मधुर आ मृदुल हेतनि ।जखन कखनहु एहि प्रसंगक चर्च होइत अछि तँ हमरा एहि निर्णयपर अफसोच होइत अछि । घरमे फ्रिजक बेसी जरूरति रहैक,ओकर बिना गर्मी मौसममे बहुत दिक्कत होइक ।

जनबरी १९७८मे दिल्लीसँ इलाहाबाबद अएलाक बाद हमर आर्थिक स्थितिमे कोनो परिवर्तन नहि भेल ।इलाहाबादमे रहैत हम

मास-दू मास ट्युशन (private tuition)सेहो केलहुँ । मुदा पारिश्रमिक ततेक कम रहैक जे ओहिमे कोनो फएदा नहि बुझाएल । दिल्ली अएलाक बाद सेहो ट्युशनक प्रयास केलहुँ । हम बारहमा किलासक विद्यार्थिकेँ भौतिक शास्त्रक ट्युशन करी ,आन कोनो विषय वा किलासक एकदम नहि । मुदा एहिठाम तँ दलाल (tuition bureau)क चलाचलती रहैक,ओकरासभकेँ कमीशन दिऔक तखने नीक काज भेटत । एकाध बेर हम से केबो केलहुँ । मुदा हमरा ओकरासभकेँ दलाली देब अखरए,नीको नहि लागए । फेर जहा-तहाँ जाए पड़ए,अपन सबारी रहए नहि,बससँ कतेक ठाम जा सकितहुँ? फोन नहि रहलासँ सेहो बहुत दिक्कति होइक । सन् १९९३-९४मे हम किछुदिन कैकटा ट्युशन केलहुँ । ओहि समयमे एकदिनमे एक हजारसँ फाजिले कमा ली । सामान्यतः शनि,रवि कए ई काज करी । आनो दिन साँझमे लग-पासमे ट्युशन कए ली । ताहि हेतु हम साढ़ेपाँच बजिते कार्यालयसँ भागी । दिन भरि एहि हिसाबसँ काज करी जे साँझमे समयपर निकलि जाइ । मुदा कैकबेर अधिकारी लोकनि एहिबातसँ तमसेबो करथि आ तंगो करथि । ट्युशन करबाक हेतु हम बससँ कहाँ-कहाँ ने चलि जाइ । गुड़ग्रामक डीएलएफ कालोनीसँ चांदनी चौकधरि जाइत-अबैत रही । जँ हमरा अपन सबारी रहैत,आ फोन रहैत तँ ई काज नीकसँ कएल जा सकैत छल । मुदा से संभव नहि रहैक । सन् १९९५क बाद हम कहिओ ट्युशन नहि केलहुँ । ओहीसाल हमर ससुर दुखित भए गेलथि आ सन्१९९७मे हुनकर स्वर्गवास भए गेलनि । ओहिसँ पूर्व चिकित्साक हेतु हुनका बेर-बेर दिल्ली आबए पड़नि । हमरोसभकेँ ओहि कारण सँ अस्तव्यस्तता रहबे करए । हमर एकटा संगी ट्युशन करबामे पारंगत रहथि आ एहि काजसँ ओ नीक

उपार्जन केलथि । कैकटा मकान,प्लाटसभ किनलथि । मुदा हम एहि काजकेँ बेसीदिन नहि घिचि सकलहुँ ।

अप्रैल १९८७मे इलाहाबादसँ दिल्ली अएलाक थोड़बे दिनक बाद मधुबनी मकानमे हाथ लगा देलिऐक । हमरा लगमे एकटा रुपया नहि रहए । सभटा काज कर्जेपर हेबाक छल । ओहिमे अनुमानसँ बेसी कर्जा भए गेल । यद्यपि सन् १९८४मे राजपत्रित पदपर प्रोन्नतिक बाद हमर दरमाहा बढ़ि गेल रहए मुदा मासिक किस्त बहुत भए गेलासँ परेसानी बढ़ि गेल । तकर कुप्रभाव परिवारक माहौल आ बच्चासभक शिक्षापर सेहो पड़ल । जे सुविधा हुनकालोकनिकेँ भेटबाक चाहैत छलनि से नहि देल जा सकलनि । फेर गामोक झंझट रहबे करए । सालक-साल सभमास नियमित रूपसँ माएकेँ मनीआर्डर जाइत रहल । बहुत दिन धरि हमरा लग जरूरी सामान जेना फ्रीज, टीभी,पलंग ,आलमीरा नहि छल । तहन छल की? बुलंद हौसला आ कठोर परिश्रमी स्वभावक संग इमानदारीसँ अपन कर्तव्यक निर्वाह करैत रहलहुँ जाहि कारण एतेकटा जिनगीमे ककरोसँ किछु मांगए नहि पड़ल । ताहि हेतु हमर श्रीमतीजी प्रणम्य छथि । जतबे जोगार रहलनि ततबेमे नीक जकाँ घर चला देलनि । कहिओ ककरो देखाउस नहि केलनि । दिन-राति स्वयं मेहनति कए बच्चासभक पालन करैत घरक सभटा काज केलनि । हुनके परिश्रमक फल अछि जे हमसभ दिल्लीसन सहरमे इज्जतिसँ जिलहुँ,आ जिबिओ रहल छी।

जे भगवान कष्ट दैत छथिन सएह ओकरा सहबाक शक्तिओ दैत छथिन आ ओएह तकर समाधानो करैत छथि । साहस आ धैर्य जँ बनओने रहल जाए तँ केहनो कठिन रस्ता पार लागि जाइत अछि। मुदा सेहो शक्ति तँ भगवानेक कृपासँ संभव अछि । जतेक

हमरा दरमाहा भेटैत छल ताहिमे अपन व्यक्तिगत परिवारक पालन-पोषण करबामे कोनो परेसानी नहि छल । मुदा ऊपरसँ जे जिम्मेदारीसभ छल तकर समाधान बहुत मोसकिल छल । से एहू द्वारे जे हमर गामपर केओ अनुशासनमे रहएबला लोकसभ नहि रहथि । करताह अपने मोने मुदा हुनका संगे बहू अहूँ । हुनकर जे तगादा होनि से पूरा करू । माए आ बाबू तँ रहबे करथि । सभ जरुरिए छल मुदा तकर समाधान लेल आवश्यक आमदनी नहि छल । आखिर जेना-तेना समय कटल । जकरा जे सुख-दुख लिखल छलनि से भेलनि ।

हमर माए-बाबू तँ बहुत संपन्न रहथि मुदा परिवार नीकसँ नहि चला सकलाह । किछु स्थिति सेहो काबूमे नहि रहलनि । परिवार बहुत वृहद भए गेलनि । आइ-काल्हि तँ दूटा संतानक पालन करब मोसकिल होइत अछि ,हुनका लोकनिकेँ तँ नओटा बेटा-बेटी रहनि। पाँचटा कन्यादान करए पड़लनि । ततेक करैत-करैत घरक आर्थिक रीढ़ नीकसँ टुटि गेल । आब तँ बहुत समय बिति गेल । ओहिसभपर घमर्थन केलासँ की फएदा?

समय बदलैत छैक । इश्वर न्याय करैत छथिन । मुदा धैर्य जरूरी अछि,जँ से चुकि गेल तखन तँ कष्ट बढ़बे करत ,कम हेबाक सबाले नहि। क्रमशः हमरा भगवान सभकिछु देलनि । बच्चासभ नीकसँ नियोजित छथि आ ससम्मान अपन जीविका चला रहल छथि । सभसँ प्रसन्नताक बाद जे ओ सभ कहिओ हमरासँ किछु नहि मंगलाह । पूर्णतः स्वाबलंबी छथि । हुनकालोकनिक स्वाभिमान प्रशंसनीये नहि अनुकरणीय थिक । एहिसभ लेल इश्वरकेँ वारंबार धन्यवाद दैत रहैत छिअनि।

इएह नियति छल

हम केन्द्र सरकारमे विभिन्न पदपर विभिन्न विभागमे लगभग साढ़े उनचालीस वर्ष नौकरी केलहुँ । सेवानवृत्तिक बादो फेरसँ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेटक पदपर दिल्ली उच्च न्यायलसँ चयन भेल आ तीन साल चारि महिना धरि दिल्लीक विभिन्न न्यायालयमे हम ई काज केलहुँ। पैंसठि वर्षक आयु भेलापर इहो काज सठि गेल। एतेक समयमे कतेको तरहक नीक लोक-बेजाए लोक भेटैत रहलाह । कतेको लोक अएलाह-गेलाह । मुदा किछुगोटे जीवनमे तेना ने जुड़ि गेलाह जकर कल्पनो हम नहि केने रही । ओहिमे नगवासक श्री नारायण झाजी , पिंडारुछ गामक प्रोफेसर(डाक्टर) विनय कुमार चौधरीजी , ओहि समयमे गृह मंत्रालयमे कार्यरत दरभंगा लग पतोर गामक बासी मिसरजी(श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र),इलाहाबादक श्री संजीव सिन्हा जी , आ न्याय विभागमे कार्यरत मुजफ्फरपुर लगक श्री मदन मोहन सिन्हाजी बिसरने नहि बिसरा सकैत छथि । बिना कोनो स्वार्थकेँ ई लोकनि जीवन भरि हमरा सभ तरहें सहयोग करैत रहलाह । एकरे कहल जा सकैत अछि पूर्वजन्मक संवंध । भए सकैत अछि जे ई लोकनि पहिलके जन्मसभसँ हमर अपन रहल होथि । एहन घटना कोनो हमरे संगे भेल होएत से बात नहि छैक । सभ व्यक्तिक संग जीवन मे किछु-ने-किछु चमत्कार होइत अछि जकर व्याख्या करब मोसकिल थिक। हिनका लोकनिक अतिरिक्तो बहुत रास एहन लोकसभ संपर्कमे अएलाह जिनकासँ बहुत तरहक उपकार होइत रहल । ककर-ककर नाम लेल जाए । एहि पोथीमे प्रसंगवश एहने

किछुगोटेक स्मरण भेल अछि । मुदा बहुतगोटेक बारेमे हम नहि लिखि सकलहुँ । तकर मूल कारण प्रकाशकीय समस्या कहि सकैत छी । मुदा तकर माने नहि जे ओ सभ कोनो मानेमे कम महत्वपुर्ण छलाह । अवसर अएलापर भविष्यमे हुनको लोकनिपर लिखवाक प्रयास कएल जाएत ।

जीवन चलिते अछि सहयोगसँ । एकटा मनुक्खक निर्माणमे कतेको लोकक योगदान रहैत अछि । माता-पिता तँ जन्म दैत छथि,पालन-पोषण करैत छथि । मुदा संस्कार आ शिक्षा तँ समस्त समाजसँ भेटैत अछि । सभ वंदनीय छथि,प्रशंसाक पात्र छथि जिनका बिना एतेकटा समय नीकसँ बितबाक कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल । दुर्गामाताकेँ शत्रुसँ लड़बाक हेतु समस्त देवतालोकनि अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र प्रदान केलनि । तकरबादे ओ युद्धमे उतरलीह आ विजयी भेलीह । तहिना एहि जीवन युद्दमे सफलताक पाछू छोट-पैघ अनेको लोकक योगदान रहैत अछि । जन्मसँ मृत्यु पर्यंत समाजक सहयोगक बिना केओ एकडेग नहि बढ़ि सकैत अछि ।

हमरा लोकनिक उच्च विद्यालय एकतारामे गणितक शिक्षक श्री जटाशंकर झाजीक ऋृण कोना सधा सकैत छी जे हमरा गणितमे तेहन पक्का कए देलाह जे आगू कतेको वर्ष धरि हमरा फएदा करैत रहल । हमरा गामक कतेको लोकसभ(जे आब एहि लोकमे नहि छथि) हमरा निरंतर उत्साहित करैत रहलाह,कैकबेर मदति केलाह,तिनकर उपकारकेँ कोना बिसरल जा सकैत अछि । हमर पितिऔति काका स्वर्गीय पंडित चंद्रधर मिश्रजीक प्रेरणादायी विचारसँ हम कतेक उपकृत भेल छी तकर की वर्णन करू । बाबूक कैकटा संगीसभ जेना स्वर्गीय श्यामलाल यादव

(अड़ेर,ब्रह्मोत्तरा),स्वर्गीय कृष्णदेव नारायण सिंह(एकतारा),स्वर्गीय मार्कंडेय भंडारी (अड़ेर,सिनुआरा टोल)सभक अनेको उपकार हमरापर अछि । एही तरहें नौकरीक क्रममे कतेको प्रिय-अप्रिय घटनासँ बहुत शिक्षा भेटैत रहल । तकरासभकेँ कोना बिसरब? जहिना कतेको लोकसभ बिना कोनो लोभ-लालचकेँ हमरा मदति केलनि आ हमर जीवन यात्राकेँ सुगम बनबएमे सहयोगी भेलथि तहिना हमहु जतए मौका भेटए अनका मदति करी सएह सुंदर समाधान भए सकैत अछि। हम से प्रयास केबो केलहुँ । हम ताहिमे कतेक सफल आ सही रहलहुँ से तँ ओएहसभ कहि सकैत छथि । मुदा अपना मोनमे संतोष तँ रहिते अछि जे हमर परिस्थिति छल ताहिमे जे जखन कएल जा सकैत छल से हम केलहुँ ।

हमरा जहिना किछुगोटे स्वतः मदति करैत रहलाह,तहिना किछुगोटे अकारण हमरा परेसान करैत रहलाह । अखनो कखनहु जखन कैकटा बितल बातसभ मोन पड़ैत अछि तँ रोमांच भए जाइत अछि । आखिर ओ सभ एना किएक केलाह? मुदा छोड़ू ओ बात सभ । जीवन अछिए कतेकटा? जँ सएहसभ सोचैत रहि जाएब तँ सोचिते रहि जाएब । किछु नीक नहि कए सकब । नीक बनबाक लेल,नीक करबाक हेतु बहुत किछु छोड़ए पड़ैत अछि । ओहिना जेना श्वेत रंग सातो रंगकेँ छोड़ि कए सात्विकताक ग्रहण करैत अछि। मानलहुँ जे ई ओतेक आसान नहि छैक,तथापि एकटा उच्च आदर्श तँ मोनमे रखबेक चाही । तखने जीवनमे आनंद उठा सकैत छी ।

भोरे नओ बजेसँ साँझ छओ बजे धरि वा ओहूसँ बेसी समय लोकक कार्यालयमे बितैत अछि । ताहिसँ एक घंटा पहिने आ

एकघंटा बादक समय कार्यालय आबए-जाएमे बितैत अछि । कार्यालय बिदा होबएसँ पहिने भोरे उठलाक बाद लोक नित्यकर्मसँ निवृत भए अपना आपकेँ कार्यालय जेबाक हेतु तैयार करैत अछि। कार्यालयसँ घर अएलाक बादो घंटा-दूघंटा धरि कार्यालयक थकान भगबएमे लागि जाइत अछि। कहक माने जे सोमसँ शुक्र दिन धरि कमसँ कम बारह घंटा समय कार्यालयमे वा ओकर तैयारीमे बिति जाइत अछि । एतेक थाकल-ठेहिआएल जखन लोक घर अबैत अछि तँ बेसी किछु करबाक स्थितिमे नहि रहि जाइत अछि । कनी-मनी परिवारक लोकसभ सँ गप्प-सप्प केलाक बाद लोक भोजन केलक आ सुतबाक हेतु चलि गेल । एहि तरहें पाँचदिन बितलाक बाद अबैत अछि शनिक दिन । ओहो तखन जखन कि पाँचदिनक कार्य दिवस होइक । जँ से नहि अछि तखन तँ बस सप्ताहमे एकहिटा दिन बचि जाइत अछि । मुदा आब अधिकांश कार्यालयमे पाँचदिन कार्यदिवस होइत छैक । तेँ लोक सप्ताहमे पाँचदिन काज केलाक बाद सप्ताहांत होबएबला छुट्टीक बहुत उत्सुकतासँ प्रतीक्षा करैत छथि । शनि-रविक दिन अपना हिसाबसँ सुतैत आ उठैत छथि । जतए मोन होइत छनि ,ओतए घुमैत छथि । माल-सीनेमा वा कोनो पर्यटन स्थल जाइत छथि । देखिते-देखिते फेर सोमक दिन आबि जाइत अछि । तकर बाद ओएह दैनिक कार्यक्रम शुरु भए जाइत अछि । ओहिना भोरे उठब,ओहिना समयपर कार्यालय पहुँचब । दिनभरि ओतए कुटौनी करब आ साँझमे थाक-झमारल वापस अपन घर आएब । एहि तरहे आइ-काल्हि करैत-करैत कतेको वर्ष बिति गेल। कोन-कोन विभागसभ ने घुमैत रहलहुँ। अंततोगत्वा, सेवानिवृत्त भए गेलहुँ । एहि तरहे देखिते-देखिते एतेकटा जीवन बिति गेल ।

ई जीवन चमत्कारसँ भरल अछि । एहिमे की कहिआ होएत,के अहाँक मित्र भए जाएत,के शत्रु भए जाएत तकर किछु व्याख्या करब मोसकिले नहि असंभव थिक । हमरा अपने जीवनमे एहन-एनह घटना घटल,एहन-एहन लोकसभसँ उपकार/ अपकार भेल जकर कोनो कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल । आब जखन उनटि कए पाछा देखैत छी तँ हमरा द्वारा समय-समयपर कएल गेल कैकटा निर्णय गलत लगैत अछि । मुदा पचास वर्ष पूर्व जे हमर सोच छल,परिस्थिति छल ,ताही हिसाबे ने निर्णय लितहुँ ,से लेल गेल होएत । आब जखन परिणामक समीक्षा करैत छी तँ स्वयंपर हँसी लगैत अछि । एक तँ परिस्थितिक निर्माण अपना हाथमे नहि छल,फेर तकरबाद कएल गेल प्रयास-कुप्रयासक परिणाम सेहो अपना हाथमे नहि छल । मुदा ई कोनो हमरे संग भेल होएत से बात नहि छैक । पृथ्वीपर विद्यमान समस्त जीव-जन्तु प्रारव्धक अधीन छथि । ककरा कखन की होएत से किछु नहि कहल जा सकैत अछि? बाढ़ि अबैत छैक,लाखो जीव-जन्तुक जीवन नष्ट भए जाइत अछि । आखिर ओ जीव-जन्तुसभ की सोचैत होएत?ओकरसभक की दोष रहैत छैक जे देखिते-देखिते लाखोंक संख्यामे बाढ़िक पानिमे दहा जाइत अछि। मुदा प्रकृतिक विभीषिकाक तँ बुझलहुँ जे ओहिपर ककरो वश नहि रहैत अछि मुदा जे समस्यासभ हमसभ स्वयं जीवनमे ठाढ़ कए लैत छी,तकर की जबाब देल जा सकैत अछि? कहि सकैत छी जे इएह नियति छल ।

हमर इलाहाबादमे नौकरी करए जाएब,जखन की हम दरभंगासँ दिल्लीक केन्द्रीय सचिवालय सेवामे नौकरी करए गेल रही सेहो एकटा नियति छल । हमरा ओहिठाम सुख-दुख भोगबाक छल । शत्रु-मित्र जे बनल,से बनबाके छल । एहीठाम कहल जा

सकैत अछि जे लोक कैक जन्मक कर्मसँ बान्हल रहैत अछि,जे बिना चाहने ओकर पछोड़ करैत रहैत छैक । जीवनक बहुत रास घटनाक कोनो व्याख्या हमरा लोकनि नहि कए सकैत छी। भावी कहि सकैत छी ,प्रारब्ध कहि सकैत छी। मुदा जीवनमे आघात-प्रतिघात सभकेँ सहए पड़ैत छैक,से जकरासँ जकरा भए जाइक । एकर कोनो हिसाब नहि कएल जा सकैत अछि ।

जखन जिनगीक पन्ना वापस उनटबैत छी तँ सोचिते रहि जाइत छी । सोचलिऐक किछु,भेलैक किछु । ई बात कोनो हमरे संगे भेल से बात नहि छैक ।जीवन छैहे तेहने। एकर कोनो निजगुत रस्ता नहि अछि,ई कोनो पहिनेसँ खींचल डरीरपर चलए बला नहि अछि । एक हिसाबे ई आबारा थिक,जे मोन हेतैक सएह करत । प्रकृतिमे सभठाम मोटा-मोटी इएह हाल छैक । जखन मोन हेतैक मेघ बरसि जाएत,जखन मोन हेतैक भयानक गर्मी पड़ए लागत आ कखनो तेहन जाढ़ धरत जे होएत जे एकचारिओमे आगि लगा कए हाथ सेकि ली । बाह रे जिनगी!

हम सोचैत रहैत छी जे जँ हम दिल्ली नहिए जइतहुँ तँ कोनो घाटामे नहि रहितहुँ । हमर कैकटा मित्र मधुबनी,दरभंगामे जिनगी भरि रहलाह आ की नहि कए गेलाह? मुदा फेर ओएह बात? सभक अपन-अपन भाग्य,सभक अपन-अपन कर्म । जीवनकेँ कोनो तय सीमामे व्याख्या नहि कएल जा सकैत अछि । मानि लिअ जे केओ आइएएस कइए गेल तँ की ओ सुखी रहबे करत तकर कोन ठेकान? कोनो ठेकान नहि? कैकटा आइएएस आत्महत्या कए लैत छथि? कैकटा आइआइटी इंजिनीयर अकाल मृत्युक शिकार भए जाइत छथि । तेँ जीवन जे भेटल अछि तकरा मात्र अफसोच करैत बिता लेब,कोनो नीक बात नहि कहल जा सकैत अछि । असल बात तँ

ई थिक जे सभक जीवनक दशा ओ दिसा पूर्वसँ तय अछि आ सभ किछु ओही तरहें होइत अछि जेना ओकरा हेबाक रहैत अछि । प्रकृतिक व्यवस्थामे कोनो दुविधा नहि रहैत अछि । ओ तँ हमसभ स्वयं मोहवश उतपन्न कए लैत छी ।

हम जखन नौकरीमे गेलहुँ तँ शुरु-शुरुमे बहुत परेसानी होअए। ई नहि बूझल रहए जे एहि पेशामे सभकेँ डाँट-फाँट होइते रहैत अछि । केओ कतबो पैघ अधिकारी होथि,हिनका हुनकर वरिष्ठ कहिओ-ने-कहिओ कोनो-ने-कोनो त्रुटि पकड़ि किछु-ने-किछु कहबे करतिन । ई एहि पेशाक संस्कार थिक । तेँ एकरा बेसी ध्यान नहि देबाक छलैक । मुदा हम तँ अपन माता-पिताक बहुत दुलारु संतान रही । परिस्थितिवश, एक्कैसम वर्षेसँ नौकरी करए लागल रही । जँ कोनो बातपर अधिकारी डाँटि देथि तँ बहुत कष्टमे पड़ि जाइ । गाम-घरसँ फटकी रहए पड़ए सेहो बहुत कष्टक कारण रहए ।

असलमे हमरा शुरुमे नौकरी करबाक लूरि नहि रहए । अधिकारी,सहकर्मी आ अधीनस्थ कर्मचारी सभक संग अलग-अलग व्यवहार करब नहि बुझिऐक । क्रमशः एहि माहौलसँ समन्वय करब आबि गेल । तकरबाद नौकरी करब ओतेक मोसकिल नहि रहल । मुदा ताहि प्रयासमे व्यक्तित्वक मौलिकता सेहो क्षीण होइत गेल । सरकारी सेवामे तँ आदमीकेँ एकटा मसीन जकाँ बना देल जाइत अछि । एकर सभसँ नीक शिक्षा हमरा एकटा कार्यालयमे कार्यरत मालीसँ भेटल । ओकरा किछु कहिऐक तकर जबाब “यस सर”मे दैत छल । हम एकबेर पुछलिऐक जे ओ एना किएक करैत अछि । जबाबमे ओ कहलक जे ओकरा एकटा

अधिकारी सिखा देने रहथिन जे सरकारी कार्यालयमे केओ किछु कहए तँ तकर उत्तरमे 'यस सर` कहि देल करी । ओ सएह करए ।

कहबी छैक जे जखन धोती पहिरए जोकर होइत अछि तँ ओ फाटए लगैत अछि । खिआइति -खिआइति ओकर ताग महिन भए जाइत छैक,धोती चिक्कन भए जाइत छैक । मुदा ओ घात-प्रतिघात सहबा जोगर नहि रहि जाइत अछि आ कनिको जोर पड़ितहि फाटि जाइत छैक । सएह बात जीवनोपर लागू होइत छैक। से कोना? तँ कहिए दैत छी । युवावस्थामे लोककेँ बहुत ऊर्जा रहैत छैक । लोक खतरा उठा सकैत अछि । मुदा जीवनक अनुभव कम रहबाक कारण उल्टा-पुल्टा निर्णय भए जाइत छैक । अनुभव होबएमे समय लगैत छैक,सौंसे जीवन बिति जाइत छैक । मुदा ताधरि समये नहि रहि जाइत छैक जे लोक सुधार कए सकए। तेँ चाही जे अनुभवी लोकनिक विचार ली,हुनकर ज्ञान सँ फएदा उठाबी । नेना जकाँ आङुर जराए कए आगिसँ बँचबाक शिक्षा नहि ली । आब जखन पाछू घुमि कए सोचैत छी तँ लगैत अछि जे कैकटा एहन गलतीसभ भेल जाहिसँ बँचल जा सकैत छल । मुदा आब ओहिपर सोचलासँ की फएदा? जे हेबाक छल से भेल । समय समाप्त अछि। जीवनक अंतिम अध्याय चलि रहल अछि ।

ई बात तँ निर्विवाद अछि जे एहि संसारमे केओ असालतन नहि रहल । जे आएल से गेल । तखन जे अवसर भेटल अछि तकरा नीक सँ नीक उपयोग कए लेबे बुधिआरी थिक । बहुत लोक से प्रयास करितो छथि । बहुत लोक प्रयास कइओ कए प्रारव्धवश बेसी नहि कए पबैत छथि । लोक सोचबाक हेतु विवश भए जाइत छथि जे एहुनका संगे एना किएक होइत छनि?

ई जीवन बहुत रहस्यात्मक अछि । केओ जनमिते अछि संपन्न घरमे जतए ओकरा सभ किछु स्वतः सुलभ रहैत अछि । तँ केओ जनमिते सड़कपर मजदूरी करैत अपन माएक संगे रहए पड़ैत छैक । भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषः । अहाँ कतबो किछु कए लेब मुदा जँ भाग्य दहिन नहि रहल तँ अहाँ ठामहि रहि जाएब । एक सँ एक धनीक,विद्वान,उच्चपदपर आसीन लोक सभ किछु अछैत दुखी रहि जाइत छथि आ मामुली खेतिहर जन-बनिहार निचैन फोंफ कटैत अछि । ओतहि श्रीमान लोकनि सभ किछु सुविधाक अछैत भरि राति करौट बदलैत रहि जाइत छथि । तेँ मात्र भौतिक उपलब्धिएसँ जीवन सुखी नहि भए सकैत अछि । मनुक्खकेँ चाही मोनमे सकून ,निश्चिंतता आ सभसँ बेसी शांति ।

सभ कथाक अंत होइत अछि । नीक-बेजाए सभ समय बिति जाइत छैक । मुदा ओकर स्मरण बाँचल रहि जाइत छैक । चाहे कतबो पैघ लोक होथि ,हुनको जीवनमे उठापटक होइते छनि,उत्थान-पतन होइते छनि । सुख-दुखक क्षण अबिते छनि । चाहे कतबो संपन्न लोक होथि,कतहु-ने-कतहु हुनको अभाव रहिए जाइत छनि । एहिसभसँ बहुत शिक्षा भेटैत अछि – “हे मनुक्ख! अहाँ अपन सीमान सँ परिचित रहू । अहंकारवश गलती पर गलती नहि करैत जाउ । उलटि कए पाछू ताकू । साइत किछु सुधार अपनामे कए सकी । जे किछु अपराधवोध मोनमे गड़ि गेल अछि,ताहिसँ मुक्तिक मार्ग ताकू । तखने सही मानेमे अहाँ सुखी भए सकब ।”

हमर उनहत्तरिम वर्ष चलि रहल अछि । एहि अवधिमे जे केओ जाहि रूपमे भेटलाह सभ स्मरण होइते रहल अछि,होइते रहत। सही मानेमे ओ सभ धन्यवादक पात्र छथि जे हमरा कहिओ

कोनो रूपमे मदति केलाह । संगहि ओहो कम धन्यवादक पात्र नहि छथि जे बेबजह यदा-कदा परेसान करैत रहलाह । साइत ओ हमर आंतरिक शक्तिकेँ जगबैत रहलाह जाहिसँ हम आओर दृढ़तासँ जीवन संग्राममे जुटल रहि सकलहुँ । अन्यथा तँ कहि नहि हम कतए रहितहुँ ?एहि दीर्घकालीन जीवन यात्रामे भेटल बहुत रास स्मृति शेष हमर पाथेय थिक जकर बलें हमरा विश्वास अछि जे आगामी शेष समय सेहो नीकसँ कटि जाएत।

जाइत-जाइत Francis Duggan क बहुत उपयुक्त आ प्रेरणादायी कविता Thank you life!पढ़ैत चली –

Thank you life!

I have had a good innings and I have a nice wife
And if I die tomorrow I will have had a good life
I am not financially wealthy or I am not in poverty

I thank you life you have been quite good to me
In my life's seventh decade this is quite a long time
Some forty years beyond my physical prime
Lucky as far as health goes without ache or pain
I do not have any cause for to complain
So many poor people doing it tougher than me
Homeless and hungry and in dire poverty
Born as the children of the lesser gods
Every day they have to battle the odds

Compared to many I am lucky indeed
Of any of life's necessities I am not in need.

Francis Duggan

*****



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६७ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास) ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)

११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)
In English:-
1.The Lost House (Collection of short stories)
2.Life is an art
हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ किनल जा सकैत अछि)
इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि :

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.
स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.
ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.
पाथेय(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/205009
The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385
न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.
www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।